Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ओ३म्

पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५४ अंक - १५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र अगस्त (प्रथम) २०१३

डॉ. सुरेन्द्र कुमार (परोपकारिणी सभा के सदस्य)
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नवनिर्वाचित कुलपति

संक्षिप्त परिचय पृष्ठ-३५पर ।

१

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५४ **अंक :** १५
दयानन्दाब्द: १८९
विक्रम संवत्: श्रावण कृष्ण, २०७०
कलि संवत्: ५११४
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११४

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२११७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

अगस्त प्रथम २०१३

अनुक्रम

१. पत्नीदेवो भव	सम्पादकीय	०४
२. स्वतन्त्रता-परतन्त्रता	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०८
४. शिविरार्थियों के अनुभव		१३
५. लिव इन रिलेशनशिप	इन्द्रजित् देव	१६
६. पृथ्वी का कवच-ओजोन आवरण	महेन्द्र आर्य	१८
७. आचमन मात्र क्रिया नहीं, वह	प्रो. कमलेश	२२
८. स्वीकार्यता-जीवन का एक	सुकामा आर्या	२४
९. मानव की वरणीय संस्कृति	उमाकान्त	२६
१०. वेदों की सार्वभौमिकता	डॉ. कपिलदेव	२९
११. मानव दु:ख क्यों पाता है?	रामगोपाल सिंह	३४
१२. धर्म का यथार्थ स्वरूप	शिवकरण दूबे	३६
१३. संस्था-समाचार		३८
१४. आर्यजगत् के समाचार		४०

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पतिदेवो भव

समाज में हमारा प्रौढ़ वर्ग अपनी सन्तानों से बहुत निराश है। उसे लगता है उसने अपने जीवन में भविष्य का जो सुखद् स्वप्न देखा था, वह स्वप्न बनकर ही रह गया। वह जीवन में अपने पुरुषार्थ को देखता है, अपनी अर्थोपार्जन क्षमता को देखता है तो पाता है, उसने परिश्रम करने में धन के व्यय करने में कोई कमी नहीं रखी अपितु सब कुछ अपने सामर्थ्य से अधिक ही किया है। अपने बच्चों को बड़े विद्यालयों में पढ़ाया। उनके नामी पब्लिक स्कूलों में प्रवेश के लिए रातों पंक्ति में लगना पड़ा तो रात को जागकर भी बच्चों को उन स्कूलों में प्रवेश दिलाया। स्कूल में पैसा देना पड़ा तो वह भी दिया। प्रतिदिन कपड़े, पुस्तक, फीस, समारोह के लिए कुछ भी व्यय करना पड़ा उसे सहर्ष किया। बच्चा जो बनना चाहता था-डॉक्टर, इञ्जिनीयर, वकील, प्रबन्धक, प्रशासनिक अधिकारी उसे वह बनने में पूरा सहयोग दिया, जब बालक ने जो प्राप्त करना था प्राप्त कर लिया परन्तु माता-पिता को लगा वे ठगे गये हैं। उन्हें वह प्राप्त नहीं हुआ जिसे प्राप्त करने की इच्छा से उन्होंने यह सारा प्रयत्न किया था। जब वे सोचते हैं यह क्या हुआ तब उन्हें घोर निराशा होती है, और तब वे इसे अपना दुर्भाग्य मानकर चुप बैठ जाते हैं। ऐसा क्यों हुआ? वे इसे नहीं सोच पाते।

विचार करने का अवसर इसी समय आता है। आज अपने बालक से माता-पिता निराश हैं, परिवार अप्रसन्न है, समाज भी असन्तुष्ट है। ऐसा क्यों हो रहा है? इस प्रश्न का समाधान दोनों पक्षों में निहित है। प्रथम पक्ष बालक है, जिसे माता-पिता ने डॉक्टर, वकील, अधिकारी, प्रबन्धक जो बनाना चाहा व बना या नहीं बना। इस पर विचार करने पर हम देखते हैं। आज का युवा एक अच्छा डॉक्टर, अच्छा वकील उच्च योग्यता का प्रशासक, योग्य इन्जीनियर सब कुछ बना है, जिसको बनाने के लिए माता-पिता, समाज, सरकार ने प्रयत्न किया था। उसमें उसके द्वारा कोई न्यूनता रखी गई हो ऐसा नहीं लगता फिर, माता-पिता, समाज उससे क्यों निराश है? जब हम माता-पिता से पूछते हैं, आप का बेटा बहुत योग्य डॉक्टर, वकील बना है तो उन्हें उसके डॉक्टर बनने की प्रसन्नता नहीं होती? कारण पूछने पर पता लगता है, वे डॉक्टर नहीं एक आज्ञाकारी, सेवाभावी, संस्कारी पुत्र चाहते थे। उन्होंने सोचा था कि डॉक्टर बनकर जो धन कमायेगा, उसे माता-पिता के चरणों में समर्पित कर देगा। दोनों समय चरण-स्पर्श करके माता-पिता की आज्ञा लेकर घर से निकलेगा। ऐसी ही सुशील पुत्रवधु होगी, जो उनकी सेवा में सदा हाथ जोड़े आज्ञा की प्रतीक्षा में दिखाई पड़ेगी, परन्तु हुआ इसके विपरीत। बेटा-बहू, बड़ा बंगला, गाड़ी-नौकर के साथ कहीं और हैं, बीमार, बूढ़े, एकाकी माता-पिता कहीं और, इनमें कहीं तालमेल नहीं दिखाई देता। उधर समाज देखता है एक युवक डॉक्टर, इन्जीनियर, अधिकारी बनकर आया है तो समाज के कष्टों को दूर करेगा। पिछड़े, असहाय, गरीब लोगों के मन में आशा की किरण फूटेगी, उनके भी दुःख दूर होंगे, उनकी पीड़ा भी कोई सुनेगा, परन्तु उन्हें लगता है, ये तो कुछ और ही शिक्षा लेकर आया है। इसके सम्बन्ध तो हैं, परन्तु बड़े उद्योगपतियों से, सेठों से, राजनेताओं से, ठेकेदारों से, माफिया लोगों से इनकी भीड़ से वह सदा घिरा रहता है। उसे प्रतिदिन समारोह भोज में जाना होता है। उपहारों की वर्षा होती है, बैंक में धनराशि बढ़ती रहती है। बड़े-बड़े नगरों में भव्य भवन उसकी सम्पत्ति में सम्मिलित हो जाते हैं। जन-सामान्य की दृष्टि में वह अधिकारी बड़ा तो है, परन्तु उनके किसी काम का नहीं, इसलिए समाज को निराशा, दुःख, हताशा होती है।

यहाँ प्रश्न उठता है, भूल कहाँ हो रही है, माता-पिता की ओर से हो रही है, समाज की ओर से हो रही है या बालक की ओर से हो रही है। बालक के पक्ष पर विचार करने पर स्पष्ट होता है कि माता-पिता के द्वारा बालक को जो शिक्षा दी गई, उसने उसे आत्मसात् करने में कोई कमी नहीं रखी, आपने उसे डॉक्टर बनने के लिए कहा, वह अच्छा डॉक्टर बना, वह रोग जानता है, वह दवा जानता है, वह उपचार करता है। आपने उसे प्रबन्धक बनाया, वह बड़ी से बड़ी कम्पनी, व्यवसाय, कारखाना सम्भाल रहा है। अपने अधिकारी, अपने स्वामी को खूब धन कमाकर देता है, मालिक भी उसे बड़ा वेतन देता है। वह कैसे कमाता है, यह सोचना उसके क्षेत्र में नहीं आता। माता-पिता ने उसे धन कमाने के लिए कहा वह खूब धन कमाता है। उसकी पत्नी, बच्चे खूब धन खर्च करते हैं, उसे और अधिक धन कमाने के लिए उत्साहित करते हैं। वह माता-पिता को दे भी सकता है, नहीं भी दे सकता है। यदि माता-पिता फिर भी दुःखी हैं तो इसका अभिप्राय है, वे उसकी अपेक्षा अपने बेटे से कर रहे हैं, जो कभी उन्होंने उसे सिखाया ही नहीं है। आप चाहते हैं, आपका बच्चा, आपके परिवार के सदस्यों का सम्मान करे, उनकी सेवा करे, परन्तु बचपन में आपने उसे कभी पानी पिलाने की शिक्षा तो दी ही नहीं, कभी आने वाले अतिथि से परिचय कराकर नमस्ते करने के लिये तो कहा ही नहीं। कभी उसके हाथ से गरीब को सहायता दिलाई ही नहीं। किसी धार्मिक अवसर पर उसने सम्मिलित होने की इच्छा की तो उसे

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पढ़ाई, ट्यूशन, परीक्षा का स्मरण कराकर उसे जाने से रोका तो है, परन्तु धार्मिक कार्यो में उत्साह से भाग लेने के लिए प्रेरित तो नहीं किया। फिर उससे इस सब कार्य की आशा क्यों की जाती है? इन निराश माता-पिताओं से पूछा जाना चाहिए, जिन बातों की आप अपने बच्चों से अपेक्षा करते हैं, वे बातें कभी आपने अपने बच्चों को बताई है। उनके सामने आपने ऐसा कोई उदाहरण कभी प्रस्तुत किया है।

प्राय: माता-पिता कहते हैं, आजकल बच्चे संस्कारी नहीं हैं। हम तो अपने माता-पिता की सेवा करते थे, उनकी आज्ञा का पालन करते थे। उन्हें प्रतिदिन प्रणाम करते थे आदि-आदि परन्तु वास्तविकता तो यह है कि आप अच्छे हैं तो यह आपके माता-पिता व गुरुजनों के प्रयासों का फल है, जिन्हें आप अपनी श्रेष्ठता बताना चाहते हैं। आपके प्रयासों का फल आपकी सन्तानें हैं, यदि वे अच्छी हैं, तो आपको श्रेय जाता है। यदि उनमें कोई न्यूनता है, तो यह आपके प्रयासों की कमी का द्योतक है। समाज का युवाओं से अपेक्षा करना तो ठीक है, परन्तु समाज की अपेक्षा गलत इसलिए है कि समाज में ईमानदारी व पक्षपातरहित आचरण का उदाहरण तो युवाओं के सामने नहीं है। राजनेता, उद्योगपति, प्रशासनिक अधिकारी, समाज के चौधरी, धार्मिक गुरु लोग और साधु-सन्तों की भीड़ सब मिलकर युवा को ठगना सिखा रहे हैं। धार्मिकता के नाम पर अन्धविश्वास और अवैज्ञानिक निराधार किस्सों को जीवन के लिए मार्गदर्शक सिद्धान्तों की भाँति प्रस्तुत कर रहे हैं। फिर युवा ईमानदार, न्यायप्रिय, पक्षपातरहित आचरण का करने वाला क्यों बनें?, कैसे बनें?

आज हर व्यक्ति का उद्देश्य धन कमाना और विलासिता से रहना है। हमारी शिक्षा, हमारे जीवन उद्देश्य यही सिखाती है। इस उद्देश्य को स्वीकार करने से मनुष्य कायर और क्रूर बनता है। वह धन-कमाने के लिए कैसे भी उपायों को स्वीकार करने में संकोच नहीं करता। कुछ वर्ष पूर्व अमृत करके एक डॉक्टर ने चार सौ से अधिक गरीब लोगों की वृक्क (किडनी) निकालकर प्रति व्यक्ति को तीन से चार लाख रुपये में बेच दी। जिन गरीब लोगों के शरीर से अंग निकाले गये, उन्हें इस बात का पता भी नहीं लगने दिया और पैसों वाले बीमार लोगों को बेचकर धन कमा लिया, इसमें डॉक्टरी के कमाल में कमी नहीं परन्तु जो कमी है, उसकी हमने शिक्षा ही नहीं दी, उससे आप इसकी आशा क्यों करते हैं? यही हमारी अज्ञानता है। डॉक्टर, दवा बनाने वाले, व्यापारी, इन्जीनियर सभी चोर हैं, ठग हैं, हम उनसे न्याय, दया, उदारता, पक्षपातरहित आचरण की आशा कर रहे हैं!

विलासी व्यक्ति को जीवन-यापन के लिए धन बड़ी आवश्यकता है। इसके बिना मनुष्य जीवित रहने की कल्पना नहीं कर सकता। विपरीत परिस्थिति में वह निराशा में डूबकर आत्महत्या कर लेता है या अनुचित उपायों से धनोपार्जन करके अपनी स्थिति बनाये रखने का प्रयास करता है। जीवन-स्तर का पाखण्ड, व्यक्ति के जीवन से भी अधिक भार बढ़ाता है। मनुष्य सहज रहना, सहज होना, सहज बोलना सब भूल जाता है। पाखण्ड उस व्यक्ति के जीवन की सुख-शान्ति समाप्त कर देता है।

हमारी वर्तमान शिक्षा और प्राचीन शिक्षा का अन्तर समझना बहुत सरल है, पुराने लोग शिक्षा में संस्कारों का निर्माण करते थे, वर्तमान समय में शिक्षा से धनोपार्जन करना सिखाया जाता है। धनोपार्जन जीवन-यापन की आवश्यकता है, जीवन का उद्देश्य नहीं है। यही अन्तर समझने की आवश्यकता है। इसे समझना बहुत आसान है। किसी भी शिक्षा से आजीविका भी मिलनी चाहिए और जीवन का उद्देश्य भी पूरा होना चाहिए। भौतिक जीवन में व्यक्ति, परिवार, समाज तो हैं ही, आत्मिक जीवन भी इसी से जुड़ा हुआ है। इसको समझने के लिए शास्त्र के एक प्रसङ्ग को लेते हैं, उससे शिक्षा का उद्देश्य सरलता से समझ में आ सकता है, प्रसङ्ग तो लम्बा है, परन्तु उसके चार वाक्य ही हमारी निराशा और अज्ञान को दूर करने के लिये पर्याप्त हैं। शास्त्र कहता है-वेद पढ़कर हमें क्या करना चाहिए। जैसे एक माता-पिता अपनी कन्या को शिक्षित संस्कारित करके विवाह कर देते हैं, तथा विवाह के पश्चात् घर के वृद्धजन आशीर्वाद के साथ अपने अनुभव से जुड़ा हुआ मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। उसी प्रकार आचार्य अपने छात्र को समावर्तन संस्कार के माध्यम से जीवन को भली प्रकार संचालित करने के सूत्र देता है। यदि ये सूत्र वेद पठित व्यक्ति में हैं, तो वह शिक्षित है, इसी प्रकार डॉक्टर, अधिकारी बने व्यक्ति में भी इन गुणों की उतनी ही आवश्यकता है। उसका व्यवसाय उसे आजीविका देता है, संस्कार नहीं। उसी प्रकार वेद से भी आजीविका और संस्कार दोनों मिलने चाहिए तभी सम्पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है। उसी से परिवार व समाज की अपेक्षाएँ भी पूरी हो सकती हैं।

वेद पढ़ाने के उपरान्त आचार्य अपने शिष्य को बहुत सारे उपदेश देता है, उनके चार वाक्य ध्यान देने योग्य हैं। आचार्य कहता है-मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव इन वाक्यों का सीधा-सीधा अर्थ है, तुम अपनी माता को देवता समझना, तुम अपने पिता को देवता समझना, तुम अपने आचार्य को देवता समझना, तुम अतिथि को देवता समझना। इन वाक्यों में ध्यान देने की बात है, जिन लोगों से हमारे सबसे अधिक सम्बन्ध है। जिनसे हमारा कार्य और व्यवहार रहता है, उनके साथ कैसा आचरण किया जाए। इसमें यह नहीं बताया कि आचरण कैसा किया जाए। यह बताया कि इन्हें किनके तुल्य समझा जाए। प्रत्येक व्यक्ति मनुष्य से इतर किसी शक्ति से सम्बन्ध रखता है और उसे देवता समझता है, उसे देवता कहता है।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जब कोई मनुष्य किसी को देवता समझता है, तब उसके साथ वह कैसा व्यवहार करता है, वैसा ही व्यवहार मनुष्य को अपने माता-पिता, आचार्य, अतिथि के साथ भी करना चाहिए। मनुष्य देवता का स्थान मन्दिर में मानता है, तब मन्दिर में देवता के साथ जैसा व्यवहार करता है, उसे इन देवों के साथ भी वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। कल्पना कीजिए-एक मनुष्य मन्दिर के दरवाजे पर जाता है, प्रथम उसके सामने हाथ जोड़कर प्रणाम करता है। अन्दर प्रवेश करता है, तब पवित्र होकर अन्दर जाता है। मनुष्य स्नान करके मन्दिर जाना चाहता है। स्नान करके मन्दिर जाने में उसे प्रसन्नता होती है। मन्दिर जाते हुए वह मन में सात्विक भाव रखने का यत्न करता है, कहता है-मन्दिर में खड़ा झूठ नहीं बोलूँगा। अपने पवित्र जल से वह देवता को भी पवित्र करता है, उस स्थान की सफाई भी करता है। जब वह सफाई करता है, अपने शरीर, वस्त्रों की चिन्ता नहीं करता, अपने वस्त्रों से देवता के स्थान, शरीर, वस्त्र, वस्तु, स्थान के पात्रों को पवित्र करता हुआ आनन्द अनुभव करता है। पत्र, पुष्प, तिलक आदि लगाकर वह सत्कार करता है, भोजन कराता है, फिर हाथ जोड़कर प्रार्थना करता है, आशीर्वाद मांगता है। सफलता की कामना करता है। उसकी कृपा चाहता है। यहाँ विचारणीय है कि जिस देवता की मनुष्य इतनी सेवा करके, प्रार्थना करता है, वह देवता कभी आशीर्वाद देने के लिए अपना मुख नहीं खोलता, कभी उसका हाथ नहीं उठता। परन्तु ये जीवित देवता केवल नमस्ते करने मात्र से, प्रणाम करने मात्र से अपना मुख खोलकर और हाथ उठाकर आशीर्वाद देते हैं व सहायता करते हैं। हम जितनी सेवा देवता मानकर जड़ पदार्थों की करते हैं, उतनी सेवा उतना आदर यदि इन चेतन देवताओं की करें तो निश्चय जो कभी जड़ देवता से नहीं मिला, उसका इन चेतन देवताओं से मिलना सरल है, सम्भव है।

ऋषियों ने हमारी समस्याओं का समाधान करने के लिए सूत्र दिये हैं। इन सूत्रों का स्मरण रखने से जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान सरलता से हो जाता है। वर्तमान युग के ऋषि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने भी जीवन की समस्या के समाधान के लिए सूत्र दिये हैं, उनमें एक सूत्र है, पञ्चदेव पूजा, जिसमें हमारे पौराणिक भाई पञ्चायतन पूजा भी कहते हैं-जिसमें शिव, विष्णु, अम्बिका, गणेश और सूर्य-मूर्ति बनाकर पूजा करते हैं, इस पर ऋषि दयानन्द कहते हैं-प्रथम-माता मूर्तिमती पूजनीय देवता अर्थात् सन्तानों को तन-मन-धन से सेवा करके माता को प्रसन्न रखना, हिंसा अर्थात् ताड़ना कभी न करना। दूसरा-पिता सत्कर्त्तव्य देव उसकी भी माता के समान सेवा करना। तीसरा-आचार्य जो विद्या का देने वाला है। उसकी तन-मन से सेवा करना। चौथा-अतिथि जो विद्वान्, धार्मिक, निष्कपटी, सबकी उन्नति चाहने वाला, जगत् में भ्रमण करता हुआ, सत्योपदेश से सब को सुखी करता रहे, उसकी सेवा करना। पाँचवाँ-स्त्री के लिए पति और पुरुष के लिए स्वपत्नी पूजनीय है। ये पाँच मूर्तिमान देव जिनके सङ्ग से मनुष्य देह की उत्पत्ति, पालन, सत्यशिक्षा, विद्या और सत्योपदेश की प्राप्ति होती है। ये ही परमेश्वर की प्राप्ति होने की सीढ़ियाँ हैं। इनकी सेवा न करके जो पाषाणादि मूर्ति पूजते हैं, वे अतीव पामर नरक-गामी हैं।

-सत्यार्थप्रकाश ११वाँ समुल्लास

इसलिए मनु महाराज कहते हैं-

पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा।
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः।।

मनु. ३/५५

जीवन में कल्याण चाहने वालों को पिता, भाई, पति, देवर आदि के द्वारा स्त्रियों का आदर किया जाना चाहिए।

-धर्मवीर

प्रभु-मिलन

-सुनील कुमार अरोड़ा

कैसे मुक्ति हो प्रभु, इस जगत के ताप से।
ऐसी बुद्धि दो प्रभु, लग जाये दिल आप से।।

दिल में हो सन्तोष धन और, प्राणियों से प्यार हो।
मन में है यदि लोभ-ईर्ष्या, फिर क्या होगा जाप से।।

भोगते हैं भोग हमको, हम न भोगें, भोगों को।
जानते और मानते भी, क्यूँ न बचते पाप से।।

तीन ऋण तुम पर सदा, चाहे हो तुम कितने धनी।
देव, गुरु और पितृ जन के, बचो सदा तुम शाप से।।

ओ३म् उसका नाम है वो, सबका है माता-पिता।
क्यूँ मिलन होता नहीं फिर, अपने ही माँ-बाप से।।

-जयपुर
मो.-९७९९३९२९७०

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

स्वतन्त्रता-परतन्त्रता

-स्वामी विष्वङ्

व्यक्तियों के अनेकों सम्बन्ध होते हैं, जैसे-माता-पिता के साथ, पति-पत्नी के साथ, सास-बहू के साथ, ससुर-बहू के साथ, भाई-बहिन के साथ.........., गुरु-शिष्य के साथ, पड़ोसी के साथ, व्यापारी-सेवक के साथ, समाज के साथ.................. इस प्रकार अलग-अलग अनेकों सम्बन्ध हैं। इन सम्बन्धों के साथ रहते हुए प्रत्येक व्यक्ति चाहते या न चाहते हुए अनेकों कार्य करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि सारा जीवन पराधीनता से युक्त है। फिर भी यह कहा जाता है कि मनुष्य स्वतन्त्र है अर्थात् करने, न करने या अन्यथा करने में स्वतन्त्र है। क्या हम पराधीन हैं या स्वाधीन हैं? अर्थात् परन्तन्त्र हैं या स्वतन्त्र हैं? यद्यपि नासमझ व्यक्ति को लगता है कि हम तो परतन्त्र हैं, परन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि पराधीन होता है तो स्वाधीन भी तो होता है। सर्वप्रथम यह समझना चाहिए कि स्वाधीनता-स्वतन्त्रता किसे कहते हैं, और पराधीनता-परतन्त्रता किसे कहते हैं?

जैसा कि स्वतन्त्रता के विषय में कहा जाता है कि करने, न करने या अन्यथा करने में मनुष्य स्वतन्त्र है। ठीक इसके विपरीत करने, न करने या अन्यथा करने में मनुष्य परतन्त्र है अर्थात मनुष्य अपनी इच्छा से कुछ भी नहीं कर सकता। परन्तु ऐसा बिल्कुल नहीं है, क्योंकि मनुष्य अपनी इच्छा से बहुत कुछ करता है। जब वह बहुत कुछ अपनी इच्छा से कर रहा होता है तब स्वतन्त्र हो कर ही कर रहा होता है। इससे यह पता लगता है कि मनुष्य स्वतन्त्र है और जब-जब वह अन्यों के आश्रित हो कर करता है तब-तब वह परतन्त्र होता है। परन्तु यह परतन्त्र भी किसी व्यवस्था के लिए होता है। व्यवस्थाएँ अलग-अलग होती हैं। जिस प्रकार हमारे अलग-अलग सम्बन्ध हैं, तो हमारी व्यवस्थाएँ भी अलग-अलग होंगी। व्यवस्था को बनाये रखने के लिए मनुष्य को परतन्त्र बनना पड़ता है। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि मनुष्य परतन्त्र हो गया। केवल उस व्यवस्था को व्यवस्थित बनाये रखने के लिए परतन्त्र हुआ है, उससे मनुष्य स्वभाव से परतन्त्र नहीं हुआ। वह व्यवस्था के लिए परतन्त्र होता हुआ भी स्वतन्त्र ही रहता है। क्योंकि मनुष्य का स्वभाव ही स्वतन्त्र रहना है। यहाँ यह समझना चाहिए कि मनुष्य अपने यथार्थ ज्ञान-विवेक से व्यवस्था को इसलिए स्वीकार करता है कि जिससे, उसे सुख-विशेष मिलता है। उस सुख-विशेष को समझकर-जानकर अपनी इच्छा से, अपनी स्वतन्त्रता से उस व्यवस्था के लिए परतन्त्रता को स्वीकार करता है।

यदि मनुष्य यथार्थ ज्ञान-विवेक नहीं रखता अर्थात् मूर्खता-अज्ञान रूपी अविद्या से ग्रस्त रहता है, तो उसे व्यवस्था से सुख-विशेष मिलेगा, यह बोध ही नहीं रहता, इसलिए वह व्यवस्था चाहे माता-पिता, गुरु-आचार्य, पुलिस, समाज या राष्ट्र की व्यवस्था हो, उसको भंग करता है और दुःख विशेष को प्राप्त करता है। ऐसे-ऐसे स्थानों में मनुष्य अपनी स्वतन्त्रता का दुरुपयोग करता है। यहाँ स्वतन्त्रता का उपयोग तो कर रहे हैं, परन्तु उस स्वतन्त्रता से मनुष्य को दुःख विशेष प्राप्त हो रहा है। ऐसी स्वतन्त्रता से दुःख ही मिलेगा। इसलिए मनुष्य को समझना चाहिए कि स्वतन्त्रता और परतन्त्रता क्या है? अर्थात् स्वतन्त्रता से सुख और परतन्त्रता से दुःख मिलता है? क्या यही स्वतन्त्रता या परतन्त्रता है? यदि ऐसा माना जाये, तो स्वतन्त्रता से सुख और दुःख दोनों मिलते हैं और परतन्त्रता से भी सुख और दुःख दोनों मिलते हैं। इसलिए मनुष्य को अपनी स्वतन्त्रता को समझकर-जानकर उसका सदुपयोग करना चाहिए।

मनुष्य स्वतन्त्रता का सदुपयोग तब कर सकता है जब उसके पास यथार्थ ज्ञान-विवेक होगा। यथार्थ ज्ञान वेद आदि सत्य-शास्त्रों के अध्ययन करने से या उनको पढ़े हुए विद्वानों के माध्यम से या और किसी भी माध्यम से जानकारी प्राप्त करने से मनुष्य को हो जाता है। यथार्थ ज्ञान से मनुष्य अपनी स्वतन्त्रता का सदुपयोग करता है। कहाँ, कब किस, परिस्थिति में स्वतन्त्र रह कर सुख लिया जायेगा और कहाँ, कब, किस परिस्थिति में अन्यों के आधीन-परतन्त्र रह कर भी सुख लिया जायेगा, यही मनुष्य की बुद्धिमत्ता है। यदि मनुष्य के पास बुद्धि-ज्ञान नहीं है अर्थात् मूर्खता-अविद्या है, तो स्वतन्त्र होता हुआ भी अपनी स्वतन्त्रता का दुरुपयोग करता हुआ सर्वत्र दुःख सागर में गोता लगाता रहेगा। इसका यह भी अर्थ नहीं लेना चाहिए कि परतन्त्र रहता हुआ सुख ही लेता रहेगा। हाँ! यदि अविद्या से ग्रस्त रहकर परतन्त्रता को स्वीकार करता है, तो दुःख सागर में गोते लगाता रहेगा। परन्तु यथार्थ-ज्ञान-विद्या से युक्त रहेगा, तो चाहे स्वतन्त्र रहे चाहे परतन्त्र रहे, दोनों की स्थितियों में सदा सुखी ही रहेगा। इसलिए विद्या-युक्त स्वतन्त्रता और परतन्त्रता दोनों ही लाभकारी हैं। परन्तु ध्यान रहे मनुष्य स्वभाव से स्वतन्त्र है, परतन्त्र नहीं।

-ऋषि उद्यान, अजमेर।

मनुष्यों को परमेश्वर के विज्ञान के बिना सत्य, सुख और बिजुली आदि विद्या और क्रिया कुशलता के बिना संसार के सब सुख नहीं हो सकते, इसलिये यह कार्य्य पुरुषार्थ से सिद्ध करना चाहिए।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.५**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

कुछ तड़प-कुछ झड़प

-राजेन्द्र जिज्ञासु

धरती हो गई लहूलुहान-सन् १९४१ में हरियाणा के एक छोटे से नवाबी राज्य लोहारू में शान्त निहत्थे आर्यों पर नवाब का दानव दल टूट पड़ा। नवाब की पुलिस तथा उसके उन्मादी पालतू मनाँध गुण्डों ने बर्छी, भाले, कुल्हाड़े व लाठियाँ लेकर आर्यों पर निर्ममता से ऐसे वार-प्रहार किये कि धरती लहूलुहान हो गई। महात्मा फूलसिंह जी, पूज्य स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी, स्वामी नित्यानन्द जी (तब पं. नौनिध सिंह) आदि अनेक आर्यों की हड्डियाँ तोड़ी गईं। अनेक घायल हो गये।

सन् १९५७ में कांग्रेस शासन की पुलिस ने रोहतक के बहुअकबर ग्राम में ग्रामीण आर्यों को मार-मारकर लहूलुहान करके अपनी वीरता दिखाई। अफ़ज़ल गुरु के शव व अन्तिम क्रिया के लिये अश्रुपात कर रहे कांग्रेसी नेता दिग्विजय ने स्वामी अभेदानन्द जी, श्री घनश्याम सिंह आदि आर्य नेताओं को वीर सुमेर सिंह के अन्तिम संस्कार में भाग लेने से रोककर गांधीवाद का डंका बजाया।

अब लाखों-करोड़ों रुपये के विज्ञापन देकर ऋषि दयानन्द और आर्य धर्म के विरुद्ध विष वमन करने वाले रामपाल के वोट बैंक के लिये कांग्रेस की पुलिस ने फिर आर्यों पर दमनचक्र चलाकर, निहत्थों को गोलियों से भूनकर, एक परोपकारी साधु को बन्दी बनाकर अपनी शूरता का प्रदर्शन किया है। एक बार फिर धरती लहूलुहान हो गई। दो युवकों तथा एक देवी ने वीर गति पाकर आर्यसमाज को गौरवान्वित कर दिया। माता सूरजकौर (राव युधिष्ठिर सिंह की पत्नी) विश्व की प्रथम महिला थी जिसे विश्व में पहली बार किसी संस्था ने अपना प्रधान चुना। संसार के इतिहास पर अंकित हो गया कि आर्यों ने उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि के बलिदान पर रेवाड़ी के आर्यसमाज की प्रधाना "माता सूरज कौर" एक देवी को बनाया। अब हरियाणा में कांग्रेस की कृपा से एक आर्य माता "प्रोमिला" को गोलियों से भूने जाने तथा वीरगति पाने का गौरव प्राप्त हुआ है। हैदराबाद को भारत का अंग बनाने के लिये निज़ाम की पुलिस ने माता "गोदावरी" को ईंटे ग्राम, जिला-बीड़ (महाराष्ट्र) में बलिदान देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अब माता "प्रोमिला" आर्यसमाज की दूसरी हुतात्मा बन गई है।

शीश जिनके धर्म पर चढ़े हैं।
झण्डे दुनिया में उनके गढ़े हैं।।

हरियाणा पुलिस सच्चा सौदा व सिखों के अन्तहीन विवाद में गोलियाँ तो क्या लाठी तक न चला सकी। आज तक हरियाणा पुलिस ने दो-चार घुसपैठिये, तस्कर व आतंकवादी नहीं भूने। आतंकवाद की घटनायें कई बार हरियाणा में घट चुकी हैं। आर्यसमाज ने देश के स्वराज्य संग्राम में जेल जाने वाला एकमेव वैज्ञानिक स्वामी सत्यप्रकाश दिया था। आर्यवीर बिस्मिल १८५७ की क्रान्ति के पश्चात् पहला क्रान्तिकारी था जो उ.प्र. में फांसी पर चढ़ाया गया। पंजाब का वीर सोहनलाल पाठक सेना में विद्रोह फैलाने के दोष में सबसे पहले फांसी पर चढ़ाया गया। हरियाणा में सेना में विद्रोह फैलाने के दोष में वायसराय के आदेश से आर्य संन्यासी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को शाही किला में यातनायें दी गईं। सन् १९१८ की दिल्ली कांग्रेस में आर्य नेता चौ. पीरूसिंह ने देश के नाम एक सन्देश देकर कांग्रेस में गर्मी पैदा की। दक्षिण भारत में जेल में शहीद किया गया एकमेव स्वतन्त्रता सेनानी आर्य नेता भाई श्यामलाल वकील था। निज़ाम राज्य में देश की अखण्डता के लिए काले पानी का दण्ड पाने वाला इकलौता नेता-एकमेव क्रान्तिकारी पं. नरेन्द्र आर्यसमाज का हृदय सम्राट था।

आर्यों को बलिदान देने के लिये हरियाणा में कांग्रेस ने नई ट्राफी दे दी है। धरती हो गई लहूलुहान। मोहनसिंह ने घोषणा की थी कि देश पर पहला अधिकार अल्पसंख्यक मुसलमानों का बनता है। देश का विभाजन करवाने का इतिहास रचने वालों के लिए कांग्रेस का यह फर्मान और आर्यों के लिए गोली वर्षा!

कबीरपंथियों ने मुसलमानों से पिटकर चाँदापुर में ऋषि दयानन्द जी को रक्षा के लिये पुकारा। एक कबीरपंथी धर्मगुरु ने खुलकर यह लिखा है। ऋषि के उपकार का यह बदला हमें मिल रहा है कि हरियाणा में कबीर जी का नाम लेकर सरकार से मिली-भगत करके आर्यों को लहूलुहान कर रहा है। प्राणोत्सर्ग करते हुए भी आर्यों के हृदय का निनाद है-

बलिदानी इतिहास हमारा।
वेदों पर विश्वास हमारा।।

आर्यसमाज को शिक्षा व्यापार-मण्डल बनाने वाले और सरकार की छत्रछाया के इच्छुक तथाकथित लीडरों ने इतने बड़े काण्ड पर मुँह ही नहीं खोला, घुसपैठिये सरकार की ही बोली बोल रहे हैं और बोलेंगे।

पुनर्जन्म सिद्धान्त और इस्लाम-स्वामी दर्शनानन्द निर्वाण शताब्दी पर एक शंका का समाधान स्वामी जी के तर्क से यहाँ करते हैं। इस्लाम की घोषणा तो यही है कि वह पुनर्जन्म का सिद्धान्त नहीं मानता। इसके उलट अब इस्लामी विचारक मौत को 'जुज़्बे हस्ती' (जीवन का एक अभिन्न भाग या अंश)

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

मानने लगे हैं। स्वामी दर्शनानन्द जी ने एक शास्त्रार्थ में पूछा कि प्रलय (कयामत) के दिन मुर्दे कबरों से उठेंगे तो फिर उन्हें जो मोमिन होंगे, बहिश्त में प्रवेश मिलेगा जहाँ वे सुख उपभोग करेंगे। क्या जिस शरीर को कबर में दबाया गया था-वे उसी के साथ उठेंगे या उन्हें स्वर्ग में प्रवेश व सुख भोगने के लिए नया शरीर मिलेगा?

प्रतिपक्षी मौलाना ने कहा, "नहीं! नया शरीर मिलेगा। उसके साथ बहिश्त के सुख भोगेंगे।"

स्वामी दर्शनानन्द जी ने कहा, "मौलाना नये चोले की प्राप्ति को ही तो पुनर्जन्म कहा जाता है। आपने यह सिद्धान्त स्वीकार कर लिया। यह अच्छी बात है।

चारपाई पर रणभूमि में-आर्यसमाज के इतिहास की एक अनूठी व प्रेरक घटना इस अवसर पर दी जाती है। उ.प्र. में कहीं एक ताल्लुकेदार अपने जातीय बन्धुओं सहित विधर्मी बनने लगा, तो क्षेत्र के सनातनी हिन्दू भागे-भागे एक आर्यसमाज में पहुँचे। बचाओ! बचाओ!! अपने किसी शास्त्रार्थ महारथी को बुलाओ। आर्यों को वहाँ पता था कि स्वामी दर्शनानन्द उसी क्षेत्र में किसी समाज में आये हुए हैं। वे भागे उन्हें लेने वहाँ पहुँचे।

स्वामी जी वहाँ मिल गये परन्तु वे तब वहाँ रोग शय्या में पड़े थे। इनको निराशा हुई कि इस अवस्था में स्वामी जी को क्या कहें। श्री स्वामी जी ने ही आने का प्रयोजन पूछा। इनकी कहानी सुनकर महान् दर्शनानन्द बोले, भाई मेरी चारपाई उठाकर वहाँ ले जा सकते हो तो ले चलो। मुझे वहाँ एक बार पहुँचा दो, आगे मैं देख लूँगा।

आर्यों के धर्मभाव के बलिहारी! चारपाई को कन्धों पर उठाकर उस क्षेत्र से दूरस्थ ग्राम में ले गये। रणभूमि में दर्शनानन्द जी के पहुँचते ही धूम मच गई। उनके मैदान में उतरने का परिणाम वही निकला जिसकी आशा लेकर उस क्षेत्र के सनातनी हिन्दू आये थे। एक भी व्यक्ति धर्मच्युत न हुआ। आर्यसमाज के उपकारों को कहाँ तक गिनाया-सुनाया जावे। स्वामी दर्शनानन्द निर्वाण शताब्दी पर दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह, स्वामी जी की विस्तृत जीवनी तथा उनके कई शास्त्रार्थों का संग्रह छपकर उपलब्ध होगा। इस शताब्दी को आर्यजन उत्साह से मनायें। आर्यसमाज में ऊर्जा का संचार होगा। संस्थावाद की महामारी से छुटकारा पाओ। सर्वसामर्थ्य से वैदिक धर्म प्रचार करके नया इतिहास बनाओ।

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय और शाकाहार-इसे दुर्भाग्य ही कहा जावेगा कि बिना सोचे-विचारे किसी ने बड़ी चतुराई से पूज्यपाद उपाध्याय जी का चरित्र हनन् करके आर्यजन के हृदयों को दुखाया है। यह लोगों को भ्रमित करने का भी दुष्कर्म है। आर्यजन पूछते हैं कि आप चुप क्यों हैं? इस विषय में आप ही विशेष जानकारी रखते हैं। चाहिये तो यह था कि अन्य-अन्य विद्वान् बोलें। सारी सभायें और सारे गुरुकुल, सब संस्थायें मौन हैं। आगे-पीछे देखे बिना-प्रसंग पर विचार किये बिना, उपाध्याय जी के चिन्तन, दृष्टिकोण, सेवाओं के लम्बे इतिहास तथा उनके जीवन व्यवहार, आचरण तथा स्वर्णिम उपलब्धियों को जाने बिना उन पर लेखनी इस ढंग से चला दी गई है मानो कि वे मांस-प्रचारक थे।

मित्रों! आर्यसमाज के इतिहास में मायावाद तथा मांसाहार के खण्डन तथा त्रैतवाद व शाकाहार के मण्डन में जितना पूज्य उपाध्याय जी ने लिखा है उतना किसी अन्य विद्वान् विचारक ने नहीं लिखा। गो करुणानिधि से लेकर स्वामी सत्यप्रकाश के Humanitarian Diet तक और उससे भी आगे डॉ. हरिशचन्द्र जी के साहित्य तक, इन पंक्तियों के लेखक ने शाकाहार के मण्डन व मांसाहार के खण्डन में प्राय: सब आर्य लेखकों यथा मास्टर आत्माराम जी, मुनिवर दुर्गाप्रसाद, श्री केवलराम, चाचा गण्डाराम, स्वामी दर्शनानन्द, पं. यशपाल आदि सबको पढ़ा है। मत समझो कि उपाध्याय जी ने केवल 'हम क्या खायें' पुस्तक ही लिखी है। आपने हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू में सहस्रों पृष्ठों का साहित्य मांसाहार के खण्डन में दिया है। सैकड़ों लेख लिखे। उनकी युक्तियाँ मौलिक व अकाट्य हैं। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने भी हिन्दी, अंग्रेजी में ऐसा बेजोड़ साहित्य दिया है।

उपाध्याय जी के एतद्विषयक साहित्य की पृष्ठ संख्या सहस्रों बनती है। बारी ताला, इस्लाम के दीपक, आस्तिकवाद, Vedic Culture, Philosophy of Dayanand, Worship, Arya Samaj. Reason and Religion, ट्रैक्टमाला आदि में शाकाहार के मण्डन में जितना उपाध्याय जी ने लिखा है, आक्षेपक उसकी कल्पना तक नहीं कर सकता। विश्व शान्ति पर लिखा या वेद प्रवचन लिखा या Marriage And Married ग्रन्थ लिखा, पूज्य उपाध्याय जी ने नये-नये तर्क देकर नई-नई विद्या से मांसाहार का खण्डन और शाकाहार का मण्डन किया। आक्षेपक क्या जानें कि प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री और घोर मांस प्रचारक डॉ. दीवानचन्द ने मृत्यु से पूर्व आर्यसमाज के बारे में अंग्रेजी में एक पुस्तक लिखी थी (जो छप न सकी)। उसका प्राक्कथन उपाध्याय जी से लिखवाना चाहा। उसमें मांसाहार का समर्थन था। उपाध्याय जी ने ऐसे सब अंश हटवा दिये।

आर्यसमाज की शिक्षा-संस्था में शाकाहार के पक्ष में और मांसाहार के विरोध में आवाज़ उठाने पर उपाध्याय जी के एक शिष्य को सर्विस से हटाया गया। यह घटना अपने जैसी एक ही है। इसके प्रत्यक्षदर्शी अब भी हैं। ऐसे अनुपम इतिहास के बनाने वाले पूज्य उपाध्याय जी पर अनर्गल टिप्पणी करने से पहले आक्षेपक यह तो बतायें कि आज तक उन्होंने कौन सा तीर मारा है?

उपाध्याय जी के सुपुत्र विश्वप्रकाश ने दमन चक्र से

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

निर्भय होकर हुतात्मा ठाकुर रोशनसिंह जी का दाहकर्म संस्कार करवाया। सत्यप्रकाश जी से सरकार, सरकार विरोधी (स्वराज्य के लिए) कुछ न करने का आश्वासन लेना चाहती थीं। इसके लिए उपाध्याय जी पर दबाव डाला गया। स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा नारायण स्वामी के लाडले उपाध्याय ने उस घड़ी के दृढ़ता दिखाई, यह उन्हीं का काम था। मैं इस विषय में और क्या लिखूँ? लेखक जी ने क्या लिखा-ऋषि जीवन के कार्य में लगा होने से उसे पढ़ा ही नहीं। नहीं पढ़ना चाहता हूँ। दुःख पहुँचा। बहुतों ने कहा सो ये पंक्तियाँ लिख दीं। अच्छा होता यदि ज्वलन्त जी इस पर लेखनी उठाते। भ्रम भञ्जन करने को हम तो तैयार ही हैं।

ऋषि दयानन्द पर घिनौना वार-परोपकारी के किसी गत अंक में हैदराबाद के वेश गजट में महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर किये गये घिनौने प्रकार की चर्चा करते हुए हमने दो-तीन बातों को निराधार-शुद्ध गप्पें बतलाकर झुठलाया था। हमने सोचा था कि कोई अन्य विद्वान्, वक्ता, स्कालर किसी अन्य पत्र में अन्य बातों का प्रतिवाद करेंगे। ऋषि जीवन के कार्य से निपटने में अभी कुछ मास लगेंगे तो भी बहुत सा भार हलका हो गया है। आज एक अन्य विषैले कथन की शव परीक्षा कर लें। उसी लेख में छपा है कि जोधपुर के कुछ भक्तों ने डॉ. अलीमर्दान के इलाज की चर्चा चलाकर जब उसको हटाने व बदलने की बात चलाई तो ऋषि रो पड़े और कहा, तुम लोग तो मुझे समझे ही नहीं................इस प्रकार के वाक्य वहाँ लिखे हैं। लोग पूछते हैं, क्या किसी ने कहीं ऐसा लिखा व कहा है?

हमारा निवेदन है कि यह देवबन्दियों को रिझाने के लिये वेश पंथियों द्वारा गढ़ी गई गप्प है। प्रश्न यह है कि उस समय जोधपुर में ऋषि भक्त था ही कौन? किन्होंने ऋषि से ऐसा कहा? सबसे पहला भक्त जो जोधपुर में ऋषि से मिला वह था जेठमल सोढा, अजमेर निवासी। जोधपुर के राज दरबार ने तो कोई समाचार ही बाहर न निकलने दिया। यह हदीस वेशों ने किससे सुनली? **ऋषि गृह-त्याग कर जबसे निकले उस दिन से लेकर देह-त्याग तक एक बार भी रोये तो क्या, शोक व मोह से कभी दुखी तक नहीं हुए।** भक्त प्रवर मुन्नासिंह जी के निधन पर संवेदना अवश्य प्रकट की, रोये उनकी मृत्यु पर भी नहीं। कर्ण सिंह ने वार किया या काशी में अपमान किया गया, हुल्लड़ मचा, कानपुर व अमृतसर में ईंटें बसाई गईं-ऋषि न भागे और न रोए। ऋषि हर विपदा में अकम्प रहे, इसकी साक्षी नास्तिक नेता मोतीलाल नेहरू आदि अनेक लोग देते हैं। कोबरा फैंका गया, ऋषि तब न चीखे, यह बलैवटस्की लिखते हैं। न जाने ऋषि के चरित्र हनन की वेशों को यह क्या सूझी। ऐसी-ऐसी घटिया बातें न तो नास्तिक शिवनारायण को सूझीं, न ही जियालाल जैनी के 'दयानन्द छल-कपट दर्पण' में कोई ऐसी गप्प है और न 'उन्नीसवीं सदी का महर्षि' पुस्तक के अंग्रेजों के पिट्ठू मिर्जाई लेखक को ये गप्पें गढ़ने का दुस्साहस हुआ।

स्वामी अनुभवानन्द जी के बारे में-गत अंक में स्वराज्य संग्राम में फांसी दण्ड पाने वाले (फांसी दी न गई) देश के एकमेव साधु स्वामी अनुभवानन्द जी पर कुछ लिखा था। उनका जन्म कहाँ हुआ, इसकी खोज में लगा रहा। श्री ओमप्रकाश जी वर्मा ने भी कुछ सहयोग किया। हमें सुनिश्चित जानकारी न मिली। सरकार इस खोज में क्यों लगे? आश्चर्य की बात तो यह रही कि मेरी ही एक पुस्तक में कभी इस सम्बन्ध में ठोस जानकारी दी गई थी। आर्यसमाज के एक शिरोमणि नेता और मूर्धन्य आर्य इतिहासकार पं. विष्णुदत्त जी के एक लेख में स्पष्ट लिखा है कि स्वामी जी का जन्म अमृतसर जिला का था। जलियाँवाला हत्याकाण्ड विषयक साहित्य में ग्राम, कस्बे के नाम का भी पता चल सकता है। हमारा यत्न जारी रहेगा।

ऋषि जीवन पर नये प्रश्न-तीन वर्ष तक ऋषि जीवन पर दिनरात कार्य करते हुए हमें दम मारने का अवकाश नहीं मिला। आनन्ददायक यह उपलब्धि है कि श्रद्धेय लक्ष्मण जी के कन्धों पर चढ़कर हमने बहुत कुछ पाया। बहुत चिन्तन किया। नये-नये रहस्य खुले। कई प्रश्नों का उत्तर ग्रन्थ की पाद टिप्पणियों में दिया गया है। प्रश्न आया कि धर्मप्रचार के क्षेत्र में महर्षि की बेजोड़ अद्वितीय उपलब्धि क्या है? बड़ों ने संकेत तो दिये, लेकिन आगे वाले लेखक अपना महिमा-गान सुनाते रहे और ऋषि को गौण बना दिया! हमारा उत्तर है कि मैदान में उतरने पर धर्म-प्रचार में पहली महान् अद्वितीय उपलब्धि चाँदापुर शास्त्रार्थ था। पहली बार एक आर्य मुनि विचारक ने परकीय मतों को पछाड़ा। वह एक सप्ताह तो क्या दूसरे दिन ही भाग खड़े हुए। ये दर्शकों ने निराला दृश्य देखा। इस घटना का कितना प्रचार हमारे लेखकों ने किया? अन्तिम वेला में भारत भर व विश्व में धूम मचाने की डींग मारने वाला पादरी कुक, मुम्बई में सामना करने का साहस न बटोर सका। वह भाग खड़ा हुआ, यह नये लेखकों ने कहीं नहीं लिखा। कोई मिशनरी भावना वाला लक्ष्मण ही लिखे तो लिखे।

श्री देवनारायण जी का पत्र-आर्य विद्वान् देवनारायण जी के पत्र व उनसे बातचीत करके हमने ठाकुर भूपालसिंह जी के वंशज डॉ. सुखवीर सिंह जी की बातें कीं। इसका भरपूर लाभ वहाँ समाज को मिलेगा। वहाँ एक आन्दोलन छिड़ गया है। परोपकारी उस अभियान को बल दे रहा है। ठाकुर भूपाल सिंह जी के पिता जी का नाम ठाकुर कञ्चनसिंह था। उनके वंशजों को इस नाम का ठीक-ठीक ज्ञान था। हमने यह प्रामाणिक जानकारी वहाँ पहुँचा दी है। परोपकारी ने सबका ध्यान उन धर्मवीरों की ओर खींचा है। यह आनन्द की बात है।

-वेद सदन, अबोहर।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक स्तर)

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति उपलब्ध नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे। साथ ही पढ़ाये गये विषयों की लिखित परीक्षा व आपके द्वारा पालन किये गये शिविर के अनुशासन का भी आकलन किया जायेगा, इसी आधार पर प्रमाण–पत्र भी दिये जायेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ना होगा।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
८. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
९. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मंत्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क ५०० से १५०० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल–आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जाता है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

।।ओ३म्।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में आयोजित १६ से २३ जून २०१३ को योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) लगाया गया। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है। अगला शिविर दिनांक २० से २७ अक्टूबर।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

योग-साधना शिविर (प्राथमिक-स्तर)

शिविरार्थियों के अनुभव

गताङ्क का शेष............

१. सर्वप्रथम मैं शिविर की दिनचर्या के बारे में कहना चाहती हूँ-अति उत्तम रही, ब्रह्ममुहूर्त में उठकर मन्त्रोच्चारण करना, इसके बाद स्वामी विष्वङ् जी द्वारा जो ध्यान और संध्या के मन्त्रों का उच्चारण अभ्यास करवाया, वास्तव में कुछ मन की स्थिरता के भाव बनाने का अभ्यास हुआ। मैं इस शिविर में पहली बार ही आई, मुझे ऐसा लगा बहुत पहले ही आ जाना चाहिए था, ताकि ध्यान और योग की पद्धति ठीक प्रकार से कम आयु में ही सीख लेती। दर्शनों की पुस्तक कभी घर पर उठाकर देखने, पढ़ने में मन नहीं लगता लेकिन यहाँ थोड़े अभ्यास से ही दर्शन पढ़ने की रुचि बन गई, मैं अपने बचे हुए जीवन में इन्हें अवश्य पढ़ूँगी। जिज्ञासा-समाधान से कई शंकाओं का समाधान हुआ। ईश्वर, जीव, प्रकृति की विशेष जानकारी बढ़ी। यज्ञ के पश्चात् डॉ. धर्मवीर जी के प्रवचन हृदयग्राही थे। शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा होगा जो इनको सुनना न चाहता हो, आपके प्रवचन बहुत सहज, सरल और जीवन में सटीक उतरते हैं। स्वामी वेदपति जी ने मौन के स्वरूप, महत्व व आत्मा के लक्षणों का ज्ञान कराया। स्वामी विष्वङ् जी ने भी मौन पर विशेष जोर दिया, जिससे हम अन्तर्मुखी बनने का प्रयास करने लगे, अधिकांश मौन ही रही, लेकिन अचानक किसी कार्यवश बोलने में आ ही जाता था। ईश्वर भक्ति के भजन ब्र. रामदयाल जी ने मधुर वाणी से सुनाए, जो अच्छे लगे। भोजन-व्यवस्था अति उत्तम थी, शायद अन्य जगह ऐसी नहीं होती है। ब्रह्मचारीगण ने हमारे लिए बहुत मेहनत की। सायं भोजन पश्चात् भ्रमण, श्लोकों के साथ एक साथ लयबद्ध तरीके से करना, बहुत अच्छा लगा। मैं आप सभी का बहुत धन्यवाद करती हूँ। आगे शिविर में आने का पूरा प्रयास रहेगा।

-कुमुदिनी आर्या, अजमेर।

२. यह अनुभव नया भी है और अद्भुत् भी, यह पहला मौका है शिविर में आने का, मन में बहुत लम्बे समय से ऐसी इच्छा थी, लेकिन कभी इस प्रकार या ऐसी संस्था के बारे में जानकारी नहीं थी। मन में जो धर्म का स्वरूप हमारे आसपास था, उसे और उसके मानने वालों को देखकर हमेशा मन में प्रश्न उठता था, क्या यही धर्म है? लम्बा टीका लगाना, जोरों से आरती गाना, उसके बाद दिनभर के कार्य धर्म विरुद्ध, झूठ बोलना, राग, द्वेष, क्रोध से भरे मन में कुछ और बाहर कुछ इससे मन बहुत विचलित रहता था। वेद की बातें जानकर निदान हुआ।

जब से ग्राम में ही रहने वाले नरेन्द्र भैया से पतिदेव का सम्पर्क हुआ, उन भैया से हुई बातचीत को जब वे घर पर बताते थे तो मेरी रुचि वैदिक धर्म में बढ़ती गई। यह उसका ही नतीजा है कि शिविर में आने का मौका मिला, वे नहीं आए लेकिन मेरी रुचि देख मुझे अन्य व्यक्तियों के साथ आने की सहमति मिल गई। अगले वर्ष मौका मिला तो फिर आएँगे, यहाँ आकर अच्छा लगा। **-भारती उमेश सिंह राजपूत,**

ग्राम-डोलरिया, जिला-होशंगाबाद।

३. ऋषि उद्यान में ३० अक्टूबर से ६ नवम्बर २०१२ में सम्पन्न हुए परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित ध्यान एवं सन्ध्योपासना शिविर के अनुभव को ज्यों का त्यों प्रकाशित किया तथा अधिकांश समीक्षात्मक सुझावों को स्वीकार कर व्यवहारिक रूप देकर सभा व सम्बन्धितों ने सच्चे "योगी" स्वरूप का दिग्दर्शन कराया। यह आज के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण आध्यात्मिक क्रान्तिकारी घटना कही जाये तो अतिश्योक्ति नहीं! अन्यथा आज सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक क्षेत्र में कार्यरत लोगों का अहँकार इतना प्रबल हो गया है कि हमसे जरा भी भिन्न भाषा बोलने वालों को फूटी आँख देखना नहीं चाहते।

मौन पर जोर-इस बार पिछले शिविर ३० अक्टूबर से ६ नवम्बर २०१२ तक की अपेक्षा सरस्वती भवन में (जहाँ अधिकांश समय साधना कक्षायें चलती हैं।) तथा प्रातःकालीन शारीरिक व्यायाम कक्षा में साधकों से पूर्व मौन रखवाया गया। आर्यसमाजी खासतौर से महिलायें सत्संगों में व्याख्यान, भजन सुनने व जयघोषों की अनुरक्त आदि होने से यज्ञ-प्रार्थना, सायंकालीन भ्रमण व भोजन पूर्व गीतिका गाने का लोभ एक तिहाई साधक नहीं छोड़ पाये। शिविराधिपति ओजस्वी वक्ता स्वामी विष्वङ् जी एवं आत्मनिरीक्षण कक्षा व सायंकालीन भ्रमण के संचालक स्वामी वेदपति जी मासूमियत से मौन, पूर्ण बनाने हेतु लगातार प्रयासरत रहे। निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि यह सब भी कोई कम नहीं था।

अक्षय कलेवा-बना वरदान-शिविरार्थियों को नियत दिवस १६ जून सायं ४ बजे तक उपस्थिति पूर्व अनुमति प्राप्त साधकों को ही दर्ज करानी थी, मगर क्षमता से अधिक संख्या ने एक बार तो स्थिति गड़बड़ाने जैसे हालात बना दिये। सभा अधिकारियों के महाभारत कालीन "कुन्ती के अक्षय कलेवा" जैसे भावों ने समय पर दिव्य प्रकाश व शक्ति दी। शिविर के मापदण्डों के विपरीत संख्या बहुत ज्यादा हो गई। चूंकि घोर

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

भौतिकवादी युग में इस तरह की भीड़ उत्साह बढ़ाने वाली भी लगती है। फिर आये हुए को निराश वापस नहीं भेजने का व ''अक्षय कलेवा'' का भाव मुखर वरदान रहा। अव्यवस्था का नामो-निशान नहीं दिखा।

उन्नत सैद्धान्तिक चर्चा पक्ष-इतने अल्प समय में आध्यात्मिक ग्रन्थों की इतनी व्यापक सरल विशद सुग्राह्य चर्चा वैदिक मान्यताओं वेद, योग, सांख्य, उपनिषद, ईश्वर जीव प्रकृति, आध्यात्मिक शंका-समाधान, संचालक संन्यासी विद्वानों की योग्यता व शिविरार्थियों की मुमुक्षत्व का सुपरिणाम है। प्रात: यज्ञ समय डॉ. धर्मवीर जी द्वारा गहन आध्यात्मिक विषयों पर सुपाच्य सरल शब्दों में अभिव्यक्ति आपके वैदिक वाङ्मय पर गहराई दर्शाती रही। स्वामी विष्वङ् जी द्वारा ईश्वर जीव प्रकृति का ओजस्वी प्रस्तुतीकरण एवं आध्यात्मिक शंका-समाधान में हाजिर जबाबी तथा प्रात:-सायं मुख्य एक घण्टे के उपासना सत्र में अध्यात्म की गहराई परिलक्षित होती रही। स्वामी जी ने आत्मा-परमात्मा-इन्द्रिय व मन को एक स्थान पर एकत्रित कराके आत्म-परमात्म तत्व का भान कराया। आचार्य सोमदेव जी का पिछले अक्टूबर, नवम्बर २०१२ के शिविर की तुलना में अत्यधिक प्रभावशाली योगदर्शन जैसे जटिल सूत्रों को उदाहरणों द्वारा सरलता से हृदयंगम कराना विशेष उपलब्धि है। सोमदेव जी में सौम्यता, शालीनता की गंध, मिठास ऐसे प्रकट हो रही थी जैसे पका खरबूजा फूट रहा हो। आचार्य सत्येन्द्र जी द्वारा सांख्य-दर्शन की कक्षा, प्रात:-योग-व्यायाम शिक्षकों द्वारा आधा घण्टे का प्रयास अच्छा रहा। रात्रिकालीन अन्तिम आत्म-निरीक्षण कक्षा स्वामी वेदपति जी की मासूमियत, उनकी मार्मिकता, युवा संन्यासी का सर्वकल्याण-भाव विभोरपूर्ण आत्मविश्वास झलकाता रहा। स्वामी वेदपति जी ''**प्रभो! मेरे जीवन का उद्धार कर दो........**जब गाते थे तो दिनभर की थकावट को भूल, परम प्रभु में गहन जुड़ाव से मन का सहज होना आध्यात्मिक चमत्कार ही है।

समीक्षा व सुझाव-राजसिकता से बचें-ध्यान की दृष्टि से शिविर में स्टेज पर फोकस लाइटें व भारी भरकम ध्वनि यन्त्रों की भरमार उनके संचालन में १-२ ब्रह्मचारियों की सतत गतिविधि (यद्यपि उनके व्यवहार में पूर्ण शालीनता है) पर नियंत्रण हो। सभा, सम्मेलनों में ये ताम-झाम प्रभावकारी हैं किन्तु यहाँ ये वाधक हैं, ऐसा मेरा निजी अनुभव है। पाकशाला में साधकों के धैर्य की परीक्षा होती रहनी चाहिये। इसके विपरीत कच्चा नमक परोसना, खाने में खीर, हलुवा, भारी-भरकम आम, दो-दो केले राजसिकता की ओर प्रयाण है। साधकों को आयुर्वेद के नियमानुसार भोजन, गौदुग्ध की व्यवस्था सराहनीय है।

पिछले शिविर के साथ समीक्षा-यद्यपि ऐसे तुलना उचित नहीं है फिर भी हृदय के जज्बात रुक नहीं पा रहे, इसलिए इसका लोभ संवरण नहीं हो रहा। पिछले शिविर में आचार्य सत्यजित् जी द्वारा उपासना की कक्षा में ओंकार की प्रणव ध्वनि के मानसिक जप और ईश्वर के सर्वशक्तिशाली, सर्वव्यापक, न्यायकारी, दयालु, निर्विकार, सत्‌चित्‌आनन्द स्वरूप, अनुपम्, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी अर्थ की भावना करते रहने से उपासना सहज ही सिद्ध होती चली गई। धीरे-धीरे गायत्री मन्त्र-पदार्थ व सन्ध्या मन्त्रों का मर्म हृदयंगम होते हुए ध्यान की उच्चावस्था तक पहुंचने का अहसास दिलाता गया। गायत्री से सद्‌बुद्धि प्रार्थना, आचमन से प्रभुकृपा-वृष्टि, अंगों को बलवान् पवित्र बनाते-बनाते अघमर्षण (पूर्वकृत् पाप-कर्मों के संस्कारों को नष्ट करने) हेतु प्राण शक्ति संचय होती गई। मनसा परिक्रमा मन्त्रों में ईश्वर की चतुर्दिशा और ऊपर-नीचे स्थित विविध रूपों वाली शक्ति की आराधना, नमन करते हुए द्वेष के भावों को समूल नष्ट करते-करते औरों की द्वेषता को प्रभु की न्यायिक दाढ़ में समर्पित कर मन का निर्मल बनाये रखने का वातावरण बना। देवत्व प्राप्ति, शतायु-स्वस्थ-स्वाधीन जीवन हेतु उपासना व पुरुषार्थ चतुष्टय के साथ नमस्कार मन्त्र द्वारा ब्रह्मयज्ञ सन्ध्या हृदयग्राही होती गई। ध्यान-सन्ध्या का समन्वय व्यावहारिक आत्मिक उन्नति का साधन है। ईमानदारी से आत्म-निरीक्षण कर जीवन के परिष्कृत् होने की स्थितियाँ बनना चमत्कारिक कार्य है, हम सुधरेंगे-जग सुधरेगा, हम बदलेंगे-जग बदलेगा का नारा सार्थक सिद्ध होगा, ऐसा अनुभूति होती रही है।

मेरा ऐसा मत है कि आर्य विद्वानों को भी सामाजिक दृष्टि से आत्मानुशासन का भाव रखते हुए ध्यान-उपासना विधि व सैद्धान्तिक प्रगटीकरण में साम्यता रखनी अच्छी बात होगी। मानवता के रक्षक आर्यसमाजी विद्वानों के अहँवश अन्त:कलह पहले से ही दु:खदायी बने हैं, इन आध्यात्मिक कार्यों में कम से कम एकरूपता बनी रहे। मौन की समग्रता यज्ञशाला, पाकशाला व भ्रमण में भी कायम रहे।

कृतज्ञता ज्ञापन-परोपकारिणी के सभी कर्मचारी, पाकशालाकर्मी, कार्यालयकर्मी सभी का व्यवहार आदर्श है। ब्रह्मचारियों को देखकर तो आर्यसमाज जिन्दाबाद, वैदिकधर्म की जय हो-सार्थक लगती है। ब्र. रविशंकर का संचालन व ब्र. रामदयाल का गायन हृदयग्राही रहा।

सभी ब्रह्मचारियों की निष्ठा, गुरु शिष्य परम्परा निर्वहन हेतु कर्त्तव्य पारायणता एवं अनुशासन से अभिभूत हुए बिना नहीं रहे। २३ जून को ८.३० से १.३० बजे तक समापन सत्र की एक बैठक में अनुभव प्रगटीकरण में यह साफ अभिव्यक्त हुआ। आचार्यगण व स्वामी द्वय व परोपकारिणी के कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन न करना कृतघ्नता होगी, इस पाप को मैं क्यों झेलूं? मैं तो पिछले शिविर के बाद से ही ऋषि उद्यान को ऋषि की उत्तराधिकारिणी होने का सच्चा अधिकारी

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

मानने लगा हूँ। आर्यसमाजों में कितनी संस्थाओं के पास जमीन-जायदाद हैं, उन्हें प्रेरित करता हूँ कि ऋषि उद्यान की तरह अपने यहाँ भी इतनी गतिविधि क्यूं नहीं चलाते? **जब एक डॉ. धर्मवीर इतने कार्यों को सफलतापूर्वक चला सकता है, तो आप लोग क्यों नहीं?**

विश्वशान्ति एवं समग्र क्रान्ति हेतु विश्वस्तरीय ध्यान केन्द्र बने-ऋषि उद्यान में प्रारम्भ यह उद्यम मुझे सर्वाधिक महत्वपूर्ण लगा है। मैंने विपश्यना, सक्रिय ध्यान ओशो व आनन्दमार्ग वालों के साथ योग साइटोलोजी का अध्ययन व अनुभव किया है, जिससे मेरी ऋषि उद्यान के इस प्रकल्प में रुचि बढ़ी है। एक दिन ये विश्वशान्ति व समग्रक्रान्ति का केन्द्र बनेगा। जहाँ वेद का आधार, ऋषिवर की प्रेरणा वाला आस्तिक व आध्यात्मिक दर्शन हो वहाँ आम आदमी को मोक्ष का मार्ग सुगम होगा ही। प्रयास व कार्यशैली हेतु चिन्तन व आवश्यक परिवर्तन की राह खुली रखें, प्रभु सहाय होंगे।

-यशपाल यश, प्रदेशाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, ३५/६०, रजतपथ, मानसरोवर, जयपुर

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

लिव इन रिलेशनशिप

–इन्द्रजित् 'देव'

मार्च २०१० में भारतीय उच्चतम न्यायालय ने एक महत्त्वपूर्ण निर्णय दिया है–"........बिना विवाह किए भी भारत में कोई भी युवक व युवती अथवा पुरुष व स्त्री इकट्ठे रह सकते हैं। ....यदि कृष्ण व राधा बिना परस्पर विवाह किए एकत्र रह सकते थे तो आज के युवक–युवती/पुरुष–स्त्री ऐसा क्यों नहीं कर सकते?.....।"

यह निर्णय महत्त्वपूर्ण ही नहीं, भयङ्कर व अत्यन्त हानिकारक भी है। इसका परिणाम यह निकलेगा कि आप की गली में कोई पुरुष व स्त्री बिना विवाह किए आकर रहने लगेंगे, तो आप व आपकी गली में रहने वाले अन्य लोगों को उनका वहाँ रहना अत्यन्त बुरा, समाज व परिवार को दूषित करने वाला प्रतीत होगा, परन्तु आप उनका कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे। यदि आप कुछ पड़ौसियों को साथ लेकर उनके पास जाकर गली छोड़कर चले जाने को कहेंगे, तो वे उपरोक्त निर्णय दिखाएँगे व आप असफल होकर घर वापस लौट आएँगे। यदि आपके द्वारा पुलिस में उनकी शिकायत की जाएगी व पुलिस स्वयं आकर समाज, धर्म व कानून के विरुद्ध ऐसा कार्य करने के अपराध में उनसे पूछताछ करेगी, तो उसे भी वे उच्चतम न्यायालय का पूर्वोक्त निर्णय दिखाएँगे तथा पुलिस भी उनके विरुद्ध केस बनाए बिना, वापस लौटने के सिवाए अन्य कुछ नहीं कर पाएगी।

मैंने यह घटना पूर्वोक्त रूप में कुछ स्थानों पर कुछ लोगों को सुनाई है, तो लगभग सभी श्रोताओं ने यही कहा है कि न्यायालय को भ्रष्ट करने व परिवारों की एकता को भंग करने के द्वार खोल दिए हैं, परन्तु मेरे विचार में न्यायालय का इस निर्णय में कोई दोष नहीं है, क्योंकि न्यायपालिका का काम निर्णय देना है तथा वह निर्णय देती है–विधायिका द्वारा बनाए हुए अधिनियमों के आधार पर। विधायिका द्वारा बनाए गए अधिनियमों में लिखे एक–एक शब्द के गहन, पूर्ण व सत्य अर्थों पर विचार करके ही न्यायाधीश निर्णय दे सकते हैं। उनके निजी विचार कुछ भी क्यों न हों, वे अधिनियम के बन्धन में अक्षरश: बन्धे होते हैं। इस सम्बन्ध में मैं प्रमाण प्रस्तुत करता हूँ।

इंग्लैण्ड में एक समय में ऐसा कानून बनाया गया था कि लन्दन की सड़कों पर कोई घोड़ा–गाड़ी नहीं लाई जाएगी और यदि कोई ऐसा करेगा तो उसे दण्डित किया जाएगा। कुछ दिनों तक इस अधिनियम का पालन होता रहा परन्तु एक दिन लोगों ने देखा कि एक गाड़ी लन्दन में चल रही थी। चालक को वहाँ की पुलिस ने न्यायालय में प्रस्तुत किया, परन्तु न्यायाधीश उसे कोई दण्ड न दे पाए, क्योंकि चालक ने यह सिद्ध कर दिया कि वह जो गाड़ी लेकर लन्दन में घूम रहा था, वह घोड़ा–गाड़ी थी ही नहीं, अपितु घोड़ी–गाड़ी थी। इसी प्रकार एक दूसरी घटना भी लिखता हूँ–अंग्रेजों के शासन काल की भारत की यह घटना है। तब एक न्यायालय में चल रहे मुकद्दमे में फांसी पर लटका देने का दण्ड एक अपराधी को न्यायाधीश ने देते हुए लिखा– "He should be hanged." उस अपराधी को उसके वकील ने कहा कि तुम चिन्ता मत करो। मैं तुम्हें मरने नहीं दूँगा। कुछ लोगों का विचार है कि वह वकील जवाहर लाल नेहरू के पिता मोतीलाल नेहरू थे। वस्तुत: वही वकील थे, या कोई अन्य, मुझे पूर्ण ज्ञान नहीं है। अस्तु। जब अपराधी को फांसी का फंदा डालकर लटकाया गया तो, अपराधी को तुरन्त छुड़वा लिया कि न्यायाधीश ने अपने आदेश में यह नहीं लिखा कि इसको तब तक लटकाए ही रखना है, जब तक इसके प्राण न निकल जाएँ।" पास खड़े उच्चाधिकारी व कर्मचारियों को उस वकील ने फांसी पर लटकाने से पूर्व ही उक्त आदेश का अर्थ समझा व मनवा लिया था कि इसमें तो इतना ही लिखा है कि इस अपराधी को लटकाया जाए। इसमें यह कहाँ लिखा है कि इसे मरने तक लटकाए रखना है। अधिवक्ता ने अपराधी को छुड़ा लिया, बचा लिया। यह उसके द्वारा शब्दार्थ की गहराई तक जाने का परिणाम था। कुछ लोग कहते हैं कि इस घटना के पश्चात् ही तत्कालीन शासन ने ऐसी व्यवस्था की, कि न्यायाधीश ऐसे अपराधियों के मामले में निर्णय देते हुए लिखने लगे–"He should be hanged till death" अर्थात् इसे तब तक लटकाए रखा जाए, जब तक इसकी मृत्यु न हो जाए।

सन् २०१० में पूर्वोक्त मामले में न्यायाधीशों का कोई दोष नहीं है। इस कथन को पाठकों में से वे पाठक मेरी बात अच्छी प्रकार समझेंगे, जिनको न्यायालयों की न्यायविधि का ज्ञान है। दोष वस्तुत: उनका है जिन्होंने पुराणों में कृष्ण जी व राधा के सम्बन्धों को अश्लील चित्रित किया था। इसके अतिरिक्त उनका भी दोष है, जिन्होंने इनके सम्बन्धों को अश्लील रूप में प्रस्तुत करने वालों के हाथ न कटवाये, न पुराण जलवाये। पुराणों की हिन्दु समाज में मान्यता व प्रतिष्ठा है। न्यायालय में सामाजिक व धार्मिक दृष्टि से पापी व दोषी युवक व उस युवती के वकील ने वे प्रसंग प्रस्तुत किए जिनसे कृष्ण जी व राधा के शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करने का वर्णन है (ब्रह्म वैवर्त पुराण, श्री कृष्ण जन्म खण्ड, अ. ४६ व अ. १५) इसमें न्यायाधीशों का दोष क्या है? सरकार की ओर से प्रस्तुत हुए अधिवक्ता भी पूर्वोक्त पुराण के प्रमाणों को झुठला नहीं सके। पूरा हिन्दू समाज पुराणों को सत्य व ऐतिहासिक ग्रन्थ मानता है। आर्यसमाज बहुत पहले

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ही पुराणों को झुठला चुका है, व **महर्षि दयानन्द ने कृष्ण जी के विषय में स्पष्ट लिखा है-देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा** (स.प्र. एकादश समुल्लास)

महाखेद की बात है कि इस अनिष्टकारी निर्णय के आने के बाद ३ वर्षों में भी पूरे देश में कोई हलचल नहीं हुई। जगद्गुरु बने बैठे शंकराचार्यों में से एक ने भी इस निर्णय व इसमें राधा व कृष्ण जी के चरित्र को गलत रूप में न्यायालय द्वारा प्रमाण मानने से भविष्य में क्या दुष्परिणाम होंगे, इसकी कोई कल्पना व इसे रोकने हेतु कोई कार्यक्रम व इच्छा नहीं है। इसके अतिरिक्त कोई सन्त, कोई महन्त, कोई ठगन्त, कोई बापू, कोई गुरु, कोई बाबा, कोई संन्यासी, कोई मौलवी, किसी धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक संस्था का कोई पदाधिकारी आजतक इस विषय में कुछ नहीं बोला। इससे सिद्ध है कि उनकी दृष्टि में यह निर्णय एक युवक व एक युवती तक ही सीमित रहेगा। मेरे विचार में यह एक दूरगामी, अनिष्टकारी निर्णय है, तथा इसके विरोध में केवल हिन्दुओं को ही नहीं, अपितु आर्यों, सिक्खों, मुसलमानों, जैनियों व बौद्धों, वनवासियों, नास्तिकों व कम्युनिस्टों को भी एकत्र होकर आवाज उठानी चाहिए थी व सभी राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक व साम्प्रदायिक मतभेद भुलाकर इस विषय पर एकजुट होना चाहिए था। खेद है! हमारे देश में राजनैतिक सुख व भोग हेतु परस्पर विरोधी या भिन्न-भिन्न विचारों वाली २५-२६ पार्टियाँ एकत्रित होकर कथित न्यूनतम कार्यक्रम बना लेती हैं, परन्तु सामाजिक, धार्मिक संस्थाएँ राजनैतिक दल व समाज हित को लेकर एक मुद्दे पर भी एकत्रित नहीं होते। मुझे इस विषय में यह निवेदन करना है।

बाग़बानों ने अगर अपनी रविश नहीं बदली,
तो पत्ता-पत्ता इस चमन का बाग़ी हो जाएगा।

१६ दिसम्बर को बलात्कार की दिल्ली में हुई दुर्घटना के बाद देश में प्रजा ने जो चेतना व विरोधभाव प्रकट किया, उससे सरकार हिल गई। इससे सिद्ध है कि राजनेता केवल जनता के दबाव के आगे ही झुकते हैं। पूर्वोक्त विषय में निष्क्रिय समाज व राष्ट्र की चिन्ता कौन करेगा? आज हर कोई उच्छृंखल है। रही-सही कमी प्रस्तुत निर्णय के बाद होगी। न धर्मगुरुओं को, न समाजशास्त्रियों को, न धार्मिक संस्थाओं को उच्छृंखल हो रहे इस समाज व राष्ट्र की कोई चिन्ता है। जब ऐसा कानून कोई है ही नहीं जिसके अधीन ऐसा करने वाले स्त्री-पुरुष को अपराधी मानकर दण्ड दिया जा सके, तो न्यायालय उनको दण्ड दे ही कैसे सकता है? उच्चतम न्यायालय का यह निर्णय आने के बाद किसी राजनैतिक दल की भी नींद नहीं खुली व इस निर्णय के पश्चात् Live in Relationship के नाम पर बिना विवाह किए रहने वालों की संख्या बढ़ने लगी है। अब उनको उच्चतम न्यायालय का निर्णय विशेष उत्साह प्रदान कर रहा है व उनका मनोबल ऐसे उच्छृंखलतापूर्ण कार्य करने को बढ़ता ही जा रहा है। इस स्थिति में एक स्पष्ट कानून बनाने की तुरन्त आवश्यकता है, जिसके अधीन ऐसे सम्बन्ध को अवैध व कठोर दण्डनीय माना जाए। राधा व कृष्ण जी का कथित प्रसंग इसमें बाधा नहीं बनता।

सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक संस्थाओं, समाज-शास्त्रियों! जागो तथा इस सरकार पर तुरन्त दबाव डालो कि वह वाञ्छनीय कानून बनाए। सुख-सुविधाओं व धन-ऐश्वर्य में डूबे राजनैतिक नेताओं!! निद्रा त्यागो तथा देश के परम्परागत वैवाहिक आदर्श की रक्षार्थ तुरन्त वाञ्छनीय कानून बनाओ अन्यथा आने वाला इतिहास तुम्हें क्षमा नहीं करेगा।

दे रही हों आंधियाँ जब द्वार पर दस्तक तुम्हारे,
तुम नहीं जगे तो यह सारा ज़माना क्या कहेगा?
बहारों को खड़ा नीलाम देखो पतझड़ कर रहा है
तुम नहीं उठे तो यह आशियाना क्या कहेगा?

-चूना भट्टियाँ, सिटी सेन्टर के निकट, यमुनानगर, हरियाणा।

गज़ल

-सुकामा आर्या

इतने हसीन नज़ारे, पेश कर दिये खुदा तूने,
देखते-देखते आँख थक जाती है।

कब तक समझाएं इन नासमझों को हम,
बोलते-बोलते जुबां थक जाती है।

हारकर मैंने अपना ही दामन समेटा,
समझा-समझा के अक्ल थक जाती है।

दूर तक आशियां नज़र नहीं आता मुझको,
चलते-चलते राह थक जाती है।

बद्दुआएँ भी आखिर कब तक पीछा करतीं,
दौड़ते-दौड़ते हर शै थक जाती है।

-ऋषि उद्यान, अजमेर।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पृथ्वी का कवच–ओज़ोन आवरण

–महेन्द्र आर्य

पृथ्वी का बाहरी आवरण हमारी चिर–परिचित वायु–मण्डल है, जिसका मुख्य अवयव है, हमारी जीवन–दायिनी ऑक्सीजन गैस। ईश्वर ने ये कमाल की रचना की है। हमारे प्राणों की आवश्यकता बनाया–ऑक्सीजन गैस को और उसे उपलब्ध कराया निशुल्क सतत सर्वत्र! लेकिन ईश्वर के उपकारों की सारी सीमाएँ हम जानते तक नहीं। ईश्वर की कृपा इस वायुमण्डल के बाहर भी है, हमारे जीवन के सुरक्षा कवच के रूप में, जिसका वैज्ञानिक नाम है–ओजोन आवरण। इस लेख में हम चर्चा करेंगे उसी ओजोन आवरण की।

सूर्य की किरणें हमारे जीवन के लिए उतनी ही आवश्यक हैं, जितना हमारा भोजन, शक्ति का स्रोत है ये किरणें, हमारा ही नहीं बल्कि सारी वनस्पति, जीव–जन्तु, पशु सबका ही जीवनाधार है–ये किरणें। लेकिन सूर्य की उन्हीं किरणों के साथ–साथ आता है, विकिरण यानि Radiation. इस विकिरण का नाम है UV रेडियेशन, इसमें UV का अर्थ है–अल्ट्रा वायोलेट। ये रेडियेशन मानव शरीर और अन्य प्राणियों के लिये घातक हैं। इससे होने वाली हानियों की चर्चा हम इस लेख में बाद में करेंगे, पहले हम ये चर्चा करें कि ईश्वर ने किस प्रकार हमें इस रेडियेशन से बचा रखा है।

पृथ्वी की सतह से करीब १० किलोमीटर की दूरी पर हमारे वायुमण्डल की रचना में एक बदलाव आता है। बदलाव ये है कि हमारे वायुमण्डल में पायी जाने वाली एक गैस–ओजोन की मात्रा बहुत अधिक बढ़ जाती है। ओजोन गैस ऑक्सीजन परिवार की दूसरी गैस है, जिसकी आणविक संरचना ऑक्सीजन से जरा भिन्न है। ऑक्सीजन में दो परमाणु होते हैं, इसलिये उसका रासायनिक नाम है O_2 और ओजोन में ये संख्या तीन है, इसलिये इसका नाम है O_3। हमारे वायुमण्डल में ओजोन की मात्रा नगण्य है–दस लाख के सामने आधा यानि कि एक से भी कम कण! बाहरी आवरण में ये मात्रा बढ़कर हो जाती है दस लाख में दस कण! यानि कि बीस गुना अधिक। वायुमण्डल में ओजोन की अधिकतम मात्रा, करीब ९० प्रतिशत पायी जाती है पृथ्वी की सतह से ऊपर १० से १७ किलोमीटर की दूरी के बीच में और ये फैली रहती है करीब ५० किलोमीटर की दूरी तक। इस क्षेत्र का वैज्ञानिक नाम है–स्ट्राटोस्फीयर! बोलचाल की भाषा में इसे कहते हैं–ओजोन लेयर।

आइये चर्चा करें कि ओजोन आखिर करता क्या है? जब सूर्य देव की किरणें पृथ्वी की तरफ बढ़ती हैं तो उन्हें सबसे पहले पृथ्वी के बाह्य आवरण यानि कि १०–५० किलोमीटर के ओजोन कवच को भेदना पड़ता है। सूर्य की किरणों में मिली होती है, अनिष्टकारी UV किरणें। जब ये किरणें बाह्य मण्डल में उपस्थित ऑक्सीजन के अणुओं से टकराती हैं तो २ परमाणुओं वाला ऑक्सीजन यानि की O_2 विभक्त हो जाता है, दो अलग–अलग परमाणुओं में यानि O+O में। इस प्रकार विभक्त ऑक्सीजन परमाणु जुड़ जाता है, एक अविभाजित O_2 से और निर्माण होता है, तीन परमाणुओं से युक्त ओजोन यानि O_3 का। जब UV किरणें टकराती हैं, ओजोन से तो उसे फिर विभाजित कर देती है, O_2 और O_3 में। इस प्रकार टूटने, जुड़ने और फिर टूटने का एक लगातार सिलसिला शुरू हो जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में UV किरणें बाह्य वायुमण्डल में ही शोषित हो जाती हैं और पृथ्वी के जीवनदायी मण्डल में पहुँचती हैं, जीव मात्र के लिए गुणकारी सूर्य की किरणें।

ये तो चर्चा हुई ईश्वर के उपकारों की, आइये अब चर्चा करें मनुष्य की मूर्खता की जो अपनी करतूतों से इस परम आवश्यक ओजोन कवच को धीरे–धीरे नष्ट कर रहा है। ओजोन की दुश्मन हैं, कई प्रकार की रासायनिक गैसें, जिनमें दो मुख्य हैं–क्लोरीन और ब्रोमिन। वैसे तो ये गैसें प्राकृतिक रूप से वायुमण्डल में प्रस्तुत हैं, लेकिन वायुमण्डल अपने सन्तुलित समीकरण के कारण अपने अन्दर होने वाले सभी परिवर्तन को पचा लेता है, समस्या यह है कि इस समीकरण को असन्तुलित कर रही है, मनुष्य की संकीर्ण सोच। मनुष्य निरन्तर औद्योगिक विकास के नाम पर ऐसे रासायनिक कारखाने लगा रहा है, जहाँ ये क्लोरिन और ब्रोमिन गैसें वायुमण्डल में निरन्तर छोड़ी जा रही हैं, धुएँ के रूप में जिसमें शामिल होते हैं, इनसे निर्मित रासायनिक पदार्थ जिन्हें विज्ञान की भाषा में आर्गन हेलोजन कम्पाउण्ड कहा जाता है। इन पदार्थों में क्षमता होती है कि ये पृथ्वी के आन्तरिक वायुमण्डल की सीमा को पार कर ये बाह्य वायुमण्डल तक पहुँच जाते हैं। बाह्य वायुमण्डल में पहुँच कर जब इनका सामना होता है UV किरणों से तब ये यौगिक रसायन टूट कर मुक्त क्लोरिन और ब्रोमिन को स्वतन्त्र कर देते हैं। ये मुक्त क्लोरिन और ब्रोमिन के कण एक ऐसी लगातार प्रतिक्रिया को प्रारम्भ कर देते हैं, जिसमें ओजोन अणुओं का टूटना शुरू हो जाता है। ये विनाश कितना विशाल है, ये इस बात से पता चलता है कि **मुक्त क्लोरीन या ब्रोमिन का एक कण एक लाख ओजोन अणुओं को समाप्त कर देता है।**

इस तरह एक तेज गति से बाह्य सुरक्षा कवच में बहुत तीव्र गति से ओजोन की मात्रा का ह्रास हो रहा है। परिणामस्वरूप UV किरणों को रोकने वाला ये ओजोन आवरण इस अवरोध के लिए कमजोर पड़ता जा रहा है। पृथ्वी तक धीरे–धीरे घातक

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

UV किरणें पहुँचने लगी हैं। वैज्ञानिकों की गणना है कि पृथ्वी के वायुमण्डल में ओजोन का स्तर ४ प्रतिशत दशक की दर से कम हो रहा है। इस तरह के घटे हुए स्तर के ओजोन वाले हिस्सों को ओजोन छिद्र कहते हैं।

बाह्य वायुमण्डल के घटते हुए सुरक्षा चक्र से होने वाली हानियों का प्रभाव न सिर्फ मानव मात्र पर होगा, बल्कि जल और थल के जीव-जन्तु, सारी वनस्पतियाँ, ऋतुएँ सब कुछ किसी न किसी रूप में प्रभावित होंगे। अब तक के शोध बताते हैं कि UV किरणें मनुष्य की त्वचा और आँखों को प्रभावित करेंगी, जिससे त्वचा का कर्क रोग तथा आँखों के मोतिया और अंधेपन में बढ़ोतरी होगी। इसके अलावा सीधे या अगोचर रूप में पूरे शरीर पर प्रभाव पड़ेगा। इन किरणों से मनुष्य को विटामिन-डी बहुत बढ़ी हुई मात्रा में मिलेगा, जिससे मृत्यु दर बढ़ने की सम्भावना है।

लन्दन की एक जूलोजी संस्थान ने खोज की, जिसमें कैलिफोर्निया के तटवर्ती समुद्र से १५० व्हेल मछलियों की त्वचा पर बायोप्सी की गयी। ये पाया गया कि सबकी त्वचा सूरज की किरणों से प्रभावित है, ये प्रभाव सीधा UV किरणों के असर से जुड़ा। अनुमान है फसलें भी इससे प्रभावित होंगी। चावल की फसल के अच्छे उत्पादन के लिए आवश्यक होता है-सायनोबैक्टीरिया-जिसके बारे में परीक्षण बताते हैं कि इस विकीरण के सामने वह बचेगा नहीं।

हानियों पर असली ज्ञान तब प्राप्त होगा जब ये विकिरण और अधिक विकसित रूप में पृथ्वी पर पहुँचेगा। एक बात तो तय है कि ईश्वर ने मनुष्य के उपकार में कोई कमी नहीं छोड़ी और मनुष्य ने अपने स्वयं के विनाश में। -**मुम्बई।**

कृपया ''परोपकारी'' पाक्षिक शुल्क, अन्य दान व वैदिक-पुस्तकालय के भुगतान इलेक्ट्रोनिक मनीऑर्डर से ना भेजें

निवेदन है कि ई.एम.ओ. द्वारा ''परोपकारी'' शुल्क, अन्य दान व वैदिक पुस्तकालय के पुस्तकों के भुगतान भेजने का कष्ट न करें, क्योंकि इस फार्म में न तो ग्राहक संख्या का उल्लेख होता है और न ही पैसे भेजने के उद्देश्य का। सभा कर्मचारी उचित खाता शीर्ष में राशि नहीं जमा कर पाते हैं क्योंकि पैसे भिजवाने का उद्देश्य ज्ञात नहीं हो पाता है। इस मनीऑर्डर फार्म में संदेश का स्थान रिक्त रहता है। कृपया साधारण एम.ओ. द्वारा ही राशि भिजवाने का कष्ट करें तथा फार्म में संलग्न समाचार वाली स्लिप पर ग्राहक संख्या, दान सम्बन्धी सूचना व पुस्तकों के विवरण का अवश्य उल्लेख करें। **यदि ई.एम.ओ. से भेजना है तो संपूर्ण स्पष्ट विवरण लिखा पत्र भी अलग से अवश्य प्रेषित करें।** **-व्यवस्थापक**

सूचना

परोपकारी पत्रिका अपने लेख, कविताओं, प्रतिक्रियाओं, पाठकों के विचार, विज्ञप्ति के लिए आप लेखक-महानुभावों से अनुग्रहित होती रही है। आप सभी लेखक-महानुभावों से निवेदन है कि अपने लेख, प्रतिक्रिया, विचार, सुझाव, सूचना इत्यादि कुछ भी सामग्री, जो प्रकाशनार्थ भेजी जा रही है उसे मुद्रित कराकर, उसका प्रूफ-संशोधन कर ही भेजने की कृपा करें। जो महानुभाव अपनी प्रतिक्रिया पोस्टकार्ड में भेजना चाहते हैं, वे स्पष्ट, सुपाठ्य लिपि में लिखकर अथवा लिखवाकर ही भेजें। **-सम्पादक**

झूठ बोलना-आसान है

एक अध्ययन से पता चला है कि मात्र १० मिनट के अभ्यास से झूठ बोलने वाले ऐसा झूठ बोल सकते हैं कि उन्हें पकड़ना मुश्किल हो जाता है। और उनका झूठ सही लगने लगता है। चीन की नॉर्थ वेस्टर्न युनिवर्सिटी के जियोविंग हू ने कहा कि थोड़े से अभ्यास से लोग झूठ में पारंगत हो जाते हैं। हू ने १६ लोगों पर शोध के आधार पर यह पता लगाया है कि समय मनुष्य की झूठ बोलने की प्रवृत्ति पर प्रभाव डालता है।

सौजन्य-समाचार पत्र, दि. १५.१२.२०१२

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अतिथि यज्ञ के होता
(१ से १५ जुलाई २०१३ तक)

१. उर्मिला उपाध्याय, अजमेर, २. श्रेष्ठा चिंकारा, सोनीपत, हरियाणा, ३. कुमारी आद्या, फरीदाबाद, हरियाणा, ४. बाबूलाल बिड़ला, सुभाष नगर, अजमेर, ५. सुनील कुमार, सोनीपत, हरियाणा, ६. प्रेम सहारन, जोधपुर, ७. शिवकुमार मदान, नई दिल्ली, ८. गिरधारी लाल, अलीगढ़, उ.प्र., ९. देवमुनि, अजमेर, १०. बालेश्वर मुनि व शान्ति बत्रा, अजमेर, ११. चम्पालाल, जोधपुर, १२. आनन्द मुनि, हिसार, हरियाणा, १३. महानन्द दहिया, सोनीपत, १४. सतीश कुमार, दिल्ली, १५. धर्मवीर आर्य, नई दिल्ली, १६. सतीश कुमार आर्य, दिल्ली, १७. उमा सोनी, अजमेर, १८. सीमा कपूर, पीतमपुरा, नई दिल्ली, १९. एम.एल. गोयल, अजमेर, २०. हेमन्त शारदा, अजमेर, २१. शंकरलाल, अहमदाबाद, २२. रामवीर चुग, पंचकुला, हरियाणा, २३. स्वास्तिकम चैरेटिबल ट्रस्ट, महाराष्ट्र, २४. मानवी मदान, दिल्ली, २५. सरला गम्भीर, दिल्ली, २६. सुरेश मित्तल, फरीदाबाद, हरियाणा, २७. सुरेन्द्र खुटवार, निज़ामाबाद, आ.प्र., २८. आर.आर. नागर, उत्तराखण्ड। **-परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला जो परमार्थ हेतु संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगत अतिथियों को निःशुल्क वितरित किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता
(१ से १५ जुलाई २०१३ तक)

१. जस्टिस प्रीतमपाल, चण्डीगढ़, २. राजेश त्यागी, अजमेर, ३. प्रकाशवती, सोनीपत, हरियाणा, ४. संजय, सोनीपत, हरियाणा, ५. राजसिंह कधान, सोनीपत, हरियाणा, ६. पन्नालाल डोलरिया, होशंगाबाद, म.प्र., ७. सरोजदेवी चन्द्र, छत्तीसगढ़, ८. आयुष्मान पलक, अजमेर, ९. हीरालाल शर्मा, छोटी सादड़ी, प्रतापगढ़, १०. नरेन्द्र सिंह आर्य, मुजफ्फरनगर, उ.प्र., ११. महेन्द्र कुमार, अम्बेडकर नगर, १२. राजेन्द्र व रंजना, भोपाल, म.प्र., १३. नरपत सिंह आर्य, भीनमाल, जालौर, १४. चम्पालाल, जोधपुर, १५. मधुराम, अजमेर, १६. रामकृष्ण शास्त्री, बहरोड़, अलवर, १७. सरवर राणा, बागपत, उ.प्र., १८. राधाकृष्ण, नरेला, हरियाणा, १९. सूर्यांश, लखनऊ, २०. सत्यदेव सिंह, मुजफ्फरनगर, उ.प्र., २१. दीपक, अजमेर, २२. सुमित्रा बाई, होशंगाबाद, म.प्र., २३. शशि नागपाल, गुड़गाँव, हरियाणा, २४. महेश चन्द्र, जयपुर, २५. हेमराज सोनी व हेमन्त कुमार सोनी, अजमेर, २६. दिव्य आर्य, पानीपत, हरियाणा, २७. रिसालदार रामचन्द डागर, नजफगढ़, दिल्ली-४३, २८. हनुमान शाह, जयपुर, २९. माणकचन्द आर्य, उज्जैन, म.प्र., ३०. रमेश चन्द शर्मा, भरतपुर, ३१. वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर, ३२. राधेश्याम, अजमेर, ३३. सन्दीप गोपकराप सेगोकार, अकोला, महाराष्ट्र, ३४. दीपक सांखला, अजमेर, ३५. हिमांशु यादव, मीरशाली, अजमेर, ३६. प्रेमलता शर्मा, अजमेर, ३७. विनोद सिंह राजपूत, होशंगाबाद, म.प्र., ३८. नवरंजन चन्द्र, जगीछापा, छत्तीसगढ़, ३९. जयप्रकाश आर्य, भिवानी, हरियाणा, ४०. प्रमोद काकाणी, अजमेर, ४१. अशोक जैन, अजमेर, ४२. भंवरलाल चौधरी, जयपुर, ४३. रामरतन, अजमेर, ४४. अतुल कुमार गुप्ता, अलवर, ४५. बसन्त सुखदेव, पुणे, महाराष्ट्र, ४६. विनोदसिंह दोलरिया, होशंगाबाद, ४७. निर्मला गुप्ता, अजमेर।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

सब मनुष्यों को योग्य है कि जिस व्यापक परमेश्वर ने महतत्त्व, सूर्य, भूमि, अन्तरिक्ष, वायु, अग्नि, जल आदि पदार्थ वा उन में रहने वाले ओषधी आदि वा मनुष्यादिकों को रच धारण कर सब प्राणियों के लिये सुखों को धारण करता है, उसी की उपासना करें। **महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ४.१९।**

मनुष्यों को उचित है कि इस सब जगत् का परमेश्वर ही रचने और धारण करने वाला व्यापक इष्टदेव है ऐसा जानकर सब कामनाओं की सिद्धि करें। **महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ४.२१।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आचमन मात्र क्रिया नहीं, वह तो संस्कृति है

-प्रो. कमलेशकुमार छ. शास्त्री

हमारी आर्यसमाज की वैदिक परम्परा में सन्ध्या तथा यज्ञ का प्रारम्भ करने के समय एक क्रिया अनिवार्य रूप से की जाती है, जिसे आचमन कहा जाता है। इस आचमन की क्रिया को जिसने नहीं किया, वह सन्ध्या तथा यज्ञ करने का अधिकारी नहीं होता।, ऐसा हमारा विधान है।

आईये, आज इस आचमन की क्रिया पर थोड़ा विशेष विचार करें तथा यह जानने का उपक्रम करें कि यह आचमन मात्र एक क्रिया है या क्रिया के अतिरिक्त कुछ और भी है।

आचमन क्रिया का स्वरूप

सर्वप्रथम हम इस आचमन की क्रिया का स्वरूप देखेंगे, तो पता चलेगा कि इस क्रिया के लिये एक आचमन पात्र और एक चम्मच होता है। आचमन का पात्र पानी से भरा रहता है। पानी से भरे हुए इस आचमन पात्र में से यजमान चम्मच भर कर पानी लेता है और वह अपनी हस्तांजलि में धारण करता है। फिर मन्त्र का उच्चारण करके, प्रभु का नाम लेकर, उस जल को यजमान पी लेता है।

आचमन की इस क्रिया में कुछ बातें ध्यान देने योग्य हैं। जैसे कि-**१.** आचमन के पात्र तथा उस पात्र में भरे गये पानी का मालिक यजमान स्वयं होता है। **२.** स्वयं की मालिकी वाले उस जल में ये यजमान मात्र थोड़ा सा ही (चम्मच भर) जल लेता है, और भगवान् का नाम उच्चारण कर के उसे पी जाता है, आचमन करता है। **३.** तीन बार आचमन कर लेने के बाद यजमान स्वयं ही उस पात्र में रखे गये पानी को त्याग देता है। **४.** अब वह पानी यजमान की मालिकी का होते हुए भी खुद यजमान के लिये उपयोग में नहीं लिया जाता है, परन्तु वे तो अन्यों के उपयोग के लिए होता है।

वस्तुत: इस प्रकार से की जाने वाली इस आचमन क्रिया में एक दर्शन छिपा हुआ है। यह दर्शन हमारे जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त हो कर हमारी संस्कृति का रूप ले लेता है। आईये जरा इसे विस्तार से समझने का प्रयत्न करें।

सन्ध्या तथा हवन के प्रारम्भ में की जाने वाली इस आचमन क्रिया में जो आचमन पात्र तथा उस पात्र में जो पानी भरा रहता है वह, हमारे द्वारा कमाये गये धन-ऐश्वर्य का प्रतीक है। आचमन की क्रिया करते हुए जो जल का पान किया जाता है वह, हमारे द्वारा किये जाने वाले उस धन-ऐश्वर्य के भोग का प्रतीक है। इस प्रतीक के द्वारा आचमन की क्रिया मात्र क्रिया न रहकर हमारे जीवन जीने का तरीका भी बन जाती है, जिसे हम अपनी संस्कृति कहते हैं। इस प्रकार आचमन एक संस्कृति का रूप ले लेता है।

आचमन संस्कृति का स्वरूप

१. आचमन का पात्र तथा उस पात्र में भरा गया पानी जब हमारे द्वारा कमाये गये धन-ऐश्वर्यरूप सम्पत्ति का प्रतीक होता है, तब इस स्वोपार्जित सम्पत्ति के मालिक यजमान के रूप में हम स्वयं होते हैं।

२. यजमान इस स्वयं की मालिकी वाले धन का प्रयोग करने के लिये जब उद्यत होता है, तब वह उस धन में से मात्र थोड़ा सा ही (चम्मच भर) धन लेना है, पूरे का पूरा नहीं और साथ ही वह थोड़े से धन का उपयोग करते हुए भगवान् का स्मरण भी करता है।

३. आचमन की क्रिया तीन बार होती है। वह इस बात का प्रतीक है कि एक बार के आचमन से हमारी तृप्ति नहीं होने वाली है, अत: हमें ज्यादा से ज्यादा तीन बार आचमन करने का अवसर दिया जाता है। लेकिन, तीन बार आचमन का कार्य पूरा हो जाने पर यजमान स्वयं ही आचमन पात्र में रखे गये पानी को स्वेच्छा से त्याग देता है, वैसे ही यजमान अपने जीवनकाल में अपनी मालिकी के धन का स्वल्प प्रयोग करके शेष धन को स्वेच्छा से त्याग देता है।

४. आचमन की क्रिया में यजमान के द्वारा पीये हुए जल का प्रमाण कम तथा त्याग किये हुए जल का प्रमाण ज्यादा होता है, वैसे ही हमारे द्वारा जिस धन का प्रयोग हो, वह कम होना चाहिये तथा जिसे हम अन्यों के लिये त्याग दे रहे हैं। उस धन का प्रमाण ज्यादा होना चाहिये। यदि ऐसा है, तो समझना चाहिए कि हमारी दान क्रिया आचमन का रूप ले रही है।

५. अब स्वेच्छा से त्याग किये गये धन का स्वामित्व हमारा होते हुए भी हमें उस धन का अन्यों के लिये उपयोग करना होता है। अर्थात् बचे हुए सम्पूर्ण धन को हम अपने उपयोग में न लेकर मात्र परोपकार के कार्य में लगाते हैं, लगाना चाहते हैं।

यदि हम ऐसा करते हैं, तो हमें समझना चाहिये कि हम आचमन की संस्कृति को जी रहे हैं। यह आचमनरूप संस्कृति हमारे जीव में क्रमश: व्यापक बनती जाती है। संयुक्त परिवार में जीवन व्यतीत करने वाले हम जब थाली में अपना भोजन परोसते हैं, तब भी वहाँ आचमन क्रिया सम्पन्न होती देखते हैं। **भगोने में से अपने खाने के लिये हम जितना पदार्थ लेते हैं। उससे ज्यादा पदार्थ अपने परिवार के अन्य सदस्यों के लिये त्याग देने का, छोड़ देने का हमें नित्य अवसर मिलता**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

है। परन्तु यदि हम एकाकी जीवन जीते हैं, तो हमें भोजन के अवसर पर कभी भी आचमन का अवसर नहीं मिल पाता। दूसरे शब्दों में कहें तो हम संयुक्त परिवार में इसी कारण रहना पसंद करते हैं कि हमें भोजनादि अवसरों में भी आचमन करने का अवसर प्राप्त होता है।

आचमन रूप संस्कृति का परिणाम

यज्ञशाला में आचमन करने वाला कोई नहीं होता है, तो वहाँ यज्ञ का कार्य कभी भी संभव नहीं बनता है। ठीक इसी प्रकार से समाज में जब आचमन की क्रिया करने वाले लोग सद्‌गृहस्थी नहीं रहते हैं, तब जन सामान्य की सेवा करने वाली संस्थाओं की प्रवृत्तियाँ भी संभव नहीं बन पाती हैं। यदि यज्ञशाला में यज्ञ का कार्य चालू रखना है, तो आचमन करने वाला कोई होना ही चाहिये। इसी तरह यदि हम सामाजिक सेवा की प्रवृत्तियों को चालू रखना चाहते हैं, तो हमें अपने धन का स्वयं के लिये कम तथा अन्यों के लिये ज्यादा उपयोग करने रूप आचमन की क्रिया करने वाले सद्‌गृहस्थ समाज में होने ही चाहियें।

इस आचमन की क्रिया को हमारे पूर्वज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में करते आये हैं। आज हमें आवश्यक है कि हम भी इस आचमन संस्कृति को अपने जीवन में व्यापक रूप देने का व्रत लें। जब तक आचमन क्रिया होती रहेगी तब तक यज्ञशाला में हवन, सेवाभावी संस्थाओं में सेवा तथा संयुक्त परिवार में सुखी जीवन की प्रवृत्तियाँ होती रहेंगी तथा आगे बढ़ती रहेंगी। आचमन के अभाव में यज्ञ, सेवा तथा संयुक्त परिवार मिट जायेंगे, यह निश्चित है। -**२४-बी, वीरनगर सोसायटी, नवावाडज रोड, अहमदाबाद, गुजरात**

ई-मेल द्वारा परोपकारी निःशुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई-मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब-साइट पर तो परोपकारी पहले से ही निःशुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब-साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई-मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रासायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा। अतः पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई-मेल पता सभा को ई-मेल से भिजवा देवें।** आप जिन इष्ट-मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह निःशुल्क भेज दी जायेगी। ई-मेल-psabhaa@gmail.com **व्यवस्थापक**

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

स्वीकार्यता-जीवन का एक अभिन्न पहलू

-सुकामा आर्या

हम सब एक स्तर पर जीवन जी रहे हैं, उसमें से कई परिस्थितियाँ हमें मन से स्वीकार्य होती हैं, कई नहीं भी होती हैं। इन दोनों के बीच का अनुपात हमारी सोच व समझ पर निर्भर करता है। एक योगी की स्वीकार्यता का दायरा बहुत विशाल होता है, वहीं पर एक भोगी की स्वीकार्यता का दायरा संकीर्ण व तंग होता है।

इसके पीछे के कारणों में चाहे अज्ञान हो, अभाव हो या अन्याय हो-हमें अपने दायरे को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि जब हम व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति को ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं करते, तब हमारे अन्दर द्वेष, उद्विग्न पैदा होता है, जिससे हम मानसिक स्तर पर विचलित हो उठते हैं, परेशान हो जाते हैं, एकाग्र नहीं हो पाते। हमारी कार्य कुशलता इससे प्रभावित होती है। वह वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति, वह दृश्य बार-बार आँखों के आगे आकर खड़ा हो जाता है, जितना आप उसे हटाने का प्रयास करते हैं, उतना ही वो आपको परेशान करता है, क्योंकि यह प्रकृति का नियम है-What you resist, will persist. इसका हल यही है कि तत्क्षण-पूरे मन से, प्रेम से, भाव से उस व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति को स्वीकार कर लिया जाए। यानि कि यह विचार लाया जाए कि "यह ऐसा ही है"। इससे यह लाभ होगा कि आप व्यर्थ की चिंता, विषाद् से बच जाएंगे। यूँ भी देखा जाए तो हमारे पसंद करने या न करने से सामने वाला व्यक्ति या परिस्थिति बदलनी तो है नहीं। अगर बदलाव होगा भी तो वो ईश्वरीय या प्रकृति के नियमों से ही होगा। तो क्यों दूसरों को, उनकी आदतों को, स्वभाव को बदलने के चक्कर में अपने श्रम, धन व समय का नुकसान करें। अपनी मानसिक शांति का त्याग करें।

स्वीकार्यता के दो पक्ष मुख्य तौर पर देखने चाहिए-

१. ACTIVE ACCEPTANCE-यह तब होती है जब हम व्यक्ति या परिस्थिति को स्वीकार तो करते हैं हीं साथ में उसमें सुधार लाने का प्रयत्न भी करते हैं। जैसे कोई अपने मित्र, परिवार या संस्था में कोई दोष देखता है तो पहले उसे स्वीकार करता है कि यह ऐसा है, या यह अव्यवस्था है फिर उसमें सुधार लाने का प्रयास करता है। सुझाव देता है, यानि परिस्थिति से संबंधित जानकर कुछ कार्यवाही करता है।

जीवन के नकारात्मक पक्षों में भी हमें सर्वप्रथम स्वीकार करना पड़ता है जैसे-चोर या डाकू के आने पर हम पहले परिस्थिति को समझ कर, संतुलित हो कर फिर उचित निर्णय ले पाते हैं, नहीं तो घटना को स्वीकार न कर पाने की दशा में हम अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं व कुछ भी कार्यवाही कर पाने में असमर्थ हो जाते हैं।

२. PASSIVE ACCEPTANCE-यह तब होती है जब हम व्यक्ति, परिस्थिति को स्वीकार तो करते हैं पर हम उनमें सुधार लाने के लिए कोई कदम नहीं उठाते हैं। जैसे कई बार किसी संस्था में, घर में अथवा कार्यालय में हमें मालूम होता है कि यहाँ-यहाँ सुधार की, बदलाव की आवश्यकता है, परन्तु हम झिझक के मारे या अपने आपको अयोग्य समझकर सुधार का प्रयत्न नहीं करते हैं अथवा अधिकारीगण अपने साथियों की योग्यता का मूल्य नहीं समझते हैं तो संस्था अथवा समाज सुधार का, प्रगति का अवसर समाप्त हो जाता है। परन्तु हमारा यथासंभव प्रयास अवश्य होना चाहिए, ताकि उत्तरोत्तर प्रगति की जा सके।

इस प्रकार स्वीकार्यता हमें अपने मन को संयमित, नियंत्रित कर साधना के पथ पर बढ़ने का अवसर देती है। साथ में अपने व्यवहारिक पक्ष में भी सन्तुलित रहने में सहायता करती है। हम व्यर्थ में अपनी प्रतिक्रियाएँ देने, संबंधों में कटुता लाने से बच सकते हैं।

इसलिए जीवन के हर पहलु यथा-घर में, समाज में, कार्यालय में अथवा संस्था में यथासंभव स्वीकार्यता को साथ ले कर चलें, ताकि हम एक संतुलित व्यवहार करते हुए मानसिक उद्वेगों से बचते हुए अपने साधना पथ पर निरन्तर प्रगति करते रहें। यह भाव रखकर कि-

राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है,
या यूँ भी वाह-वाह है, वा वूँ भी वाह-वाह है।।

-ऋषि उद्यान, अजमेर।

अधिक नमक का उपयोग उच्च रक्तचाप का कारण

स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि चीज़ में नमक की मात्रा ज्यादा होने से उच्च रक्तचाप बढ़ जाता है, जिससे पक्षाघात और दिल के दौरे की संभावना बढ़ जाती है। विशेषज्ञों ने कहा कि चीज़ के एक टुकड़े में एक पैकेट चिप्स आदि से अधिक नमक होता है। कन्सेसस एक्शन ऑन साल्ट एण्ड हैल्थ नामक अभियान की निदेशक डॉ. कैथरीन ने कहा कि "चीज़ खरीदते समय हमेशा पैकेट जांचें व कम नमक वाला चीज़ ही खरीदें।" उन्होंने कहा कि नमक उच्च रक्तचाप का सबसे प्रमुख कारण है। **सौजन्य-समाचार पत्र, दिनांक ०७.१२.२०१२**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में ठोस श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्त्व भी एक दिन समाप्त प्राय: हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहे हैं, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्य जन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें।** इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला २०१४ दिल्ली में प्रचार-प्रसार की योजना तैयार की गयी है।

सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-**१.** यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। **२.** आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों का पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। **३.** दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय परम्परा, कर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है व होगी। **४.** पाखण्ड, मक्कारी, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। **५.** सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। **६.** सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है, जरूरी है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा**-**१.** सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साईज डमई आकार में होगी। लागत मूल्य ५०/- रुपये प्रति पुस्तक। **२.** ऋषि जीवन चरित्र हिन्दी में लगभग २०० पृष्ठ व साईज डमई आकार में। लागत मूल्य ३०/- रुपये प्रति पुस्तक। **३.** सत्यार्थप्रकाश हिन्दी से इतर (अन्य) भाषियों के लिए सी.डी.या डी.वी.डी. के माध्यम से उपलब्ध करवाया जायेगा। इस डी.वी.डी. में लगभग १८ भाषाओं में सत्यार्थप्रकाश होगा। लागत मूल्य लगभग २५/- होगा। **४.** संक्षिप्त ऋषि जीवन चरित्र अंग्रेजी में। लागत मूल्य १०/- रुपये।

नोट-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को नि:शुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य शिक्षित विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए अच्छी वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता सम्पर्क आदि हो। जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

नोट-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय **सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसारशीर्षक** अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप चैक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर देवें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-**परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

नोट : इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

सम्पर्क : आचार्य दिनेश, चलदूरभाष-७७३७९०४९५०

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

मानव की वरणीय संस्कृति

-उमाकान्त उपाध्याय

आजकल ''संस्कृति'' शब्द का बड़ा भ्रामक प्रयोग हो रहा है, यह प्रयोग-भ्रष्टता कब से चली, कहाँ से चली, यह तो समझ में नहीं आया, किन्तु इस समय ''सांस्कृतिक कार्यक्रम'' और ''Cultural Program'' से यह समझा जाता है कि यहाँ संगीत, वाद्य, नाटक, नृत्य, कविता पाठ आदि का आयोजन हो रहा है, वस्तुत: संस्कृति मानव समाज के उत्थान का प्राण और मानवता के श्रेष्ठ गुणों का आत्मा है, मानव के व्यक्तिगत और सामाजिक चरित्र का श्रेष्ठतम् स्वरूप मानव संस्कृति है। परस्पर प्रेम, दया, करुणा, सहानुभूति आदि मानव संस्कृति के अभिन्न अंग हैं।

सभ्यता और संस्कृति, दो शब्दों का युग्म, जोड़ा प्राय: बोलचार में प्रयोग में आता है, सभ्यता समाज का बाह्य रूप, शरीर के समान है। जहाँ वस्त्र, पोशाक, घर, बागान, मकान, मार्ग, गाड़ी सभ्यता के अंग हैं वहीं व्यक्ति और समाज की आंतरिक विशेषताएँ संस्कृति है। इसलिए सभ्यता समाज का बाह्य दर्शन, वाहिनी स्वरूप शरीर जैसा है और संस्कृति चरित्र के आंतरिक गुण यथा प्रेम, स्नेह, दया, करुणा, द्वेषहीनता व काम, क्रोध, लोभ आदि से निवृत्ति ''संस्कृति'' के अंग हैं।

यूरोप, पश्चिमी देशों की वर्तमान संस्कृति का आधार डार्विन का विकासवाद है। विकासवाद का मूल आधार है-''योग्यतम की जीत'' (Survival of the fittest). अर्थात् जिसकी लाठी उसकी भैंस, बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है, मनुष्यों का भी बलवान् समुदाय निर्बल समुदायों पर अधिकार करके उनका शोषण करता है। साम्यवादी संस्कृति का आधार है-वर्ग-संघर्ष, वर्गों का आपस में लड़ना और बलवान् का जीतना, ये सब पशु संस्कृति है। इसका प्रचलन मनुष्य समाज को पशु बना देता है। इस समय तो भूमण्डलीकरण और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की नीति उपभोक्तावाद (Consumerism) को, पशुओं से बदतर उपभोग को बढ़ाना हो गया है। उपभोक्ता मरे या जिये, मांस, शराब, अण्डे आदि के उपभोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह मानवता के नाम पर कलंक है।

इन सबसे पृथक् भारतीय संस्कृति का एक वरेण्य स्वरूप वेद में मिलता है-

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि व:,
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाध्न्या।।

अथर्व. ३/३०/१

वेद की वाणी में परमेश्वर ने मानव को उपदेश दिया है कि हम (परमेश्वर) तुम्हें सहृदय-सुख-दु:ख में परस्पर सहानुभूति, सौमनस्य (सुन्दर मन) और द्वेष-रहित वाला बना रहे हैं, ऐ मानव! तुम एक-दूसरे को इतना प्यार करो, ऐसे प्यार करो जैसे गाय अपने तुरन्त उत्पन्न हुए बच्चे को प्यार करती है, गाय का अपने बच्चे को प्यार करना, सो भी तुरन्त उत्पन्न हुए बच्चे को प्यार करना, संसार के निश्छल, नि:स्वार्थ प्रेम का श्रेष्ठतम् उदाहरण है। गाय और बछड़े का यही प्रेम-पूर्ण व्यवहार मानव समाज की संस्कृति का आधार है।

मनुष्य समाज में कोई छोटा-बड़ा नहीं होता, न कोई ज्येष्ठ, न कोई कनिष्ठ सभी अपने सौभाग्य की वृद्धि के लिए भाई-भाइयों की तरह मिलकर प्रयत्नशील हों, वेद में कहा गया है-''**अज्येष्ठासो अकनिष्ठास: ऐते सं भ्रातरो वावृधु: सौभगाय।**'' ऋग्वेद-५.६०.५ मनुष्य समाज में तीन प्रकार का अभाव देखा था। **१.** ज्ञान के अभाव, इसे जो दूर करने का व्रत ले, वो ब्राह्मण (ब्रह्म=ज्ञान), **२.** न्याय के अभाव, इसे जो दूर करे, वो क्षत्रिय (क्षत्=घाव, हानि), **३.** आलम्बन पदार्थों के अभाव, भोजन, वस्त्र, आवास आदि। इन्हें समाज के लिये उत्पन्न करे, वो वैश्य और **४.** इन तीनों वर्गों में जो श्रम से सहायता करे तो वो शूद्र-आज की भाषा में चतुर्थ श्रेणी का कर्मचारी, भारतीय संस्कृति में मानवता के नाते सभी बराबर के मनुष्य हैं।

परमेश्वर ने मानव जीवन को उत्थान, समृद्धि, सम्पन्नता के लिये बनाया है। स्रष्टा अपनी सृष्टि को विपन्न नहीं देखना चाहता। परमेश्वर वेद में आश्वासन देते हैं-''**उद्यानं ते नावयानं, जीवातुं ते दक्षतातुं कृणोमि**'' अर्थात् हे मानव, तुम्हारे जीवन उन्नति के लिए है और तुम्हारे जीवन को दक्षता से सम्पन्न बना रहा हूँ। अवनति, विपन्नता मानव समाज की नियति नहीं है।

ऋषि कहते हैं-''**भोगापवर्गार्थं दृश्यम्**'' अर्थात् यह संसार परमेश्वर का दृश्य-काव्य है, और वेद श्रव्य-काव्य हैं। परमेश्वर ने इस संसार को भोगार्थ तथा अपवर्गार्थ (मोक्ष) बनाया है, बल्कि यों कहना चाहिए कि परमेश्वर ने भोग के द्वारा मोक्ष की साधना के लिए इस संसार को बनाया है। ''साधन धाम मोक्ष कर द्वारा''। इस संसार का कैसे भोग किया जाये यह भी वैदिक संस्कृति बताती है-''**ईशा वास्यमिदं सर्वं, यत्किञ्च जगत्यां जगत्, तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध: कस्य स्विद्धनम्**''।-यजु. ४०/१। अर्थात् इस चलायमान संसार में जितने भी पदार्थ हैं, सबमें परमेश्वर का निवास है (वस=निवासे), सब परमेश्वर की छत्र-छाया में है। (वसु=अच्छादने) भाव यह है कि संसार में सभी पदार्थ परमेश्वर की छाया में हैं और परमेश्वर ने कृपा पूर्वक प्राणियों को भोग करने के लिए दे दिया है। इस संसार का कैसे उपभोग किया जाये, यह भी अपनी संस्कृति बताती है। कहा है-''**तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:**''-इसलिए

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

त्यागपूर्वक भोग करो। त्यागपूर्वक भोग में केवल उपभोग के द्वारा लाभ लेने की बात है, संचय करना, स्वत्व जनाना, मालिक बनना आदि नहीं है। त्यागपूर्वक भोग का एक सुन्दर उदाहरण है-रेलगाड़ी की यात्रा। रेलगाड़ी सुन्दर है, डिब्बा भी सुन्दर है, साथी, सहयात्री सभी सुन्दर, भले हैं, किन्तु गन्तव्य स्टेशन पर सबका त्याग कर उतर जाना त्यागपूर्वक भोग है, न गाड़ी अपनी है, न डिब्बा अपना है और न तो बाहर सुन्दर दृश्य अपने हैं, सबका त्याग ही अभीष्ट है-''किसकी रेलगाड़ी और कौन रेलगाड़ी का?'', ''**तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः**''। यह भी आशय है कि 'तेन परमेश्वरेण त्यक्तेन प्रसादरूपेण प्रयक्तेन भुञ्जीथाः, अर्थात् संसार के भोगों को परमेश्वर का प्रसाद मानकर भोग करें। जैसे प्रसाद में कोई आसक्ति या लोभ-लालच नहीं होता, उसी प्रकार संसारी पदार्थों में स्वत्व, आसक्ति नहीं रखनी चाहिए। संसार में स्वत्व, ममत्व, आसक्ति, अधिकार, मालिकाना की भावना ही संसार में अशान्ति, वैर और विपत्ति का कारण है। श्री दिनकर जी ने ठीक ही कहा है-''छीन-छीन जलथल की थाती, संस्कृति ने जिन रूप समाया, विस्मय है! तो भी न शान्ति का दर्शन एक पलक को पाया''। संचय, लोभ, परिग्रह की भावना ही मनुष्य को मनुष्य से, देश को देश से, राष्ट्र को राष्ट्र से अलग करती है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट पर अधिकार करने के लिए अस्त्रों-शस्त्रों का संग्रह करता है और संसार में विभिन्न देशों में युद्ध होते हैं, विश्व-युद्ध भी होते हैं।

भारतीय संस्कृति का उपदेश है-''**मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्:, मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे**।'' सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखें। यह मेरा है, यह मेरा नहीं है, दूसरे का है, यह स्वार्थी क्षुद्र दृष्टि है। ''**उदार चरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्**'' अर्थात उदार चरित्र पुरुषों के लिए सम्पूर्ण संसार एक कुटुम्ब है। ''**तत्र विश्वं भवत्येक नीडम्**'' अर्थात् सारा संसार एक परिवार है, प्राणी मात्र परमेश्वर की सन्तान है और परमेश्वर सबका पिता है, पालक, रक्षक है।

-''ईशावास्यम्'', पी-३०, कालिन्दी, कोलकाता, चलभाष-९४३२३०१६०२

एनर्जी ड्रिंक से बढ़ती स्वास्थ्य समस्याएँ

अमेरिका में एनर्जी ड्रिंक पीकर अस्पताल पहुँचने वालों की संख्या २००७ से २०११ के बीच दोगुने से अधिक हो गई है। यह निष्कर्ष है अमेरिकी सरकार की ओर से किए गए अध्ययन का। जिस दौरान यह अध्ययन किया गया, उस दौरान सुपरचार्ज ड्रिंक इंडस्ट्री ने दुकानों, बार और कॉलेज कैंपस में तेजी से अपनी जगह बनाई है।

सरकार का अनुमान है कि २००७ से २०११ के बीच एनर्जी ड्रिंक पीकर अस्पतालों में पहुँचे मरीजों की संख्या १० हजार से बढ़कर २० हजार तक पहुँच गई। रिपोर्ट में हालांकि, इस बात का खुलासा नहीं किया गया है कि एनर्जी ड्रिंक पीने के बाद किस तरह के लक्षण दिखने पर लोगों को इमरजेंसी रूप में ले जाया गया। मगर, एनर्जी ड्रिंक की खपत को बढ़ती स्वास्थ्य समस्या माना गया है। इसकी वजह से घबराहट, सिरदर्द, हृदयगति बढ़ना, अनिद्रा की शिकायत होने की बात मरीजों ने बताई।

कई चिकित्सकों ने कहा कि उन्होंने अनियमित हृदय गति, चिन्ता और दिल के दौरों से पीड़ित रोगियों की जांच में पाया कि उन्हें इसकी शिकायत होने के पहले ही एनर्जी ड्रिंक पिया था। डॉक्टरों का कहना है कि एनर्जी ड्रिंक पीकर बीमार होने वाले लोगों की संख्या में इजाफा देखा जा रहा है। साल २०११ में एनर्जी ड्रिंक के साथ एल्कोहल और ड्रग मिलाने के करीब ४२ फीसदी मामले सामने आए थे। अमेरिकन कॉलेज ऑफ फिजीशियन्स के प्रवक्ता होवार्ड मेल ने कहा कि कई लोग इसकी शक्ति के बारे में नहीं जानते हैं। हाल ही आये एक व्यक्ति ने एक घण्टे के अन्दर तीन एनर्जी ड्रिंक पिए थे, जो कि करीब १५ कप कॉफी के बराबर है। इससे वह बेहद तनाव में आ गया। शुक्र है कि उसका हृदय कमजोर नहीं था और वह हृदय की धमनियों की बीमारी से ग्रस्त नहीं था।

फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन से एनर्जी ड्रिंक के तत्वों और उसके सुरक्षा संबंधी पहलुओं की जांच कराने की मांग दो सीनेटर कर रहे हैं।

सौजन्य-दैनिक भास्कर, १९.०१.२०१३

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सं किर

(अथर्ववेद ३.२४.५)

(सौ हाथों से कमाओ, हजार हाथों से दान करो।)

पीड़ितों की सहायता के लिए अपने हाथ बढ़ाइये

आप सबको विदित है कि देश के अनेक भागों में बाढ़ का प्रकोप चल रहा है, विशेष रूप से उत्तराखण्ड में बाढ़ का भीषण प्रकोप हुआ है। नदियों के किनारे के अनेक नगरों के भवन गिर गए हैं। पहाड़ों में जल के प्रवाह में अनेक गाँव के गाँव बह गये हैं। यातायात व संचार व्यवस्था टूट गई। जिन लोगों के घर बह गये हैं, जिनके परिजन बिछड़ गये हैं, जो आज जीवन-यापन के साधनों का अभाव झेल रहे हैं, उन्हें आवास, भोजन, चिकित्सा के साधनों की अत्यन्त आवश्यकता है।

गरीब असहाय लोगों तक पहुँच कर उनकी सहायता, सहयोग करना, सभी देशवासियों का कर्त्तव्य है। इस कार्य के लिए परोपकारिणी सभा का सेवादल उत्तराखण्ड के इन बीहड़ क्षेत्रों में पहुँच गया और युवा लोग सेवा कार्य में जुट गये हैं।

हम सब मिलकर इस कार्य को आगे बढ़ायें। अत: हमारा सबका कर्त्तव्य है तन-मन-धन से इस कार्य में सभा की सहायता करें। आप जितनी शीघ्रता से अपना सहयोग प्रदान करेंगे हम उतनी शीघ्रता से उसे पीड़ितों तक पहुँचा सकेंगे।

आप अपना धन-बाढ़ पीड़ित सहायता कोष में भेजें। धन भेजने का पता निम्न प्रकार है-

१. बैंक खाता संख्या - 091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

जो कार्यालय में आकर देना चाहे वे कार्यालय समय में १०.३० से ५.३० बजे तक कार्यालय परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राज. पर देवें। अन्य समय में ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर सम्पर्क कर अपना सहयोग जमा करा सकते हैं।

जो बैंक में राशि जमा कराना चाहें वे उपरोक्त पते पर जमा करा सकते हैं।

दिल्ली व आसपास के लोग अपनी सहायता निम्न पते पर दे सकते हैं-

श्री सत्यानन्द आर्य,
रोड़ सं. ४६-ए, आर्यसमाज मन्दिर,
पंजाबी बाग पश्चिम,
दिल्ली।

एवं सहयोग जमा कराकर रसीद प्राप्त कर सकते हैं।

आपके सहयोग की प्रतीक्षा में **परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

सम्पर्क : दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

वेदों की सार्वभौमिकता

-डॉ. कपिलदेव द्विवेदी

वेद ज्ञान की निधि हैं। वेदों में अनन्त ज्ञान और विज्ञान भरा हुआ है। विश्व संस्कृति के आधार वेद हैं, इनसे विश्व की विभिन्न संस्कृतियों का विकास हुआ है। अतएव स्मृति ग्रन्थों में वेद को सर्वज्ञानमय बताते हुए इसे धर्म का आधार कहा गया है और द्विजमात्र के लिए वेदों के अध्ययन पर विशेष बल दिया गया है।

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्। मनुस्मृति २-६
सर्वज्ञानमयो हि सः। मनु. २-७
वेदमेव सदाभ्यस्येत् तपस्तप्यन् द्विजोत्तमः। मनु. २-१६६
सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा। यजुर्वेद ७-१४

वेदों के विषय में स्मृतियों आदि की यह अवधारणा गम्भीर चिन्तन का फल थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों को अक्षय ज्ञान का स्रोत और मानवमात्र के लिए अभ्युदय का आधार माना है। वेदों की ज्योति से ही समस्त विश्व का कल्याण सम्भव है।

अतएव ऋषिवर ने आर्यसमाज के दस नियमों में सभी आर्यों के लिए वेदाध्ययन अनिवार्य कर्त्तव्य बताया है। ''वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है''।

महर्षि यास्क का कथन है कि वेदों में गूढ़ तत्व छिपे हुए हैं। उन्हें ऋषि या तपस्वी ही जान सकते हैं।

नहि एषु प्रत्यक्षमस्ति अनृषेरतपसो वा। निरुक्त १३-२२

महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में जहाँ अन्य विविध विषयों का विवेचन किया है, वहाँ उन्होंने कतिपय वैज्ञानिक विषयों का भी विवेचन प्रस्तुत किया है। उनमें विशेष उल्लेखनीय विषय ये हैं-**पृथिव्यादिलोकभ्रमण-विषयः, आकर्षणानुकर्षण-विषयः, प्रकाश्य-प्रकाशक-विषयः, नौविमानादिविद्या-विषयः, तारविद्याविषयः, वैद्यकशास्त्रमूलविषयः।**

अर्थात्-पृथिवी आदि लोक घूमते हैं, सूर्य के आकर्षण से लोक रुके हुए हैं, सूर्य, चन्द्रमा आदि को प्रकाश देता है, वेदों में गणित विद्या, नौका, विमान आदि की रचना तथा तारविद्या और वैद्यक शास्त्र का मूल विद्यमान है।

महर्षि दयानन्द ने विविध मन्त्रों के उल्लेख द्वारा सिद्ध किया है कि विज्ञान की विविध विद्याओं से संबद्ध मन्त्र वेदों में प्राप्त होते हैं और इनके गहन अध्ययन के द्वारा शिल्प और विज्ञान की अनेक विद्याओं का रहस्य पता चलाया जा सकता है।

वेदार्थ प्रक्रिया और महर्षि दयानन्द-वेदार्थ प्रक्रिया में महर्षि दयानन्द का अनुपम योगदान है-नैरुक्तप्रक्रिया। निरुक्त प्रतिपादन, इस प्रक्रिया में वेदों के देवता आदि वाचक शब्द रूढ़ न होकर यौगिक हैं और वे यौगिक अर्थ के बोधक होने से तद्गुण विशिष्ट विभिन्न अर्थों का बोध कराते हैं। अतएव इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, सोम आदि शब्द परमात्मा, जीवात्मा, प्राणवायु आदि अनेक अर्थों का प्रसंगानुसार बोध कराते हैं।

पाश्चात्य विद्वानों की सबसे बड़ी भूल यह रही है कि इन विद्वानों ने इन शब्दों को रूढ़ मानते हुए एकार्थक माना है। और वे इन शब्दों का रहस्य समझने में असमर्थ रहे हैं। अतएव उनके लिए इन्द्र-वृत्र आदि शब्द केवल देव-असुर-संग्राम आदि तक ही सीमित रह गए हैं।

सायण आदि आचार्यों की भूल यह है कि उन्होंने वेदों का अर्थ करने में सभी मन्त्रों को देव-स्तुति-परक या यज्ञ-परक मानकर तदनुसार मन्त्रों की व्याख्या की है। उन्होंने उन मन्त्रों के आध्यात्मिक या वैज्ञानिक अर्थों की सर्वथा उपेक्षा की है। पाश्चात्य विद्वानों ने उनके अर्थों को आधार मानकर अपने अनुवाद आदि प्रस्तुत किए हैं। अतः वे वेदार्थ की रहस्यात्मकता और गम्भीरता से वंचित रह गए हैं।

वेदों में आध्यात्मिक और रहस्यात्मक व्याख्या प्रस्तुत करने वाले विद्वानों में विशेष उल्लेखनीय हैं-योगीराज अरविन्द घोष, पं. मधुसुदन औझा, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पं. रामदत्त शुक्ल एडवोकेट (लखनऊ), पं. मोतीलाल शास्त्री आदि।

वेदों का वैज्ञानिक दृष्टि से अनुशीलन करने वाले भी कतिपय विद्वान् हैं। उनमें विशेष उल्लेखनीय हैं-

Positive Sciences in the vedas के लेखक डॉ.डी.डी. मेहता, "The Vedic Gods, As Figures of Biology के लेखक प्रो. वी.जी. रेले, Founders of Science in Ancient India के लेखक डॉ. सत्यप्रकाश सरस्वती, Sciences in the Vedas के लेखक आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री।

वैदिक साहित्य संरक्षण-वैदिक साहित्य के संरक्षण में अनेक भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने श्लाघनीय प्रयत्न किए हैं। इनके प्रयत्न का ही फल है कि वैदिक वाङ्मय अभी तक सुरक्षित है और वैदिक ज्ञान का विश्वभर में प्रचार और प्रसार हुआ है। इन आचार्यों के लिए वैदिक शब्दों में यही श्रद्धाञ्जलि है कि-

इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः।
ऋग्वेद १०-१४-१५

इन आचार्यों की बहुत लम्बी सूची है। कुछ विशेष

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

उल्लेखनीय भारतीय आचार्य हैं-महर्षि दयानन्द, आचार्य सायण, आचार्य वैंकट माधव, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, डॉ. हरिदत्त शास्त्री, डॉ. मंगलदेव शास्त्री, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, डॉ. सूर्यकान्त, जयदेव विद्यालङ्कार, विश्वबन्धु शास्त्री, क्षेमकरण त्रिवेदी, पं. गिरधारी लाल शर्मा चतुर्वेदी, डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, डॉ. रघुवीर।

पाश्चात्य विद्वानों में विशेष उल्लेखनीय हैं-प्रो. मैक्समूलर, प्रो. ग्रिफिथ, प्रो. विल्सन, प्रो. ग्रासमान, प्रो. लुडविश, प्रो. औल्डैन बर्ग, प्रो. लांग्ल्वा, डॉ. मैक्डानल, डॉ. कीथ, प्रो. आर. रोठ, प्रो. बाटलिंक, प्रो. ब्लूमफील्ड, प्रो. लुई रैनु, प्रो. वाकरनागेल, प्रो. बेवर, प्रो. ह्विटनी, प्रो. कैलेन्ड, प्रो. ईग्लिंग, प्रो. स्टैन कोनी, प्रो. वाकरनागेल, प्रो. हिलब्राट, प्रो. जे. गोंड आदि।

वैदिक भाषा-वैदिक भाषा का महत्व है कि वैदिक मन्त्रों में बहुत थोड़े शब्दों में अगाध भाव-गाम्भीर्य भरा हुआ है। उदाहरणार्थ कुछ मन्त्र प्रस्तुत किए जा सकते हैं, जो भावगांभीर्य की चरमसीमा का दिग्दर्शन कराते हैं।

समस्त अध्यात्म का सार एक मन्त्र में प्रस्तुत किया गया है। इसमें ब्रह्म का स्वरूप, उसकी प्राप्ति का साधन, उसकी पात्रता आदि का वर्णन है।

हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद्,
होता वेदिषद् अतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद् वरसद् ऋतसद् व्योमसद्
अब्जा गौजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्।।

ऋग्.४-४०-५, यजु १०-२४

अथर्ववेद के एक मन्त्र में सूत्ररूप में मनोविज्ञान के सभी विषयों का संकलन प्राप्त होता है-

मनसे चेतसे धिय आकूतय उत चित्तये।
मत्यै श्रुताय चक्षसे विधेम हविषा वयम्।।

अथर्व. ६-४१-१

इस मन्त्र में इन शब्दों से इन विषयों का संकलन है-

१. मत्यै-संवेदना (Sensation) और प्रेरणा (Motivation),
२. चेतसे-चेतना (Consciousness) और चिन्तन (Thinking),
३. धिये-ध्यान या अवधान (Attention),
४. आकूतये-अनुमति (Feeling) और संवेग (Motion)
५. चित्तये-चित्त का धर्म स्मरण (Remembering) और तदभावरूप में विस्मरण (Forgetting),
६. मत्ये-बुद्धि (Intelligence),
७. श्रुताय-श्रवण, पठन एवं शिक्षण (Learning),
८. चक्षसे-चक्षुकार्य, दर्शन या प्रत्यक्षीकरण (Perception)

भगवतगीता का मूल आधार है-निष्काम कर्मयोग।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भू-मा ते सङ्गोऽत्वकर्मणि।। गीता २-४७

इस श्लोक का आधार है, यजुर्वेद का निम्नलिखित मन्त्र-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। युज. ४०-२

इस प्रकार सम्पूर्ण गीता का यह मूल मन्त्र है।

इसी प्रकार सम्पूण बाइबिल का मूल मन्त्र है-प्रेमभाव और मैत्री। यह भाव यजुर्वेद के निम्नलिखित मन्त्र से लिया गया है।

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।। यजु. ३६-१८

कुरान का मूलमन्त्र है-एकेश्वरवाद, अल्लाह की एकता, उसके गुण-धर्म, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, कर्ता, धर्ता, संहर्ता, दयालु आदि। (देखें-कुरान ७-१९५, १२-३९, १३-३३, ५७-१-६, ११२-१-४, २-२९, २-९६, ५७-१-६, ८७-१-५, ४४-६-८, ४८-१४, १-२, २-१४३ आदि)

इसके आधार मन्त्र हैं-(**क**) इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहु-रथो दिव्यः स सुपर्णो गुरुत्मान्। एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥ ऋग. १-१६४-४६ (**ख**) स एष एक एकवृद् एक एव। अथर्व. १३-४-१२ (**ग**) न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते। अथर्व १३-५-१६

वेद और विज्ञान-वेदों में जहाँ पुरुषार्थ चतुष्ट रूप धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का वर्णन है, वहाँ साथ ही विज्ञान के विभिन्न सूत्र स्थान-स्थान पर दिए गए हैं। वेदों में सूत्र रूप में वैज्ञानिक तत्त्वों का समावेश है। इनका विस्तृत और प्रयोगात्मक पक्ष कहीं पर भी स्पष्ट नहीं किया गया है। संक्षेप में कुछ सूत्रों का उल्लेख किया जाता है।

सूर्य, चन्द्रमा को प्रकाश देता है। सूर्य की सुषुम्ण नामक किरण चन्द्रमा को प्रकाशित करती है। निरुक्तकार यास्क ने भी इस तथ्य को स्पष्ट किया है कि सूर्य की एक किरण चन्द्रमा को प्रकाशित करती है।

सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः। यजु. १८-४०
अथापि अस्यैको रश्मिश्चन्द्रमसं प्रति दीप्यते। निरुक्त २-६

सूर्य की ऊर्जा का आधार सोम (Hydrogen, Hellium) हाईड्रोजन है।

सोमेनादित्या बलिनः। अथर्व १४-१-२

यजुर्वेद में जल के रस का रस सूर्य में बताया गया है। यह हाईड्रोजन के सूक्ष्मतम रूप हिलीयम (Hellium) की सत्ता सूर्य में बताता है।

अपां रसम् उद्वयसं सूर्ये सन्तं समाहितम्।
अपां रसस्य यो रसः।। यजु. ९-३

यजुर्वेद में इस वैज्ञानिक तथ्य का उल्लेख किया गया है कि पृथिवी ही अपने कक्ष में नहीं घूमती है, अपितु सूर्य भी

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अपने कक्ष में चक्कर काटता है। सारा संसार घूमता है।

समाववर्ति पृथिवी समुषाः समु सूर्यः।
समु विश्वमिदं जगत्।। यजु. २०-२३
सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च। अथर्व. १३-२-३५

अनेक मन्त्रों में सूर्य की आकर्षण शक्ति का उल्लेख है। सूर्य अपनी किरणों से पृथ्वी को रोके हुए है। सूर्य अपनी आकर्षण शक्ति से द्युलोक को रोके हुए है।

दाधर्थ पृथिवीम् अभितो मयूखैः। यजु. ५-१६
सविता यन्त्रैः पृथिवीम् अरम्णाम्। ऋग. १०-१४९-१
सूर्येण-उत्तभिता द्यौः। ऋग १०-८५-१

जल के विषय में कहा गया है कि इसमें अग्नि (Oxygen) और सोम (Hydrogen) दोनों तत्व मिले हुए हैं।

अग्नीषोमौ बिभ्रति-आप इत् ताः। अथर्व. ३-१३-५

जल मन्थन से अग्नि-विद्युत की उत्पत्ति का वर्णन यजुर्वेद में प्राप्त होता है।

त्वामग्ने पुष्करादधि-अथर्वा निरमन्थत। यजु. ११-३२

वनस्पति शास्त्र का एक महत्वपूर्ण मन्त्र अथर्ववेद में मिलता है कि अवि तत्व (जीवन रक्षक तत्व) (Chlorophyll) के द्वारा वृक्ष-वनस्पतियों में हरियाली होती है।

अविर्वै नाम देवता-ऋतेनास्ते परीवृता।
तस्या रूपेणेमे वृक्षा हरिता हरितस्रजः।।
अथर्व. १०-८-३१

वेदों में वैज्ञानिक व्याख्या के प्रवर्तकों में महाभाष्यकार महर्षि पतंजलि का नाम अग्रगण्य है। उन्होंने महाभाष्य के प्रथम आह्निक में 'चत्वारि शृङ्गा' (ऋग. ४-८५-३), चत्वारि वाक्. (ऋग. १-१६४-४५), सुदेवो असि वरुण. (ऋग् ०८-६९-१२) आदि मन्त्रों का भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से विवेचन प्रस्तुत करके मन्त्रों के वैज्ञानिक अर्थ की प्रक्रिया का दिशा निर्देशन किया है। ऋषि दयानन्द ने भी उसी पद्धति को अपनाते हुए अपने वेद-भाष्य में तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में नौ-विमानादि विधाओं का उल्लेख किया है।

महर्षि भारद्वाज ने अपने "यन्त्रसर्वस्व" ग्रन्थ के "वैमानिक प्रकरण" में विमानों के निर्माण एवं उनके विविध यन्त्रों का विस्तृत वर्णन मिलता है। यह ग्रन्थ सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ने "बृहद् विमानशास्त्र" नाम से छापा है। इस ग्रन्थ के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्राचीन भारत में विमान आदि के निर्माण से सम्बद्ध अनेक ग्रन्थ विद्यमान थे। इसमें उल्लेखनीय है कि-

नारायणः शौनकश्च गर्गो वाचस्पतिस्तथा।
चाक्रायणिर्घुण्डिनाथश्चेति शास्त्रकृतः स्वयम्।। ३४
विमानचन्द्रिका व्यौमयानतन्त्रस्तथैव च।
यन्त्रकल्पो यानबिन्दुः खैटयानप्रदीपिका।। ३५
व्यौमयानार्कप्रकाशश्चेति शास्त्राणि षट् क्रमात्।
नारायणादिमुनिभिः प्रोक्तानि ज्ञानवित्तमैः।। ३६। बृहद् विमानशास्त्र १, ३४-३६ वैज्ञानिक ग्रन्थों के लेखक ये ६ ऋषि हैं-नारायण, शौनक, गर्ग, वाचस्पति, चाक्रायणि और घुण्डिनाथ। इनके बनाए हुए ६ वैज्ञानिक ग्रन्थ क्रमशः ये हैं-विमानचन्द्रिका, व्यौमयानतन्त्र, यन्त्रकल्प, यानबिन्दु, खैटयान प्रदीपिका और व्यौमयानार्कप्रकाश।

विमान की व्याख्या से ज्ञात होता है कि ये विमान, पृथिवी, जल और अन्तरिक्ष तीनों में चल सकते थे और उनके द्वारा देश-देशान्तर, द्वीप-द्वीपान्तर और विभिन्न लोकों तक यात्रा की जा सकती थी।

पृथिव्यप्स्वन्तरिक्षेषु खगवद् वैगतः स्वयम्।
यः समर्थो भवेद् गन्तुं स विमान इति स्मृतः।। (नारायण)
देशाद् देशान्तरं तद्वद्, द्वीपाद् द्वीपान्तरं गन्तुमर्हति।
स विमान इति प्रोक्तः खैटशास्त्रविदां वरैः।। (विश्वंभर)

महर्षि भारद्वाज ने स्वीकार किया है कि यह विमान विद्या वेदों से प्राप्त की गयी है।

त्रयी हृदय-सन्दोह-साररूपं सुखप्रदम्।
अनायासाद् व्यौमयान-स्वरूप-ज्ञान-साधनम्।
वैमानिकप्रकरणं कथ्यतेऽस्मिन्यथाविधि।। बृहद्विमानशास्त्र

अश्विनी कुमार के रथ का वर्णन करते हुए कहा गया है कि यह रथ, पृथ्वी और आकाश दोनों में चल सकता है। इसका वेग, मन की गति से भी तीव्र था।

रथो ह वाम्.......परि द्यावापृथिवी याति सद्यः।
ऋग. ३-५८-८
यस्ते रथो मनसो जवीयान्। ऋग. १०-११२-२

विमान में तीन पहिए होते थे। यह त्रिकोण आकार का होता था। इसमें तीन सीट होती थीं।

त्रिबन्धुरेण त्रिवृता रथैन त्रिचक्रेण सुवृता यातमर्वाक्।
ऋग. १-११८-२

विशाल समुद्री पोतों का भी उल्लेख मिलता है। इनमें सैकड़ों पतवार होती थीं।

दैवीं नावं स्वरित्राम् अनागसम्,
अस्रवन्तीम् आ रुहेम स्वस्तये।
शतारित्रां.........पारयिष्णुम्।। तैत्तिरीय संहिता १-५-११-६

समुद्र के अन्दर चलने वाले पोतों का भी उल्लेख मिलता है-

यास्ते पूषन् नावो अन्तः समुद्रे,
हिरण्ययीरन्तरिक्षे चरन्ति । ऋग. ६-५८-३

आयुर्वेद विषयक सामग्री का विपुल भण्डार वेदों में प्राप्त होता है। इसका विस्तृत विवेचन मैंने The Essence of the Vedas में प्रस्तुत किया है। इसमें अग्नि-चिकित्सा, जल-चिकित्सा, मृत्-चिकित्सा, सूर्यकिरण-चिकित्सा, यज्ञ-चिकित्सा, विष-चिकित्सा, मानस-चिकित्सा आदि का वेदोक्त विधि से वर्णन किया है।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पर्यावरण प्रदूषण आज विश्व की ज्वलन्त समस्या है। इसके लिए वेदों में कतिपय उपाय सुझाए गए हैं। वे हैं-

१. वृक्ष-वनस्पतियों की सुरक्षा **२.** वृक्षादि को न काटना **३.** सौर ऊर्जा का उपयोग **४.** रेडियो-तरंगों के उपयोग से वायु मण्डल शुद्धि **५.** यज्ञों का प्रचार **६.** प्राकृतिक संतुलन बनाए रखना।

वेदों में पर्यावरण की रक्षा के लिए वायु, जल और औषधियों के संरक्षण का निर्देश दिया गया है।

त्रीणि छन्दांसि कवयो वि येतिरे, पुरुरूपं दर्शतं विश्वचक्षणम।
आपो वाता ओषधयस्तान्येकस्मिन् भुवन आर्पितानि।

अथर्व. १८-१-१७

वृक्षों को न काटो। जल और पृथ्वी की रक्षा करो। पृथ्वी से उतना ही भाग निकालो जिसकी क्षतिपूर्ति की जा सके।

मा काकम्बीरम् उद्वृहो वनस्पतिम् अशस्तीर्वि हि नीनशः। ऋग्. ६-४८-१७

मा आपो, मा औषधीर्हिंसी। यजु. ६-२२

द्यां मा लेखीरन्तरिक्षं मा हिंसीः। यजु. ५-४३

पृथ्वीं दृंह, पृथिवीं मा हिंसीः। मैत्रायणी स. २-८-१४

यत्ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु।
मा ते मर्म विमृग्वरि, मा ते हृदयमर्पिपम्।।

अथर्व. १२-१-३५

यहाँ यह उल्लेख करना उपयुक्त होगा कि यजुर्वेद (अध्याय १६, रुद्राध्याय) वनस्पतियों को रुद्र या शिव का रूप माना गया है। रुद्र की वृक्षों और वनस्पतियों के स्वामी के रूप में स्तुति की गयी है।

नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः, वनानां पतये नमः,
वृक्षाणां पतये नमः, औषधीनां पतये नमः,
कक्षाणां पतये नमः, अरण्यानां पतये नमः।।

यजु. अ. १६ मन्त्र १७ से २०

वृक्ष-वनस्पति रुद्र के रूप में इस प्रकार हैं कि वे कार्बन डाईऑक्साइड (Carbon Dioxide) रूपी विष को पीते हैं और ऑक्सीजन (Oxygen) अर्थात् प्राणवायु रूपी अमृत को निकालते हैं। शिव के विषपान और अमृतदान का एक रूप यह भी है। अतएव वृक्षों को शिव का मूर्त रूप समझना चाहिए और वृक्ष-वनस्पतियों के संरक्षण को शिवोपासना का एक प्रकार मानना चाहिए।

वृक्ष-वनस्पतियों की संख्या अनन्त है, अतएव यजुर्वेद में रुद्रों की संख्या भी अनन्त कही गयी है।

असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा भूम्याम्।। यजु. १६-५४

ऋग्वेद और अथर्ववेद में महान उल्ब शब्द के द्वारा विशाल ओजोन-परत Ozone Layer का संकेत है। गर्भ के ऊपर झिल्ली या जैर को उल्ब कहते हैं। यह गर्भस्थ बालक का संरक्षण करती है, इसी प्रकार यह महान उल्ब (ओजोन की परत) संसार की रक्षा करती है। अथर्ववेद में इस का रंग सुनहरी (हिरण्यरूप) माना गया है। ऋग्वेद में इसे व्यापक और मोटी परत कहा गया है कि इसके द्वारा जलीय वातावरण का निमन्त्रण होता है।

महत् तदुल्बं स्थविरं तदासीद्,येनाविष्ठितः प्रविवेशिथापः।।

ऋग्. १०-५१-१

आपो वत्सं जनयन्तीर्गर्भमग्रे समैरयन्।
तस्योत जायमानस्योल्ब आसीद् हिरण्ययः।। अथर्व. ४-२-८

आधुनिक विज्ञान के अनुसार यह ओजोन की परत भूतल से १५ से ३० किलोमीटर ऊँचाई पर है। यह सूर्य की अल्ट्रा वॉयलेट किरणों को आत्मसात् कर लेती है, जो कि वृक्ष-वनस्पतियों के अत्यन्त घातक हैं। ओजोन जल और वायु को शुद्ध करता है।

आधुनिक समय में वैदिक मैथमैटिक्स के पुनरुद्धारक पुरी के भूतपूर्व शंकराचार्य स्व. श्री स्वामी भारती कृष्णतीर्थ जी थे। उन्होंने वैदिक मैथमैटिक्स १६ सूत्रों पर १६ ग्रन्थ लिखे थे, जिनमें से सम्प्रति केवल एक ग्रन्थ उपलब्ध है। इसमें उन्होंने अथर्वपरिशिस्ट के १६ सूत्र और १३ उपसूत्र दिए हैं। उनकी मान्यता है कि ये सूत्र अथर्ववेद के परिशिष्ट ग्रन्थ ''अथर्वपरिशिष्ट'' से लिए गए हैं और इनसे गणित के गूढ़ एवं कठिन प्रश्नों को अत्यन्त सरल ढंग से कम्प्यूटर की तरह कुछ ही क्षणों में हल किया जा सकता है। उनका कथन है कि-

"We were agreeably astonished and intensely gratified to find that exceedingly tough mathematical problems can be easily and readily solved with the help of these ultra-easy Vedic Sutras (Mathematical aphorisms) contained in the Parisista of Atharavveda." - Vedic Mathematics, Indroduction, P.*15

अभी तक उपलब्ध किसी भी अथर्वपरिशिष्ट में ये सूत्र उपलब्ध नहीं हैं। ग्रन्थ के सम्पादक डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल का मत है कि संभव है यह अथर्वपरिशिष्ट ग्रन्थ स्वयं श्री भारती कृष्ण तीर्थ की बौद्धिक देन हो।

इन १६ सूत्रों से कतिपय सूत्रों का आधार अथर्ववेद में प्राप्य है। कुछ मन्त्रों में इन सूत्रों के आधारभूत शब्दों या सिद्धान्त भी उपलब्ध हैं। जैसे-ये सूत्र हैं-

एकाधिकेन पूर्वेण (सूत्र-१) अर्थात् पूर्ववर्त्ती संख्या में एक जोड़ दें।

यस्मिन् एकं युज्यते यस्मिन् एकम्। अथर्व. ८-९-३, अर्थात् एक जोड़ दें।

ऊर्ध्वतिर्यग्भ्याम् (सूत्र ३) अर्थात् ऊपर और तिरछे गुणा आदि करो।

ब्रह्मेदमूर्ध्वं तिर्यक् च। अथर्व. १०-२-२५

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

इस मन्त्र में ऊपर और तिरछे कार्य करने का संकेत है। इन सूत्रों के द्वारा गुणा, भाग, वर्ग, घन, घनमूल समीकरण आदि के सभी प्रश्न अत्यन्त सरल विधि से हल कर दिए जाते हैं।

श्री भारती कृष्णतीर्थ अथर्ववेद के उपवेद स्थापत्यवेद के अन्तर्गत गणित, इंजीनियरिंग आदि विद्याओं को लेते हैं। इस समय विदेशों में भी वैदिक मैथमैटिक्स विषय को मान्यता प्राप्त हो रही है और इस विषय पर पर्याप्त शोधकार्य हो रहा है। इस प्रकार अन्य बहुत सी विद्याओं का मूल वेदों में प्राप्त हो सकता है।

मैंने यूरोप और अमेरिका आदि की यात्राओं में यह अनुभव किया कि आज भी वहाँ वेदों के प्रति गहरी आस्था है और ये वेदों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आतुर हैं। उनकी आकांक्षा की पूर्ति करना हमारा कर्त्तव्य है।

अतः वैदिक विज्ञान की सुरक्षा के लिए तथा उसकी अन्वेषणा के लिए सभी भारतीय वैदिक विद्वानों को प्रयत्नशील होना चाहिए। इस दिशा में किया गया प्रत्येक शुभ कार्य विश्वकल्याण और विश्वबन्धुत्व के लिए सहायक सिद्ध होगा।

वेदों का प्रचार-प्रसार ही विश्व में स्थायी शान्ति की स्थापना कर सकता है। वेदों के प्रचार-प्रसार के द्वारा ही हम देश और विदेशों में **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** का सन्देश पहुँचा सकते हैं।

-भूतपूर्व कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर, हरिद्वार।

न्याय-दर्शन का अध्यापन

महर्षि गौतम प्रणीत **न्याय-दर्शन** और उस पर लिखा **वात्स्यायन-भाष्य** प्रमाण व अर्थतत्त्व को समझने की प्रक्रियाओं का सर्वाङ्गपूर्ण विवरण प्रस्तुत करता है। सभी वैदिक-अवैदिक दर्शनों को अपने मान्य सिद्धान्त प्रस्तुत करते समय इस पद्धति का प्रयोग करना अपेक्षित होता है। न्याय-दर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय 'प्रमाण' है। 'प्रमाण' को ठीक प्रकार जानने से ही तत्त्वनिश्चय ठीक हो पाता है, तभी मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त हो पाता है। प्रमाण ज्ञान से चिंतन-विचार की प्रक्रिया ठीक हो पाती है, नहीं तो अनजाने में मिथ्या सिद्धान्त गले पड़ जाते हैं। न्याय-दर्शन के अध्ययन से किसी भी बात की परीक्षा-समीक्षा की सामर्थ्य बढ़ती है और उचित-अनुचित का निर्णय सरलता-शीघ्रता-शुद्धता से हो पाता है। इस प्रकार यह शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति में अत्यन्त सहायक होता है।

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़, गुजरात में **आचार्य सत्यजित् जी** (ऋषि उद्यान, अजमेर) द्वारा कृष्ण जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्णपक्ष अष्टमी २०७०, २८ अगस्त २०१३) से इसका विधिवत् नियमित संपूर्ण अध्यापन कराया जायेगा। यह दर्शन १०-११ महीनों में जून-जुलाई २०१४ तक पूर्ण होगा। इस बीच प्रत्येक अध्याय की लिखित परीक्षा भी ली जायेगी। कुल ५ परीक्षाएँ होंगी। इनमें ७५ प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों को **'न्यायाचार्य'**, ६१ से ७५ प्रतिशत तक अङ्क वालों को **'न्याय-विशारद'** व ५१ से ६० प्रतिशत तक अङ्क वालों को **'न्याय-प्राज्ञ'** की उपाधि दी जायेगी। इस कक्षा में संस्कृत से परिचित साधक प्रकृति के ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थी, संन्यासी पुरुष व महिलाएँ भाग ले सकते हैं। इसमें बुद्धिमान्, स्वस्थ, अपने कार्यों को स्वयं करने में समर्थ, सेवाभावी, अनुशासन में रह सकने वाले अधिकतम २० पूर्णकालिक व्यक्तियों का स्थान है।

इस काल में समय-समय पर स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक का उपदेश-आशीर्वाद व सान्निध्य भी प्राप्त होता रहेगा। बीच-बीच में विभिन्न विद्वानों द्वारा अन्य विविध विषयों पर भी कक्षा एवं उपदेश होते रहेंगे। ब्रह्मचारियों संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास व भोजन व्यवस्था निःशुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार सहयोग कर सकते हैं। माताओं-बहनों के लिए निवास की पृथक् व्यवस्था रहेगी। **सम्पर्क**-९४१४००६९६१ (आचार्य सत्यजित्) **रात्रि ८.०० से ८.३०। पता**-वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, पत्रालय-सागपुर, जिला-साबरकांठा, गुजरात-३८३३०७, ईमेल-vaanaprastharojad@gmail.com, styajita@yahoo.com

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

मानव दुःख क्यों पाता है?

-रामगोपाल सिंह

मानव सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी है, परन्तु यह देखा जाता है कि मानव ही अन्य सभी प्राणियों की अपेक्षा दुःख को अधिक व्यक्त कर सकता है। मानव जितना बीमार पड़ता है, जितना मानसिक परेशानियों में उलझा हुआ है, उतना अन्य कोई भी प्राणी शारीरिक या मानसिक रूप से दुःखी नहीं है।

मेरे अपने अनुभव से पूरी सृष्टि का एक निश्चित नियम है। प्रत्येक जीवधारी के खान-पान एवं रहन-सहन का एक अटल नियम है और उसका चलाने वाला कोई चेतन सत्ता है। यदि ऐसा नहीं होता तो आज करोड़ों वर्षों से अपने सौर-मण्डल का केवल एक ही सूर्य है, एक ही चन्द्रमा है। क्यों नहीं दो चन्द्रमा या दो सूर्य हो जाते हैं। जब कोई भी जीवधारी उस प्राकृतिक नियम या ईश्वरीय व्यवस्था के विरुद्ध काम करता है तो वह दण्ड का भागी बनता है। मानव अन्य जीवधारियों की तुलना में प्राकृतिक नियमों का अधिक उल्लंघन करता है। प्रकृति ने मानव को मूल रूप में शाकाहारी बनाया है क्योंकि उसकी संरचना शाकाहारी जीवों से मिलती-जुलती है। चौबीस घण्टे में दो-बार भोजन करने का नियम है। इसी प्रकार यौन-सम्बन्ध स्थापित करने का भी कुछ निश्चित नियम है, परन्तु आधुनिक युग में इन नियमों को बेकार का प्रतिबन्ध कहकर टाल दिया जाता है। आजकल के वैज्ञानिक एवं शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकों में भी मानव को सर्वाहारी कहा गया है। कुल मिलाकर कहने का आशय यह है कि आज का मानव स्वच्छन्द रूप से जीवन जी रहा है। जिसका दुष्परिणाम वह भोग रहा है।

हमारे प्राचीन मनीषियों ने मानव को सुख पूर्वक जीने के लिए कुछ निश्चित नियम खोज निकाले हैं जैसे-"सोलह संस्कार" इन संस्कारों के द्वारा हमें जन्म से मृत्यु तक जीने की कला का दिग-दर्शन कराया जाता है। जैसे बालक के जन्म के बाद एक संस्कार है "जातकर्म संस्कार" इसमें अन्य अनेक क्रियाएँ करने के बाद बालक का पिता बालक के दक्षिण कर्ण में कहता है-"वेदोऽसीति" अर्थात् तुम्हारा गुप्त नाम वेद है। अब आप इस वाक्य की व्याख्या कीजिए, तो यह बात स्पष्ट रूप से सामने आती है कि "हे बालक! तुमको वैदिक रीति के अनुसार जीवन यापन करना चाहिए, तभी तुम सुखपूर्वक जी पाओगे।

आज के युग में पहले तो संस्कार होते ही नहीं, यदि होते भी हैं तो पौराणिक विधि से, जो संस्कारों के विकृत रूप का निरूपण करता है।

मानव दुःखी होने पर ईश्वर को दोषी ठहराता है, बकि गायत्री मन्त्र में ईश्वर को प्राणों से भी प्रिय, सभी प्रकार के दुःखों को दूर करने वाला तथा सुखस्वरूप कहा गया है। अब आप यह बताएँ कि जो परमात्मा इस प्रकार का है, वह किसी को जान-बूझकर दुःख क्यों देगा? हम अपने दुःखों का कारण स्वयं हैं। हमने ही किसी प्राकृतिक या ईश्वरीय नियम को तोड़ा होगा, तो ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार दुःख के भागीदार बन रहे हैं। परमात्मा ने तो हमें सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाकर इस भूमण्डल पर सुख भोगने के लिए भेजा है। **-ग्राम-पत्रालय-झाँगा, कुशीनगर, उ.प्र. चलभाष-८८७४८९५६८३**

ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

२४ नवम्बर से १ दिसम्बर, २०१३, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर। अधिकतम संख्या-५०। मात्र पूर्व पञ्जीकृत प्रतिभागियों के लिए। इसमें विद्वद् गोष्ठी द्वारा निर्धारित आर्यसमाज की ध्यान पद्धति का प्रशिक्षण दिया जायेगा व ध्यान करवाने का अभ्यास भी करवाया जायेगा। लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षा के बाद योग्य व्यक्तियों को परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षक-प्रमाण पत्र भी दिये जायेंगे। शिविर शुल्क १००० रु. है। २४ नवम्बर सायं ४ बजे तक पहुँचना अनिवार्य है। विलम्ब से आने वालों की शिविर में सहभागिता नहीं हो पायेगी। शिविर का समापन १ दिसम्बर को सायं ५ बजे तक हो जायेगा। इच्छुक व्यक्ति, कृपया सम्पर्क करें-९४१४००३७५६, समय-मध्याह्न १.३० से २.३०।

पता-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राज. ३०५००१। ईमेल-psabhaa@gmail.com

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

डॉ. सुरेन्द्रकुमार (संक्षिप्त-परिचय)

परोपकारिणी सभा के सदस्य–वैदिक विद्वान् और शिक्षाविद् डॉ. सुरेन्द्र कुमार (मनुस्मृति भाष्यकार) को देश की प्रसिद्ध शिक्षा संस्था **गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय**, हरिद्वार का कुलपति नियुक्त किया गया है। डॉ. सुरेन्द्र कुमार प्रसिद्ध लेखक, शोधकर्त्ता और आर्यजगत् के प्रसिद्ध प्रवक्ता हैं। हरियाणा सरकार के कॉलेज कैडर में छत्तीस वर्ष तक सेवा करके वे राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गुड़गाँव, सैक्टर-९ के प्राचार्य के पद से सेवानिवृत्त हुए। उनके द्वारा लिखित-सम्पादित २२ पुस्तकें हैं जिनमें ६ पुस्तकें महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं। मनुस्मृति पर किया गया उनका शोधकार्य और भाष्य आज देश-विदेश में सर्वाधिक पढ़ा जाता है। उनकी कई पुस्तकों के इंग्लिश, गुजराती, मराठी, उड़िया आदि भाषाओं में भी अनुवाद हो चुके हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनके दो सौ से अधिक शोधपत्र एवं अन्य रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। गुरुकुल झज्जर से प्रकाशित **'सुधारक'** नामक पत्रिका का सम्पादन वे गत दस वर्ष से कर रहे हैं। बारह वर्ष तक वे कॉलेज की पत्रिका के सम्पादक रहे।

आकाशवाणी दिल्ली और रोहतक से उनके आधा दर्जन वक्तव्य प्रसारित हुए हैं। राष्ट्रीय दूरदर्शन, आस्था भजन, साधना, सुदर्शन आदि टी.वी. चैनलों पर भी एक सौ से अधिक वक्तव्य प्रसारित हुए हैं, जो अब भी जारी हैं। विश्वविद्यालयों तथा शोधसंस्थाओं द्वारा आयोजित शोध-गोष्ठियों में ३० से अधिक शोधपत्रों का वाचन किया है तथा भारत में आयोजित आर्यसमाज के अनेक अन्ताराष्ट्रीय और राष्ट्रीय महासम्मेलनों में संयोजन कार्य किया एवं वक्तव्य प्रस्तुत किये हैं। डॉ. सुरेन्द्र कुमार का जन्म मकड़ौली कलाँ, जिला रोहतक (हरियाणा) में हुआ। उन्होंने महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर से 'आचार्य' एवं 'वेदवाचस्पति' परीक्षा उत्तीर्ण की; गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार से 'एम.ए. हिन्दी' उत्तीर्ण की तथा विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ से 'एम.ए. संस्कृत' सर्वाधिक अंकों में उत्तीर्ण कर वहीं से पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की। इनको देश-विदेश की संस्थाओं से अब तक एक दर्जन से अधिक सम्मान/पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। डॉ. सुरेन्द्र कुमार का आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वानों में विशेष स्थान है तथा वे आर्यजगत् की एक दर्जन से अधिक संस्थाओं के दायित्वपूर्ण पदों से जुड़े हुए हैं।

परोपकारिणी सभा डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ व्यक्त करती है।

श्री विजयसिंह भाटी (संक्षिप्त परिचय)

परोपकारिणी सभा के सदस्य–श्री विजयसिंह भाटी का जन्म २२ अक्टूबर १९३९ को हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा उम्मेद हाई स्कूल से हुई वहीं से १९५५ में मैट्रिक पास की। आपके पिता श्री ने सन् १९४७ से बन्दूक बनाने का कारखाना प्रारम्भ किया। आप भी उसी कार्य का पूर्ण आत्मीयता से निर्वहन कर रहे हैं। आपका कारखाना भारत में प्रसिद्ध है। आर्यवीर दल की शाखाओं में भाग लेते रहे। स्वामी आनन्द बोध जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के आग्रह पर महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास के कार्यकर्ता प्रधान का कार्य सम्भालते आ रहे हैं। आर्यसमाज रातानाड़ा, जोधपुर के प्रधान पद पर भी रहे।

विशेषताएँ–**१.** स्कूल, कॉलेज में खेलकूद में रुचि रही। **२.** १९५८ में जसवन्त कॉलेज बॉस्केट बॉल टीम के कप्तान। **३.** १९६० में जबलपुर में राष्ट्रीय मुक्केबाजी प्रतियोगिता में राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया।

स्वामी तत्त्वबोध जी के देहावसान के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान पद पर कार्यरत रहे। वर्ष २०१३ में आप ईशकृपा से निर्विरोध आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान चुने गये।

परोपकारिणी सभा श्री विजयसिंह जी भाटी को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ व्यक्त करती है।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

धर्म का यथार्थ स्वरूप

-शिवकरण दूबे 'वेदराही'

हर पदार्थ का निज स्वरूप एवं निश्चित धर्म होता है जिसमें उस तत्व या पदार्थ का अस्तित्व एवं सत्ता टिकी होती है। अग्नि का धर्म ज्वलनशीलता है। यदि अग्नि में यह ऊष्णता न हो तो वह आग नहीं राख हो जाएगी। इसी प्रकार मनुष्यमात्र का भी धर्म है, जिसे मानव धर्म कह सकते हैं। मानव धर्म का सामान्य अर्थ है-मनुष्य के वे गुण, कर्त्तव्य, विशेषताएँ जिससे उसकी शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास, प्रगति, कल्याण एवं उत्थान हो। '**यतो अभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः**- महर्षि कणाद ऋषि के वैशेषिक दर्शन के वचन (१/१/२) से यही अर्थ ध्वनित् होता है जिसका अभिप्राय है-जिससे मनुष्य का लौकिक एवं आध्यात्मिक उन्नति हो, वह धर्म है। वस्तुतः धर्म मानव मात्र के द्वारा धारण करने वाले वे ज्ञानमय कर्त्तव्य, आचरण, नैतिक मूल्य एवं विधि सम्मत मर्यादाएँ हैं, जो मानव के सर्वांगीण विकास में सहायक हैं।

इस सृष्टि में मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जो अन्य भोग योनियों से श्रेष्ठ ज्ञानपूर्वक जीवन-यापन करने मे समर्थ है। महर्षि वेदव्यास कहते हैं "**गुह्यं ब्रहम तद् इदं ब्रवीमि नहि मनुष्यात् श्रेष्ठतरं हि कश्चित्**" अर्थात् तुम्हें मैं एक रहस्यमय बात बताता हूँ कि मनुष्य से श्रेष्ठ इस सृष्टि में कुछ भी नहीं है। मनुष्य की श्रेष्ठता का आधार यह है कि उसके विकास एवं उत्थान की जितनी संभावनाएँ है, वह अन्य प्राणियों को सुलभ नहीं है। वह अपने नैमित्तिक ज्ञान के कारण सदैव ज्ञान अर्जित करते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। शास्त्रकार कहते हैं "**आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्। धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।** यह मानव जीवन दुर्लभ है। बड़े भाग मानुष तन पावा की उक्ति इसी तथ्य की ओर इंगित करती है। इस सृष्टि के रचयिता ने इस महान् मानव जीवन के विकास एवं उत्थान के लिए ही उसे इतना विकसित मस्तिष्क दिया है, जिसमें ज्ञान अर्जन की असीम संभावनाएँ हैं। इसीलिए मोक्ष प्राप्ति के अधिकारी मानव के कल्याणार्थ परमात्मा ने उसे सर्वज्ञानमय वेद का आलोक प्रदान किया है, जिसमें सम्पूर्ण जीवन के विकास धर्म का प्रतिपादन है। महर्षि मनु ने सृष्टि उत्पत्ति के साथ धर्म की उत्पत्ति का मूल कारण बताते हुए कहा है कि "**सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक्। वेदशब्देभ्य एवाऽऽदौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे**"(मानव धर्मशास्त्र अध्याय-प्रथम, श्लोक २१) अर्थात् परमात्मा ने सब पदार्थों के नाम और मनुष्य के लिए समस्त कर्मों का विधान वेद में किया। इस प्रकार धर्म मानव के लिए विहित एवं करणीय कर्मों का शाश्वत विधान है। वेद को अखिल धर्म का कोष बताते हुए मानव धर्मशास्त्र में परिभाषित करते हुए लिखा गया है कि **वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्। आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च** अर्थात् वेद और उन वेदों के पारंगत विद्वानों के द्वारा रचे गए शास्त्र अर्थात् वेदानुकूल ग्रन्थ, साधु पुरुषों का आचरण और ऐसे ही महात्माओं के आत्मा के अन्तःकरण के अनुकूल सत्य धर्म के मूल कहे गए हैं। चारों वेदों में मानव के ज्ञान, कर्म, उपासना एवं विज्ञान के लिए विधि-निषेध पूर्वक उपदेश दिए गए हैं। वेदों में सभी सत्य विद्याएँ हैं। वेदों से ही सभी शास्त्रों का उद्भव हुआ है। वेदों का अध्ययन करके ऋषियों ने स्मृतियों, आरण्यक, उपनिषद, धर्मशास्त्र, दर्शन, शिक्षा, कल्प, योगशास्त्र, आयुर्वेद आदि ज्ञान के ग्रन्थों की रचना की। इसीलिए तो **निःसृतं सर्वशास्त्रं तु वेदशास्त्रं सनातनात्, सर्वज्ञानमयो हि सः,** तथा **वेदः चक्षुः सनातनम्** आदि शास्त्र वाक्यों के प्रमाण हैं। वेद में जिन कर्मों की प्रेरणा की गई है, वही विधेय कर्म-धर्म कहलाते हैं। जिन कर्मों के त्याग का वेद में उपदेश है वही निषेध है और उनका आचरण अधर्म है। जो वेद के अनुकूल है वह धर्म और जो वेद के प्रतिकूल है वह अधर्म है। वेद सब सत्य विद्याओं के आधार हैं। अतः गोस्वामी तुलसी दास ने रामराज्य का दिग्दर्शन कराते हुए लिखा है कि '**वर्णाश्रम निज-निज धरम निरत वेद पथ लोग। चलहिं सदा पावहि सुखहि नहि भय शोक न रोग** अर्थात् रामराज्य में जनमानस वेदानुकूल आचरण करती थी। मर्यादा पुरुषोत्तम राम को वाल्मीकि ने '**वेदवेदांगतत्वज्ञः**' तथा **रामो हि विग्रहवान् धर्मः** कहकर अभ्यर्थना की है। मर्यादापुरुषोत्तम राम धर्म के मूर्तिमान स्वरूप थे। इसीलिए तो राम का चरित्र धर्मप्राण, जनमानस में आचरण का प्रतिमान बना हुआ है।

धर्म के यथार्थ स्वरूप को न जानकर अनेक लोग धर्म के नाम से नाक-भौं सिकोड़ते हैं तथा अज्ञान के कारण धर्म के नाम पर स्वार्थवश फैलाए गए पाखण्ड, अनाचार, ढोंग, अंधविश्वास को धर्म मानकर अन्ततः धर्म से घृणा करते हैं। कुछ पाश्चात्य विचारकों ने धर्म को अफीम की गोली एवं नशे की संज्ञा देते हुए धर्म की इसलिए निन्दा की कि उन्हें सच्चे धर्म का बोध नहीं था और वे वेदविरुद्ध स्वार्थी लोगों द्वारा प्रचारित पंथो, मजहबों को ही धर्म मानते थे। इतिहास साक्षी है अनेक मत-पंथों के अनुयायियों ने धर्म के नाम पर अनेक बार रक्त-पात एवं नाना गर्हित कर्मों को अंजाम दिया। किसी शायर ने क्या खूब कहा है-**खुदा के बंदों को देखकर खुदा से मुन्किर हुई है दुनिया। कि ऐसे बंदे हैं जिस खुदा के वो खुदा कोई अच्छा खुदा**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

नहीं है। वेद प्रतिपादित वैदिक-धर्म सार्वभौम एवं सर्वजन कल्याणकारी है, जो विश्वमानव द्वारा आचरणीय एवं सबके कल्याण में समर्थ है। शाश्वत ज्ञान विधान के कारण उसे ''सनातन-धर्म'' कहते हैं कि जिसमें मानव मात्र के लिए उन्नति एवं विकास के सभी कल्याणकारी उपदेश निहित हैं। वस्तुतः सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को धर्म की संज्ञा दी गई है। मानव धर्मशास्त्र में धर्म के लक्षणों को प्रतिपादित करते हुए इन्हीं मूल्यों को प्रतिपादित किया गया है। ''**धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।** अर्थात् धैर्य, क्षमा, मन का निग्रह, चोरी का परित्याग, शरीर की शुद्धि, मन एवं आत्मा की पवित्रता, इन्द्रियों का संयम, विद्या, सत्य, अक्रोध धर्म के लक्षण हैं। उपर्युक्त लक्षणों वाले धर्म की परिभाषा से सिद्ध होता है कि धर्म श्रेष्ठ मानव मूल्यों, उत्तम कर्त्तव्यों की समष्टि का नाम है, जिससे मनुष्य की वैयक्तिक, सामाजिक एवं आत्मिक उन्नति होती है। धर्म शब्द व्यापक अर्थों का वाचक है। जब हम कहते हैं-माता, पिता, भाई, पुत्र, गुरु, विद्यार्थी, शिक्षक, राजा, नागरिक का धर्म तो कर्त्तव्यपरक आचरण कहलाता है। जब हम कहते हैं-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, दया, परहित चिन्तन, शिष्टाचार, ब्रह्मचर्य धर्म है तो यह सदाचार संज्ञक हो जाता है। जब कहा जाता है कि अपराधी को दण्ड दो, तो धर्म न्यायपरक हो जाता है। जब कहा जाता है शौच, संतोष, जप, तप, ईश्वर-भक्ति धर्म है, तो धर्म अध्यात्मपरक हो जाता है। जब हम कहते हैं कि स्वाध्याय, योग, यज्ञ, प्रार्थना करना धर्म है, तो धर्म साधनापरक हो जाता है। वस्तुतः मानव मात्र के शारीरिक, मानसिक, आत्मिक प्रगति के जो उत्तम विधि-विधान एवं आदेश, उपदेश एवं कर्त्तव्य हैं वे सब धर्म के अन्तर्गत आते हैं। धर्म वह आचरणपरक जीवन शैली का आधार है, जिसके धारण करने वाले को सम्यक् ज्ञान, दर्शन, व्यवहार एवं संयम सिखा देता है। परहित चिन्तन एवं लोक कल्याण धर्म की भावना है। महान पुरुषों के उत्तम आचरण धर्म है। धर्म न रंगीन कपड़ों में मिलता, न माथे पर लगे विभिन्न रंग के छापा तिलक में है, अपितु धर्म तो महापुरुष, सज्जन धर्मात्माओं के सुन्दर चरित्र में परिलक्षित होता है। धर्म मानवता की धूरी है, प्राण है, जीवन संजीवनी है, जिसके बिना मनुष्य में मनुष्यता नहीं आती। धर्महीन व्यक्ति तो पशुतुल्य है। भर्तृहरि कहते हैं '**येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः। ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।** इस प्रकार धर्म जीवन-निर्माण की साधना है। मनुष्य कर्मशील प्राणी है। उसे जीवन में ज्ञान, धन, भोग एवं दुखों से मुक्ति प्राप्त करनी है। अतः भारतीय संस्कृति के सभी ग्रन्थों में सर्वत्र धर्म की शिक्षा व ज्ञान अनुस्यूत है। वेद तो विश्वमानव के लिए धर्म के साक्षात् प्रमाण हैं। वेद अनुमोदित सभी आर्ष ग्रन्थ यथा दर्शन, उपनिषदें, गीता, रामायण आदि सार्वभौम सत्यकर्मों की शिक्षा देते हैं। वस्तुतः धर्म की सम्पूर्ण व्यवस्था सत्य पर आधारित है। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के नियम में कहा है कि ''वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है।'' ''सब काम **धर्मानुसार** अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करना चाहिए।'' महर्षि ने सत्य और धर्म दोनों को एक ही माना है। शास्त्रकारों ने भी धर्म को सत्य पर आधारित बताते हुए कहा है कि **नहि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्** अर्थात् सत्य से पृथक् कोई धर्म नहीं तथा झूठ के समान पाप नहीं। अतः धर्म के सार्वभौम स्वरूप को जानने के लिए हमें वेद की शरण में जाना होगा क्योंकि **धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः** अर्थात् धर्म के ज़िज्ञासुओं के लिए वेद परम प्रमाण हैं।

-क्वार्टर नं. ६-बी-४९३, शक्तिनगर, सोनभद्र, उत्तरप्रदेश, चलभाष-९४५३००७९७५

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या - 091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

संस्था-समाचार

-१ से १५ जुलाई २०१३

१. उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों को सहायता-(गतांक से आगे....)-राहत दल २ जुलाई को गुप्तकाशी पहुँचा। यह ऊखीमठ ग्राम पंचायत के अन्तर्गत हाइवे क्रमांक १०९ में स्थित एक बड़ा कस्बा है। गुप्तकाशी में छोटे दलों में बंटकर विभिन्न दिशाओं में जाकर स्थिति को जानने की कोशिश की गई। तथ्य इस प्रकार सामने आए कि यह क्षेत्र केदारनाथ के तीर्थयात्रियों पर निर्भर है। कोई यात्रियों को खच्चर की सेवा देता है तो कोई छोटी-मोटी दुकार कर धनोपार्जन कर आजीविका चलाता है। आपदा के समय यात्रा अपने चरम में भी अतः इस इलाके के अधिकांश व्यक्ति केदारनाथ में ही थे, जनहानि का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि ऊखीमठ विकासखण्ड में लगभग ६५ ग्राम पंचायत हैं, जिनमें २ या ३ ग्राम पंचायत को छोड़कर प्रायः सभी ग्राम पंचायत में आपदा से जनहानि को प्राप्त अनेकों परिवार हैं। अतः हमने शोणितपुर लम्गौण्डी ग्राम में भणी ग्राम पंचमत के भणी, देवली, धामस, पिथौरा, सिरवानी ग्राम के ४० परिवारों को राशन जिसमें ४५ कि.ग्रा. चावल, १० कि.ग्रा. आटा, २.५ कि.ग्रा. दाल, २.५ कि.ग्रा. चीनी, २५० ग्राम चायपत्ती, २०० ग्राम दूध पाउडर, १ कि.ग्रा. नमक, १ लीटर खाने का तेल सम्मिलित था, प्रदान की। इसी प्रकार ग्राम-भीम चौलाहा, ग्रा.पं.-नाला के ५ परिवारों को, तुलंगा ग्राम पंचायत के २० परिवारों को, कुणजेठी के ८ परिवारों को, जालतल्ला ग्राम पंचायत के १४ परिवारों को, बेडुला ग्राम पंचायत के १३ मृतक तथा १३ पशुहानि वाले परिवार कुल २६ परिवारों को, तुलंगा के २० मृतक परिवारों के अतिरिक्त ४१ पशुहानि वाले परिवारों को उपरोक्त राशन प्रदान किया। इसके अतिरिक्त कालीमठ ग्राम पंचायत के तीन ऐसे परिवार जिनके मकान बह चुके थे, उनकी प्रार्थना पर उन्हें बर्तनों का एक-एक सैट (एक सैट लगभग-२००० रु. का) प्रदान किया। कोटमा ग्राम पंचायत के २० परिवारों को कपड़े का त्रिपाल, कोटमा ग्राम पंचायत के १० लोगों को प्लास्टिक का त्रिपाल प्रदान किया गया। इनके अतिरिक्त भ्रमण के समय मिलने वाले गरीब परिवारों को भी राशन से सहायता की गई। इस सहयोग के लिए प्रायः सभी ग्राम पंचायत के प्रधान द्वारा सभा को धन्यवाद पत्र प्रदान किया गया तथा ऊखीमठ विकास खण्ड प्रमुख फतहसिंह जी रावत ने भी सभा के इस सार्थक प्रयास की प्रशंसा की तथा इस दौरान अपना सहयोग प्रदान करते रहे।

इस प्रकार यह दल आपदा राहत के प्रथम चरण का कार्य समाप्त कर १५ जुलाई को गुप्तकाशी से अजमेर के लिए निकल पड़ा। दूसरे चरण के लिए दल को शीघ्र ही रवाना करने का प्रयत्न चल रहा है।

२. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम-

(क) सम्पन्न कार्यक्रम-६ जुलाई डोंगड़ा आर्यसमाज, रेवाड़ी, हरियाणा के उत्सव में प्रवचन, **७ जुलाई** को डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार जी के जन्म शताब्दी समारोह के उद्घाटन में भाग लिया, **१२-१४ जुलाई** औरंगाबाद, महाराष्ट्र में डॉ. करजगॉवकर जी द्वारा अपनी माताजी के ७५वीं जन्म वर्षगाँठ के अवसर पर ''यज्ञ प्रशिक्षण शिविर'' का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. धर्मवीर जी और ब्र. अरुण कुमार ''आर्यवीर'' द्वारा २५० लोगों को प्रशिक्षण दिया गया और स्वामी ब्रह्ममुनि जी ने शिविरार्थियों को आशीर्वाद दिया, **१८ जुलाई** मेडीकेरी, कुर्ग, कर्नाटक में श्री अजय सूद जी के घर का गृह-प्रवेश संस्कार।

(ख) आगामी कार्यक्रम-२६-२८ जुलाई बैंगलोर में प्रवचन के कार्यक्रम, **९-११ अगस्त**-बिलासपुर (छ.ग.) में प्रवचन कार्यक्रम।

३. आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम-६-७ जुलाई महेन्द्रगढ़ का आर्य महासम्मेलन, हरियाणा में यज्ञ के ब्रह्मा व प्रवचन, **११-१४ जुलाई** आर्यसमाज सैक्टर ९, पंचकूला में आयोजित वैदिक-विद्वत्परिषद् की गोष्ठी में भाग लिया, **१४, १७ जुलाई** खेडीजट, झज्जर में यज्ञ व प्रवचन।

४. आचार्य सानन्द जी का प्रचार कार्यक्रम-३-११ जुलाई राष्ट्र-सहायक विद्यालय, बीकानेर में कक्षा ३ से १२ तक के छात्र-छात्रों और अध्यापक वर्ग को ध्यान-प्रशिक्षण दिया।

बीकानेर में स्वामी रामनारायण जी के घर ईशोपनिषद् पढ़ाया।

५. रमेश मुनि जी का प्रचार कार्यक्रम-१२-१३ जून आर्यसमाज, जनकपुरी, दिल्ली में ध्यान-प्रशिक्षण, आर्यसमाज लन्दन में ''ईशा वास्यमिदं सर्वं.........'' मन्त्र पर व्याख्यान, इंग्लैण्ड में लगभग ५० परिवारों में यज्ञ, ध्यान एवं प्रवचन के कार्यक्रम रहे।

६. यज्ञ एवं प्रवचन-जैसा कि विदित है ऋषि उद्यान आर्यजगत् के उन स्थानों में से हैं जहाँ पूरे वर्ष दोनों समय अपरिहार्य रूप से यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम होता है। प्रातःकाल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्व निर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय किया जाता है।

१. ११ जुलाई-प्रातः प्रवचन क्रम में स्वामी विष्वङ् जी ने योग-दर्शन के तृतीय पाद के सूत्र ३८ से ४३ तक के प्रवचन

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

में बताया कि जब व्यक्ति लक्ष्य सामने रखकर एकाग्र होकर यथार्थता में, अपने स्वरुप में रहता है तब उसके अविद्यादि क्लेश कमजोर होने लगते हैं।

क्रिया रूप सिद्धियों की व्याख्या में, सूत्र ३.३८ में समाधि के बल से कर्म के बन्धन का शिथिल होना बताया। सूत्र ३.३९ में बताया कि जब प्राण से युक्त इन्द्रियों का व्यापार शरीर में होता है तब जीवन कहलाता है। सूत्र ३.४० में समान प्राण की व्याख्या में बताया कि योगी को जठराग्नि से सम्बन्धित ज्ञान होने और शरीर की आवश्यकता के अनुसार खाने के कारण दिव्य तेज प्राप्त होता है। सूत्र ३.४१ में बताया कि "जिसको कोई छिपा नहीं सकता, आवरण से रहित, व्यापक और दिखाई न देने वाला कि जिसका लिङ्ग शब्द है आकाश कहलाता है।" रविवासरीय प्रवचन क्रम में मनुस्मृति के आधार पर बताया कि व्यक्ति सत्य, न्याय आदि धर्म का फल सुख तो चाहता है, लेकिन धर्म करना नहीं चाहता और योजनापूर्वक, बुद्धिपूर्वक अधर्म तो करता है किन्तु उनका दु:ख रूपी फल नहीं चाहता इसलिए उन्नति चाहने वाले को सुख-दु:ख भोगते समय उनके कारणों पर विचार अवश्य करना चाहिये। आगे स्वामी जी ने बताया कि संसार में प्रत्येक व्यक्ति की बुद्धि, स्मृति, शरीर, रूप, इन्द्रियाँ और कार्यक्षमता अलग-अलग है इस भिन्नता को देखकर व्यक्ति अपने पूर्व कर्मों का अनुमान करके उत्तम कर्मों की ओर प्रेरित हो सकता है।

२. १२-१५ जुलाई-स्वामी आशुतोष जी ने ऋग्वेद के १०वें मण्डल के ११वें सूक्त (ज्ञान सूक्त) के व्याख्यान में बताया कि जिस प्रकार सत्तू को छान कर खाते हैं, उसी प्रकार बुद्धिमान् लोग वाणी और कर्मों को सत्य से परीक्षण करके ही बोलें व करें और कोई भी श्रेष्ठ कार्य करने के बाद यदि उत्साह, उमंग और नवीनता का संचार हो रहा है तो समझना चाहिये कि यज्ञ ठीक चल रहा है। रविवासरीय क्रम में स्वामी ने बताया कि लक्ष्य महान है तो साधन भी महान होना चाहिये और यदि साधन आपके पास महान है तो उसका उपयोग महान लक्ष्य को पूरा करने में करना चाहिये। आगे स्वामी जी ने बताया कि शास्त्रों को पढ़ने से चीजों के सार को पकड़ने का सामर्थ्य व्यक्ति को प्राप्त हो जाता है।

सायंकालीन ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के नौविमानादिविद्या-विषय के प्रवचन क्रम में आचार्य श्री सोमदेव जी ने ऋषि के शब्दों में बताया कि "इस महागम्भीर शिल्पविद्या को सब साधारण लोग नहीं जान सकते, किन्तु जो महाविद्वान् हस्तक्रिया में चतुर और पुरुषार्थी लोग हैं वे ही सिद्ध कर सकते हैं।"

व्यवहारभानु के प्रवचन क्रम में आचार्य श्री सत्येन्द्र जी ने बताया कि बालकों को माता-पिता, गुरु व आचार्यों के जो श्रेष्ठ आचरण व उपदेश हैं उनकों ग्रहण करना चाहिये और जो-जो विपरीत आचरण व उपदेश हैं उनको कदापि ग्रहण न करना चाहिये।

श्री रमेश मुनि जी एवं माता ऊषा जी ने अपनी इंग्लैण्ड यात्रा का वृतान्त सुनाया जिसमें उन्होंने व्यक्तिगत कार्यों के साथ-साथ यज्ञ-प्रवचन, ध्यान-प्रशिक्षण के कार्यक्रम करके वैदिक-धर्म का प्रचार-प्रसार भी किया।

आचार्य देवप्रकाश जी ने गुरुकुलीय शिक्षा के लाभों पर प्रकाश डाला और बताया कि वेद में जो आदेश हैं, वो विकल्प नहीं है। जिनकी विधि हैं वे करणीय हैं और जिनका निषेध है वे त्याज्य हैं।

बलेश्वर मुनि जी ने बताया कि व्यक्ति को शान्ति/इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट की निवृत्ति होने पर होती है। और शान्ति के अभाव में ही व्यक्ति व्यवस्था से विचलित होता है।

ब्रह्मचारियों के प्रवचन क्रम में भ्राता शोभित जी ने इस्लामिक, पाश्चात्य, हिन्दु और साम्यवाद संस्कृति (व्यक्ति, परिवार और समाज) की तुलनात्मक दृष्टि प्रस्तुत की और भ्राता पुरुषोत्तम जी ने बताया कि कोई भी कार्य करने से पूर्व, कार्य का स्वं, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व पर पड़ने वाले प्रभाव का चिन्तन अवश्य कर लेना चाहिये।

-ब्र. रविशंकर व ब्र. दीपक।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. २० से २७ अक्टूबर-**योग-साधना शिविर प्राथमिक स्तर**, सम्पर्क : ०१४५-२४६०१६४

२. २४ नवम्बर से १ दिसम्बर तक **ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर,** सम्पर्क : ०९४१४००३७५६, समय : मध्याह्न १.३० से २.३० बजे।

३. **ऋषि मेला** ८, ९, १० नवम्बर, २०१३।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर्यजगत् के समाचार

१. आर्यसमाज पंखा रोड़, सी-ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली-५८ के ७ जुलाई २०१३ को सम्पन्न हुए चुनाव में **प्रधान**-श्री रमेश चन्द आर्य, **मन्त्री**-श्री अजय तनेजा एवं **कोषाध्यक्ष**-श्री विजय कुमार गुलाटी चुने गये।

२. श्री मधु जी पुत्र श्री मूलचन्द शर्मा (निवासी-नसीराबाद) ने अपनी २५वीं वैवाहिक वर्षगांठ को आनन्द के साथ मनाया। इस शुभावसर पर बृहद वैदिक यज्ञ (अर्थ सहित) किया गया। यज्ञकर्त्ता श्री हीरालाल शर्मा थे। इस अवसर पर सायं सहभोज भी किया गया। सभी की ओर से मंगल भविष्य की कामना की गई।

३. आर्यसमाज नवादा नगर की यज्ञशाला पर दिनाङ्क ४.६.१३ रविवार को मन्त्री श्री राजेश कुमार आर्य के प्रथम सुपुत्र का नामकरण संस्कार सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत' के पौरोहित्य एवं नवादा नगर के गणमान्य स्त्री-पुरुषों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। शिशु का नाम 'आर्य लक्ष्येश' परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित गुरुकुल के आचार्य श्री सत्यजित् जी के संवाद एवं निर्देशानुसार रखा गया।

४. भीलवाड़ा जिले के ८ गाँवों में **वृष्टि यज्ञ एवं वेदप्रचार का कार्यक्रम** दिनाङ्क १५ से २७ जून २०१३ तक सम्पन्न हुआ। पं. भूपेन्द्रसिंह जी द्वारा दिनाङ्क १५ से २१ जून २०१३ तक एवं २५ से २७ जून २०१३ तक कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया। पं. अमर सिंह जी, ब्यावर द्वारा दिनाङ्क २२ से २४ जून २०१३ तक वृष्टि यज्ञ एवं वेदप्रचार कार्यक्रम कराया गया।

५. आर्यसमाज नरवाना (जीन्द), हरियाणा ने पूर्व की भाँति अपना श्रावणी पर्व (वेद सप्ताह) आगामी ५ से ११ अगस्त २०१३ सोमवार से रविवार तदानुसार चौदस के श्रावण शुक्ल चौथ वि.स. २०७० आर्यसमाज नरवाना के पावन प्रांगण में चतुर्वेद शतकम् परायण महायज्ञ बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा है।

अत: आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर धर्म लाभ उठाएँ व पुण्य के भागी बनें।

६. महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र, झज्जर, हरियाणा- २३ जून, २०१३ महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में आर्यसमाज, वैदिक सत्संग मण्डल एवं यज्ञ समिति झज्जर के संयुक्त तत्त्वावधान में बालक ''अनमोल'' सुपौत्र महाशय रतीराम आर्य के जन्मदिवस के शुभावसर पर यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा पं. वेदप्रिय आर्य की देखरेख में नम्रता, हिमांशी, वंशिका, नन्दिनी, हीना आदि छात्राओं ने वेद मन्त्रों का पाठ किया। बालक ''अनमोल'' एवं उनके माता-पिता (श्रीमती सोनिया आर्या एवं श्री मुकेश आर्य) यजमान बनें। झज्जर शहर के प्रसिद्ध मौहल्ला टीला-सिलानी गेट के याज्ञिक परिवारों के ५१ होनहार विद्यार्थियों को प्रत्येक को आधा किलोग्राम मात्रा में विशेष हवन सामग्री तथा व्यवहारभानु पुस्तक से सम्मानित किया।

७. आर्यसमाज रातानाड़ा, जोधपुर-आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के नवनिर्वाचित प्रधान श्रीमान् विजयसिंह भाटी का महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर के तत्त्वावधान में दिनांक ६ जुलाई २०१३ शनिवार को भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता आर्ष गुरुकुल, माउण्ट आबू ने की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि पिपराली आश्रम, सीकर के अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती उपस्थित थे तथा ओममुनि, मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर तथा श्री रामनारायण शास्त्री थी उपस्थित थे।

८. ६६ दम्पतियों ने की पूर्णाहुति आर्यसमाज चंडौस (अलीगढ़) के वार्षिकोत्सव में अलीगढ़ के चंडौस ग्राम में ११ से १३ जून २०१३ तक आयोजित वार्षिकोत्सव में ९ स्तरों में राष्ट्र रक्षा, यज्ञ एवं संस्कृति, गोरक्षा, महिला, वेद आदि अनेक विषयों के सम्मेलन रखे गए। जिनमें मुख्य रूप से आचार्य श्री आनन्द पुरुषार्थी जी होशंगाबाद, मध्यप्रदेश, पण्डित श्री योगेश दत्त आर्य जी बिजनौर, सुश्री अंजली आर्या जी हरियाणा ने अपने विचार रखे। श्रोताओं द्वारा उठाई गई शंकाओं का समाधान भी यथा समय किया गया। अन्तिम दिन पूर्णाहूति में यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी की अपील से अनेक नए पौराणिक महानुभाव भी आर्यसमाज के सत्संग में प्रथम बार आये और ६६ यजमान दम्पतियों के बहुकुण्डीय यज्ञ में आहुतियाँ दिलवाई गई, साथ ही उनको आर्यसमाज के रविवासरीय सत्संग में आने के लिए प्रेरित किया गया। खैर, छर्रा सुमेरपुर, बांकनेर, गोंडा, खुर्जा, आगरा, अलीगढ़ सहित आसपास के समस्त ग्रामीण अंचलों से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ तीन दिनों तक आती रही। मध्य के स्तरों में आचार्य रवीन्द्र जी बुलन्दशहर, पण्डित दिनेश जी गोवर्धनपुर, पण्डित राजकिशोर जी छिंदवाड़ा, पण्डित रामकेश जी खुर्जा आदि विद्वानों व भजनोपदेशकों के विचार भी आर्य जनता को सुनने को मिले। अन्तिम दिन ऋषि लंगर की व्यवस्था आर्यसमाज की और से की गई थी। विद्वानों के रुकने की उत्तम व्यवस्था आर्यसमाज के प्रधान श्री विनोद आर्य के निवास पर रही।

९. शहीद की पत्नी की इस बात पर छूटे मन्त्री जी के

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पसीने-बिलासपुर सुकमा घाटी में नक्सलियों के हाथों शहीद सिपाही दीपक उपाध्याय की पत्नी को मुआवजे का चैक देने पहुँचे केन्द्रीय कृषि राज्य मन्त्री डॉ. चरणदास महन्त के पसीने उस समय छूट गए **जब शहीद की पत्नी ने कहा कि सर प्लीज इस पैसे से जवानों के लिए बुलेट प्रूफ गाड़ियाँ खरीद लें।** शहीद सिपाही की पत्नी की इस पेशकश से महन्त सन्न रह गए। उन्हें तत्काल कुछ बोलते नहीं बना। उन्होंने किसी तरह खुद को सम्भाला और फिर शहीद की पत्नी को समझाने-बुझाने में लग गए। शहीद की पत्नी पाँच लाख रुपये का चैक लेने से इन्कार करती रही। आखिर में जब मन्त्री जी ने उसे इसके लिए आश्वस्त किया कि जवानों की सुरक्षा के लिए पर्याप्त इन्तजाम किए जाएँगे तब वह चैक लेने के लिए राजी हुई।

डॉ. महन्त सुकमा घाटी में नक्सलियों के हमले में शहीद हुए छत्तीसगढ़ पुलिस के सिपाही दीपक उपाध्याय के परिजनों से मिलकर उन्हें केन्द्र सरकार की ओर से दी गई सहायता राशि के रूप में पाँच लाख रुपये का चैक देने सोमवार को मोपका पहुँचे थे। महन्त के साथ उनकी पत्नी ज्योत्सना भी थीं। ज्ञात हो कि नक्सलियों ने २५ मई को एक रैली से लौट रहे कांग्रेसी नेताओं के काफिले पर भीषण हमला किया था।

इस हमले में कांग्रेस के कई बड़े नेताओं और उनकी सुरक्षा में तैनात सुरक्षा कर्मियों समेत ३० से अधिक लोग मारे गए थे। इन सुरक्षा कर्मियों में अनेक ऐसे थे, जिन्होंने अन्तिम साँस तक नक्सलियों से मोर्चा लिया था। कई सुरक्षाकर्मी इसलिए नक्सलियों का आसान निशाना बन गए थे, क्योंकि उनके पास पर्याप्त गोलियाँ नहीं थीं।

१०. वेद प्रचार मण्डल आर्यावर्त के तत्वावधान में व आचार्य चन्द्र देव शास्त्री (अध्यक्ष वेद प्रचार मण्डल) के पावन सान्निध्य में जनपदीय आर्यवीर दल फर्रुखाबाद द्वारा युवाओं के उज्ज्वल चरित्र निर्माण हेतु सात दिवसीय आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह दिनांक २३.०६.२०१३ को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। कई जनपदों व प्रान्तों के लगभग १०० से अधिक शिविरार्थियों ने भाग लेकर योगासन, प्राणायाम, जूडो-कराटे, लाठी, भाला, लक्ष्य भेद व ऐडवेन्चर स्पोर्टस आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। समापन अवसर पर शिविरार्थियों ने आकर्षक व्यायाम, योगासनों, लाठी एवं ताइक्वांडो आदि का प्रदर्शन कर उपस्थित जनसमूह को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

चुनाव समाचार

११. आर्यसमाज यमलार्जुन पुर, कैसरगंज, बहराइच का वर्ष २०१३-१४ का वार्षिक निर्वाचन ३० जून २०१३ को सम्पन्न हुआ, जिसमें **प्रधान**-धर्मवीर आर्य, **मन्त्री**-सत्यमित्र आर्य, **कोषाध्याक्ष**-प्यारेलाल गुप्ता को निर्वाचित किया गया।

१२. आर्यसमाज कृष्णपोल, जयपुर, राजस्थान के वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें **प्रधान**-ओ.पी. वर्मा, **मन्त्री**-कमलेश शर्मा, **कोषाध्यक्ष**-दिनेश शर्मा को चुना गया।

१३. आर्यसमाज मन्दिर, मेरठ के वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए, जिसमें **प्रधान**-रवीन्द्र रस्तोगी, **मन्त्री**-योगेश मुवार, **कोषाध्यक्ष**-योगेश चन्द्र गुप्ता को चुना गया।

१४. आर्यसमाज जमालपुर लुधियाना के वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए, जिसमें **प्रधान**-प्रेम प्रकाश धवन, **मन्त्री**-महेन्द्र प्रताप आर्य, **कोषाध्यक्ष**-भारत भूषण को चुना गया।

१५. आर्यसमाज, छोटी सादड़ी, प्रतापगढ़ के चुनाव सम्पन्न हुए, जिसमें **प्रधान**-प्यारचंद साहू, **मन्त्री**-महेश शर्मा "सुमन", **कोषाध्यक्ष**-करणमल साहू को चुना गया।

१६. आर्यसमाज सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली के वार्षिक चुनाव में **प्रधान**-रविदेव गुप्ता, **मन्त्री**-एस.के. शर्मा, **कोषाध्यक्ष**-संजय खण्डेलवाल को चुना गया।

१७. आर्यसमाज सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली के **महिला वर्ग** में **प्रधाना**-सरोज कौड़ा, **मन्त्राणी**-अंजू लखेरा, **कोषाध्यक्षा**-नीलम गुप्ता को चुना गया।

१८. आर्यसमाज भिलाई नगर, छ.ग. के वार्षिक चुनावों में **प्रधान**-अवनी भूषण पुरंग, प्रधान, **मन्त्री**-रति आर्य, **कोषाध्यक्ष**-रवीन्द्र गुप्ता को चुना गया।

वैवाहिक-विज्ञापन

१९. सुश्री मेधा, सुपुत्री श्री रविशंकर जी शर्मा, कोटा (राज.), आयु-२७ वर्ष, कद-५ फुट ८ इंच, रंग-सुन्दर गोर वर्ण, गोत्र-तड़बा तिवारी, योग्यता-एम.टैक (इलेक्ट्रॉनिक्स), पद-अभियान्त्रिकी महाविद्यालय में असिस्टेन्ट प्रोफेसर।

समकक्ष योग्यता, पूर्ण शाकाहारी, दुर्व्यसनों से रहित, आर्य युवक की आवश्यकता है।

चलभाष-८२३९२४८७७९, ९४१३०००१२५, ईमेल-vedrig111@gmail.com

शोक समाचार

२०. आर्यसमाज रावतभाटा के वयोवृद्ध वरिष्ठ सदस्य **श्री दर्शनलाल धीमन** का निधन दिनांक ०५.०७.२०१३ को हृदयगति रुक जाने के कारण हो गया। वे ७४ वर्ष के थे। आर्यसमाज रावतभाटा के संस्थापकों में से थे। जब-जब इस रावतभाटा आर्यसमाज पर कठिनाई के दिन आए, तब-तब आप उसका पुरजोर मुकाबला करने के लिए आगे आए। हम सभी सदस्य उन्हें आदर के साथ आर्यसमाज रावतभाटा के भीष्म पितामह कहते थे। कई बार उन्होंने इस समाज को अराजक तत्त्वों से बचाया था। हम सभी उन्हें कभी विस्मृत नहीं कर पाएँगे।

२१. आर्य नेता श्री कन्हैयालाल आर्य जी को पितृ शोक-अपने जीवन के ९४ वसन्त देखने के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के वरिष्ठ उपप्रधान एवं आर्य केन्द्रीय

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सभा गुड़गाँव के प्रधान के पिता श्री रामचन्द्र आर्य का लम्बी बीमारी के पश्चात देहावसान हो गया। श्री रामचन्द्र आर्य एक निष्ठावान समाजसेवी एवं स्पष्ट वक्ता थे। उनकी करनी और कथनी सदा एक जैसी थी। गुड़गाँव व गुड़गाँव से बाहर कोई ऐसी संस्था नहीं जिसे वह अपनी पवित्र कमाई से सहयोग न करते हों। किसी भी समाचार पत्र में कोई भी सहायता की अपील आने पर वह द्रवित हो जाते थे और अपनी पवित्र कमाई में से उसे सहयोग अवश्यक किया करते थे। वह अपने पीछे एक मात्र पुत्र श्री कन्हैया लाल आर्य एवं बड़ी पुत्री श्रीमती ईश्वर देवी एवं छोटी पुत्री श्रीमती पुष्पा देवी एवं पत्नी श्रीमती जमना देवी को छोड़ कर गए हैं। अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से पाञ्च वैदिक विद्वानों द्वारा किया गया। ❋

उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ित सहायतार्थ दानदाता

१. सूर्यप्रकाश आर्य-५१००/-, २. स्वामी ऋतस्पति परिव्राजक-३१००/-, ३. आचार्य सनत कुमार-१०००/-, ४. स्वामी सत्यानन्द, सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास, फलोदी, जोधपुर-११०००/-, ५. चन्द्रप्रभा, अजमेर-५००/-, ६. जेठाराम सोलंकी, जोधपुर-२१०००/-, ७. करतार सिंह, जोधपुर-५००/-, ८. विजयसिंह भाटी, जोधपुर-२१०००/-, ९. धनपत राय, तिनसुखिया, आसाम-५०००/-, १०. वरुण आर्य, बैंगलूर-१००२५/-, ११. रामस्वरूप आर्य, रायगढ़, अलवर-२१००/-, १२. अनिता गर्ग, अजमेर-२०००/-, १३. निरंजन साहू, अजमेर-१०००/-, १४. पियूष शर्मा, जबलपुर-१९६३०२/-, १५. दुर्गा शंकर गुप्ता, अजमेर-१०००, १६. राजपुताना म्यूजिक हाउस, अजमेर-५००/-, १७. देवमुनि, अजमेर-१०००/-, १८. वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर-२००/-, १९. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर, पंजाब-५००/-, २०. शशि मिगलानी, अबोहर, पंजाब-२५००/-, २१. वानप्रस्थ साधक आश्रम, सागपुर, गुजरात-२१०००/-।

बच्चे को सुलाने के लिए क्या करें?

लम्बे समय से माँ-बाप के बीच बहस चली आ रही है कि जब बच्चा रात में उठकर रोता है तो क्या उसे रोने देना चाहिये या उठाकर चुप कराना चाहिये? नवजात शिशुओं के माँ-बाप अक्सर यह समस्या लेकर डॉक्टर के सामने आते हैं। अब एक विख्यात चाइल्ड डवलपमैंट एकस्पर्ट (बच्चे के विकास के विशेषज्ञ) हमेशा के लिये इस गुत्थी को सुलझाने की कोशिश कर रही है। फिलडैल्फिया की टैम्पल युनिवर्सिटी में प्रोफेसर, मार्शा वाइनरॉब का कहना है कि सबसे अच्छी सलाह यही है कि अधिकतर मौकों पर बच्चे को अपने आप चुप होकर वापस सोने दिया जाये तथा जगते ही तुरन्त उसे गोदी में उठाकर चुप नहीं कराया जाये। लेकिन इसके लिये हर रात बच्चे को एक ही समय पर सुलाया जाये। छः महीने का होने तक अधिकतर बच्चे रात भर सोने लगते हैं और हफ्ते में एक या दो बार ही अपनी माँ को जगाते हैं। परन्तु सब बच्चे ऐसे नहीं होते, कुछ बच्चों की डेढ़-दो घण्टे के बाद नींद टूटती है लेकिन वो फिर सो जाते हैं।

सौजन्य-राष्ट्रदूत, दिनांक १९.०१.२०१३

गुस्से में भड़क कर चिल्लाना अच्छा नहीं

जब आप गुस्से से पागल हो रहे हों तब भड़क कर चिल्लाना बहुत अच्छा लग सकता है। सदियों से विशेषज्ञ मानते रहे हैं कि तनाव का निकल जाना आपके लिये अच्छा है। लेकिन अब अध्ययनों ने दिखाया है कि गुस्सा निकालने का कोई फायदा नहीं होता, गुस्सा करने से आपकी सुलग रही कुंठा दूर होने के बजाय आपका चित्त खराब हो सकता है। इससे विध्वंसक विचार अधिक तीव्र और अधिक समय तक बने रह सकते हैं। गुस्सा निकालने के लिये भड़कने पर मस्तिष्क में बहुत छोटी मात्रा में 'फीलगुड' रसायन स्रावित होते हैं, लेकिन यह रसायन आदि बनाने वाले होते हैं और आप बिना सोचे दुबारा भड़कने की वजह तलाश करने लगते हैं।

सौजन्य-राष्ट्रदूत, दिनांक-०८.०१.२०१३

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर)

(दिनाङ्क : १६ जून से २३ जून २०१३)

ऋषि उद्यान, अजमेर

परोपकारी श्रावण कृष्ण २०७०। अगस्त (प्रथम) २०१३ ४३

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : ३१ जुलाई, २०१३ RNI. NO. ३९५९/५९

श्री विजय सिंह भाटी

(परोपकारिणी सभा के सदस्य)

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर निर्वाचित

संक्षिप्त परिचय पृष्ठ-३५ पर ।

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

आवरण : Mittal 9829797513

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.